A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 437 Subject Kavya

Name of MSS Ras Rahasya

Author Misara Kulpati

Period ______ Folios 185

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios ______

437

(11)

437

रसरहस्य
कुलपतिकृत

Hindi Ms. 8 H1		
R222 437		रसरहस्य ; मिश्र कुलपति कृत, राजगढ़ के गोबिन्द बकश ने श्री नारायण से भृगुवार, २ फागुन वदी, १८८८ वि० लि० ६३ पत्रक ॥ ल० ११० १७ पं० प्र० पृ० ह० ले०

॥श्रीगणेशाय नमः॥ अथ रसरहस्य मिश्र कु
लपति कृत लीष्यते॥ सवैया॥ ऐसीय कुंज
बनै छबि पुंज रहैं अलि गुंजत सौ सुख ली
जैं॥ नैन बिसाल यहै बनमाल बिलोकत रू
प सुधा भरि पीजैं॥ जांमनी जांम की कौंन ग
नैं जुग जात न जांनियै ज्यों छिन छीजैं॥ आंनं
द यौं उमग्यौ इ रहै पिय मौंहन कौ मुख देखि
बो कीजैं॥१॥ दोहा॥ कुमति निसा जिय की ज
रनि मैं हलसी तल धांम॥ सुमिरत फूलैं कवि
कमल नवरस पति घनस्यांम॥२॥ छप्पै॥
राज वर्ननं॥ उज्जैन नर नरईस न समथ्थ जिमि
पथ्थ उ अंन करः॥ दद्दत समर उड विग्रम रकं
पुथ्थर ह गिलैं गंय धर॥ अमित दांन देय जग्य
वितांन मंडिय महि महिमंडल॥ चंड भांन
हि सम प्रभांन बंडिय आखंडल॥ राजाधि
राज छाजैंय रूप भुव जिति किय उ सब जु
गलवस॥ अभिरांम कांम सम मल सत महि

रामसंघकूरमकलस॥३॥प्रभुअपारगुनग
हतसाधारिभुवनभारभुजः॥कंछहारछवि
जितिमारसेवतउदारद्विजः।कोविदवार
पदिभहदारकीरतिविधारकियः॥इविन
भारविधिविधिसुतारगुतिवेसभारदियः
कुरमकुलमंडनरामसमरामसंघरसम
रनभुव।सुपवहलसभामंडलरविययविज
यमहलजैयसंघसुवः।४॥प्रथमसभावर्न
नं॥सवैया॥यामहिमेंनहिइजीसभानिर
पीसुनीरवनिहंकीनऐसी।न्पालगुनीन
कीकौनगनैंघरकीगलिब्रह्मकेग्पांनही
कैसीः।रविकैंरैन्नसुदर्पनभोंनुदिपाव्रत
थापकतापुनतैसीः।आमधिव्यापकुदेवि
थैरामुसुहेंसुपधांमरआईसीतैसीः।५॥
॥दोहा॥उज्जनदलगंजनगहदनिभंजन
रंजनसाहि।रामसंघकोसहजयहकवि
तारसमुझिनाहि।६॥कविपंडितपंडित

3 कीयेनगभूपनसिरपाई॥ गाहिगाहिविद्या
सकलवसकीनीचितचाई॥७॥ हांनसों र
वंऊंचक्कमैंवहेकविनुकेचित॥ आवतपाव
तललमनिहयहीयीवऊवित॥८॥ विजय
महलवैठेकरतभाषाकवितविचार॥ स
हाऊंकमकीनेंसहजकरमरामकुवार॥९॥
जितीहेववांनीअगरहैकविताकीधात॥ तेभा
षामेंहोयसौसवसमकोंरसवात॥१०॥ लस
तहेवरगुरसमनहांपंडितगुंजअनेक॥ कवि
कविसमतिनसवनुकोसेवकलुकपतिएक
॥११॥ सोपुनिरामकुवारकोंआइसुउरमेंराखि
मंमरमतकोसारसवुवरनतिभाषाभाषि
॥१२॥ मेंविचारसागरमथ्योकीनोंअमृतवि
कास॥ रसवहेंसिमहसवुनकीहवैंरसनुकी
प्यास॥१३॥ वरनेनायकनायकाऔवकवि
नुवऊभांति॥ भाषामेंयातेंनमें..हेनइनहि
कोंति॥१४॥ पहिलेंलछनकवितकोवहोविष

ग

रस० 4 योजनजांनि। तापाछेवरननकरोंकारननभे
२ दवषांनि।।५।।अथकाविलछिन।।जातेंअ
द्भुतसुषसदंनसवदंअरथकवित।जगतें
अद्भुतसुषलोकनतरचमत्कारयहलछनसु
ष्यअपनोंकहो।।६।।अथकाव्यप्रकासको
लछनकहंतहो।।दोहा।।दोषरहितअरुगु
नसहितकछंकअलपअलंकार।सवदअर्थ
सोंकवितुहैताकोंकरोविचार।।७।।पतथाहि।।
हैंसवगुनभूषनजहांऐसवदूषनमाहि
ऐसोंकवितुनजगतमेजौवालछनमांहि
।८।।जौकछुहोइसुलीजियेंसुतौवालहूंहोइ
कछुकदोषविनहोइतोइककवितनहिंकों
इ।।९।।सवदूषनविनुहोइतौताहीकहोक
वित।तोइषनउलासमोसमझिविरोधवि
त।।१०।।प्रगटदोषनहिहोइजुहेंतासोंक
होंकवित।।सोइमतसमबोधमेंयोकेसहद
यचित।।११।।सकलरसगाकोलषंनहिदूषन २

हैनहिसोइः। जहांदोषसहृदयनिलिषैं। सोगुनि
कहतुनसोइ॥२२॥ तातैंलक्षनवीचएहपद
कहैनैतहिजोग। इक्कैंसाजककविकीबैनके
बरनैंसबकेविलोग॥२३॥ यासाहित्यदर्प
नेलक्षनपरकहतहैं॥ पुनिरसहीयुकवि
नुकौंसोकहतनलक्षनहोइ। केप्रधानकै
अंगहैंरसकुवैविधिसोइ॥२४॥ जोप्रधानर
सहीजहांकहैंकविनुहीसोई॥ अलंकार
अरुवस्तुजहिंमुख्यसुकवितनहोइ॥२५॥
जहांअंगहैरसतहांअलंकारह्वैजाइ। क
छुकवाताहूमेलषैंसोवहरसुनकहाय॥२६
यातेंयहैंलछिनुकियोसवहीसेंअविरुद्ध
सुहृदयतासोंप्यारकविकविकहिलीज्यो
सुद्ध॥२७॥ अथकाव्यप्रयोजन॥ जसुसंपति
आनंदअतिदूरिनडारैषोइ॥ होतकवि
तुतैंचतुरईजगतरामवसहोइ॥२८॥ इकैं
आदिदैअसेजांनियै॥ अथकाव्यकेलछिन

रस· 6
२

सबरसग्रन्थजिनतैंबनैंनीकीभांतिकवित्त॥सु
हिग्यावनसमरस्थ्यतिनकारागकविकोचित्त
२९॥वेसैंचित्रकोकारणकहूंवाक्यकहूंनिलय
तिश्रभ्यासकहूंतीन्यो अथविसेषभेदकलबेकौ
कौवितकीसरीरेकीसांमग्रीकहितहो॥दोहा॥
व्यंगजीवताकौकहतसबदअरथहैदेह॥
गुनगुनभूषनभूषनैदूषनदूषनएह॥३०॥
॥अथभेद॥सोकवित्तहैतीनिविधिउतिम
मधिमतीनेअौर॥जीवसरसकैउनिदेहम
मरेहैवलुजिहितेरर॥१॥जीवरसव्यंगप्रधान
यथा॥कवित्त॥मेरीचितवाहतैंमिद्योहैंहेउ
रसाहलिपयअायेहरभेरपाइधायेभाइमनके
अतिअधियारेंसुनि॰गलीलषेंकोपेंगालन
वोंगुलवालहैरयरथ्यानिजपनके॥रेषेंछ
विधानुनलिर॰रसुथलाजकोहिकोहिजुग
या॥है॥वेंउपरथ्याउनके॥भूसकीनिसामें
लालपायधारेंप्यारकविकवोहांवयासितं ३

7 कैंस्वेदकननतनके ॥ २४ ॥ इहां श्रमकौनिसामैंसु
भावकैंस्वेदकननुकौंअसंभवहैतातैंलक्षना
करिकैंसंगकेस्वेदकनजांनियैंतातैंव्यंगकरि
कैंनायकसापराधजांनियैं ॥ सवैया ॥ यथा ॥
देहधरीपरकाननहींकौंअंगमांहिहैतौसीतुहि
सबलायक । होरैंयेकैंअंगस्वेदभयौसममरी
सषीकांनमिलेसुषदायक । मोहिसौंप्यारेज
नायौभलीविधिजांनीजूजांनिहियैंनिकीना
यक । सांचकीमूरतिमीलकीसूरतिमंदकीयैं
धिनकांमकेसायक ॥ २५ ॥ इहांअन्यसंभोगदु
षिताविपरीतलक्षनाकरिकैंसषीकौंउराहनौं
देतिहैसोव्यंग ॥ अथमधिमकाव्यलक्षन ॥ व्यंग
अरथमनउधनहींमधिमकहियैंसोइ ॥ यथा
सवैया ॥ मैंनकहींतबहीतुमसौंपियकैंइत
ऐबेकीबानिभरीहै । भलिनकीजियैंकांमक
छूअबतौतनकीगतिऔरैभईहै । नैंकमतेंउ
कैंभौंहनिहानिसुवाहनआवसहातनगईहै ॥

रस· ४ ज्योंनैंनआनैंरहेतोचुपकेपगावरीसोंवेहूमूर
४ तिमैंनमईहै॥३४॥इहांमैंनकहियहकाकन्य
कज्योंनैंनआनैंयातेंव्यंगहोतहैंकिंतुमयेंयावि
नाएकहूपलनाहीरहैमातहैहमसोंउपरिकी
हीवातहै।अरुमैंनपदकोचमत्कारव्यंगतेंघा
टिनाहि।अथअवरकाव्यलक्षनदोहा॥सबद
अर्थहैंसिद्धिजहँ।व्यंगनअवरसहोइ॥व्यं
गचमत्कारीनहोइकछुतौहोइथो॥ताहूचित्र
यथाकवित्तसुरनिकीगतिमतिमंततनुकीम
तिकरिग्रणतिविततिअतिसुरजकरनकी
उदगिरिगावतस्ववनतिमिबवरकश्रवनकवि
सोभाकिंसुककुसुमतनवचनकीसोभाहैसु
लाइसमसिदीपतिवहाईववरवावरनकेभाइम
नभाईकवैननकी।निवाकावनिसततमवास
नासकितिसोइमंदताकीभांतिदूविकवोमे
वेमनकी॥३५॥इहांयद्यपिभावध्वनिहैपैंअ
नुप्रासकेचमत्कारकेआगेंअपुनपौप्रकासि ४

१ नालीशशक्तिअर्थचित्रंयथा॥दोहा॥वंदनतोसे
तुहीहैजगतवडोजसलेइ॥सांपतेजतोपरत
जैतसीतलताहेइ॥२६॥इहांअप्रस्तुतप्रसंसाही
कोचमत्कारहै॥इतिश्रीमिश्रकुलपतिविरचि
तेरसरहस्यप्रथमोवृत्तांतः॥१॥अथध्वनिनिर्णय॥
दोहा॥सोसुनियेसोसबदहैअर्थजुसम
झैचित्त॥ध्वनिअरुवर्णविभागतेसोद्वैबि
धिहैमित्त॥१॥सोधाहूहैभांतिधुन्यात्मकवर्णा
त्मकसोवर्णात्मकहियेः॥काव्यमैंधुन्यात्मकना
ही॥दोहा॥देहप्रथमहीदेखियेवक्रकिसीव
कोगपान॥हृष्वनगुनभूषननकोपाइअंज्ञान
सजान॥२॥सब्दअर्थतैंइहांभलेजिकवि
मतसुद्ध॥देवनागनरआपनीभाषातेंग्र
विरुद्ध॥३॥इहांकाव्यमैंसंशब्दहैतकेप्राकृत
केप्राकृतमैंभाषाकेभाषामैंसुदवाहिय
दोहा॥वाचकलक्षकव्यंजकोसबदत्री
विविधिहोई॥वाचकलक्ष्यअरुव्यंगपुनिअ

रथ्यतीलिविधिहोय ४॥ अथकइतनीसूंनकेओ
हारनौं। न्यारीसीन्यारीप्रतीतकरैं॥तासेंकोऊ
एकतात्पर्यारथ्यांवृत्तिक हतहैंपैवहमंजनातें
नजीकहीहैतातेंओपा ईयेसोतात्पर्यार्थक
हियो॥अथवाचकलक्षन॥वाचकसोजुसहाइ
वितुआपुअरथकहिदेइ।जैसेंजलसुनत
हीपानीकोग्यानसबकोहोइ।५।याग्यरथ
संपदसुनतजाहिचितगहिलेहि।जैसेंवहि
कसोअथवापृथ्वीपदतेंभूमि।६।इहिमुख्य
अर्थयाहीसोंसंकार्थकहतहैं।तातेंलक्षिये
यहअरथुअभिधासोंओहकयाहीसोंसमि
कहतहैं।यापदतेंइहइअर्थजानेंभैसेंकृप
योगछाभगवानकीसोहेशक्तिअनप ७।प
हअभिधाकोतत्वलक्षणं॥अथलक्षकल
सिनं॥लक्षकुसोंअर्थैनवैनं तवलिंगतेंग
हिलोइ।वहैअर्थलक्षजानियेसोंपाइयेसो
कहतहैं।मुख्यअरथकेबाधतेंभुनिताहीके

॥ पाम और अर्थ आनैं लषैं कहै लछनानाम ॥ मात्ति लियो थ्यो हार है यह वचनै कविलोइ ॥ रू ढिप्रयोजनभेदकरि दुविधलक्षनासोइ ॥ ४ ॥

॥ अथ निरूढलक्षनायथा ॥ नईरीतिकीनी मुखरूयोपीनपटनाबि अंबरंगअंबरमुकोंथोद्यौआईयांबि ॥ ५ ॥ इहांमुखअंबिएकहुजानिये ॥ औरहूगाडीद्रषरीशवरूपवहीजानिये प्रयोजनवतीलथा: जहां तहांयहक्किजगुनकहत जीवहकोविवरीस रामसपथयहनगरहितनुमकोंदेनअसीस ह ॥ इहांनगरकोवचनकहिवोनांही संभवतुनातैंलक्षनाकरिकैं नगरकोवासीलोगजानिये प्रयोजनयहैकि सवहीनगरवासीतुमकोंअसीसदेतहैं ॥ अवप्रयोजनवतीकेलक्षनाकेभेदकहैतिनकोविभागकहियतुहै तहांपहिलेद्वभेदसुनहीहोय उपादानलक्षनालक्षनलक्षनाजहांअप

रस॰ नौंअरथवनाइवेकेलिये ओरअरथआनिलि
६ 12 यैसोउपादानलक्षनाकहावैसोयथा॥ लाल
नचंचललैंननए। काननकरतविलास। कूलनके
राजवेलवौंयेलतवोपविलास॥७॥ इहांगज
नको चोपविखेलिवोनांहीसंभवत तवगज
बेननवाबेलायआनियें॥ प्रयोजनयहेकि
गजवेनसौंप्रेमलाक्षणिकहैदेविरूपना
हीपरतजहांप्रमलक्षनकोअरथवनाइवेको
शब्दअपनोअरथछोडिदेई॥ सोलक्षनलक्ष
नाकहावै॥ दोहा॥ सवैरसीलोहैसजहां। मद
ननदीकेमांहि। रूपसुधालोचनपियें। नहिं
छियेतिहिमांहि॥८॥ इहांनदीमेंप्रकवौना
हिसंभवत। वलक्षनाकरिकैनदीपदतैंती
रजानियें। प्रयोजनयहै॥ केनदीकोसीतल
ताकोकेवोप्रकटमैंसुवंकीहिये। औरगो
पाहूहोयजहांजाकोआरोपनकीजे। एहै
रूपहैयसोमार्गोपाकहिये। अरुजहां ६

13 जाकौ आरोप की और ने सो ई होई। लछ साध्यवसा
ना कहियै सो होइ दै भांति। एक तौ गौणी एक सु
द्धा न है वरा वरी के संबंध होय सो गौणी कहि
यें। अरु न हा कछु औरै संबंध होय वा विसों सु
द्धा कहियै। गौणी सारोपा साध्यवसाना यथा। बे
र मुखी वलि लाल कें चालत नैंन चकोर। फूले
कमलन सों अली। विहसि मिले रहि ओर॥
सुधा सारोपा साध्यवसाना यथा। हे माया सें
मा करै। मायाहीं प्रजानि। मगन होहि जिन
विषै सुष हरि चरननि चित्र आनि॥१०॥ इहां संबं
ध कार्य कार्य कारन भाव। प्रथम भेद है सु द्ध
री गौणा शुद्ध के चारि। ए ऐसी विधि जानियो
छह लछना विचारि॥११॥ इति लक्षना॥ अथ
व्यंजक लक्षन॥ [illegible]थ बनाय अधिकु कै व्यंज
क कहियै सोई। [illegible] सुनें मन में प्रगट हो
इ सुधि कप्रकासु। सोई व्यंग जु लक्षना अभि
धा मूल विलास। लक्षिनां मूल व्यंग मे। लक्ष
ना को पल जु व्यंग जानियें। अभिधा मूल व्यंग

र.म. १४ औरग्रंथनमेंहरकीअतीतिभयंतजोअधि
८ कग्रंथकीअतीतहोइसोव्यंगजानियें॥व्यं
गहिकहेंसुविंजना॥तिहिसवनसुषदेइ॥व्यं
गसुद्वेभांतिलक्षनामूलअभिधामूल॥वार्ता
तहांलक्षनामूलद्वैभांतिःगूढःअगूढःकवि
सहृदयजाकोलषेंव्यंगसुकहियेंगूढ॥जा
कोंसबकोऊलषेंसोभुनिहोइअगूढ॥यथा
॥कवित्त॥लसेंलालभालइश्ग्रदभुतमाल
कान्हअनिमिषरहेंव्रतनेंनलयोअबें॥फू
लेअंगअंगरुचिरोजेवअंगरागमोंनाभावत
अनंगसगलीनेंछविसोंसबें॥अतिअसा
तगातरसबरसालविथमोनगहेंसाहस
अपारभिंधजोनबें॥प्रीतिप्रतिपालनीकों
आयेहोगपालआजुऐसीकोनलिनोन
लालमनबसेलबें॥४॥वार्ता॥यहांअंगुन
कोफूलिबोनाहीं॥तबजागमैंलषि
य॥अतिसुरतागगजानियें॥गातनुकोबार
सिबोनाहींसंभवतु॥तबसनाकरिकेंरस ८

15 कीसरसाईजांनियें। अतिसुखदायकताअं
ग। साहससिंधकइहांगोंणीसरोपाइअंगअ
धिकाईजानियें॥ अथअगूढव्यंग्यथादोहा॥ मज
नमुखमीठेवचनसहजनकहतवनाय॥ लै
वौवौंनसुगंधकोभवरनदेनसिवाय॥४९॥
॥वार्त्ता॥ इहांमज्जननुकीवडाईव्यंग्यसोप्रगट
हीहैयाहीकौमूलगावृलक्षनकहीयेहैः जा
तेंलक्षणाकोअर्थयोजननुहीव्यंग्यहै। अतिधाम
ललक्षनं। वक्तनअरथकेसबनकोयोगाधिक
अनुकूल। अरथनियंमजहांकोजियेअंगसु
अविधामूल॥५०॥ ॥वार्त्ता॥ सोअनेकभांतिन
याहीकऊं। संयोगवियोगकऊं। कहेंकऊंपु
निसंगकऊं। विरोधकवि। अरथकऊंप्रगारव्हु
अंगाश्रगंग।१। अे समतूकोसाथपुनिविरु
समोग्रप्रयोगविक जानियें। कनअंगाभे
स।१। संयोगयथा मिलकअभ् लस
नहैकैर.लिविधितवाः। वियोगयथा: माल
हिहसोछविभसहअइतिलक्षमियाय:॥५१॥

रस॰ 16

वार्त्ता॥ इहां इकठोरनलालइजोजानिये। संगतें

यथा। जैसें ज्यों इगई लयो सोमनु हाहमुख

देइ। इहां सुनन अरु हारना होऊ संगाकेव

लकवि कैं अपनेग्रंथ कोंनियमकरतहैं

फूल अरु माला कोविशेष कवि यथा। दिन

दूलें औरें भए हेरसिकनकेभूप। सिंघनाग

कीसीभइ प्रीतिभरी तिअनूप॥ २०॥ वार्त्ता॥

इहां नागपदतें हाथी जानिये। सिंघकेवि

शेषकविकें यथा अर्थः। जो वाहन संसारइ

न्द्र ओलोनु हरिभजि मीमन॥ वार्त्ता॥ इहां ह

रिपदतें विष्णु जानिये। अथ केवलतें प्र

संग यथा। लालन इनवितरें अयहमारेग

रूप अनूप। इहां योगाईलयकोंप्रसंगहोइ

तोमानन। रूपदकोप्रसंगहोय तो मृगजानि

ये। इ... कोप्रसंग होइ तो मृगजानिये

योग सब कैं माथयथा। मानुवनु ...

इ। कवी विकल्प भ्रांतिकाम। फूल्यावनरेबल

अलीलनसु खिभलीवाम॥ २२॥ इहां फूलेस

रहे के संग मैं अरथ वन उद्यान जानियें ॥ विक्र
यथा ॥ निसदिन रहे है ध्यान कर न्यास जगत
व स होइ । फल धन पऊँ मैं न तैं उरपत हैं सब
कोई ॥ वार्त्ता ॥ इहां फल धनु पथा विक्रतैं मैंन
परहै को अरथ को मजानियें ॥ समो यथा ॥ म
न भावन करहै धियें । सांधन को वितलाय वार्त्ता
इहां समयतैं करपरहै को अरथ मेघ जांनियें
॥ देस यथा ॥ समर भूमि मैं रहै धियें सुरव रहनप
करतेव ॥ वार्त्ता ॥ इहां समर पद तें सिपाही जांनियें
औसें ई औरो वे वाहि कनुक विकें होत है तने जा
नियें ॥ इति अभिधा मूल व्यंग ॥ अरथ जुती लि
प्रकार के व्यंग सब जुते होइ ॥ वाच्य व्यंग्य कसा
यथा सवैया ॥ पहिले मुनि बात पवों स निकी
कहिवो हि करी कव है वो हुई । सुसहै ग्रन नेऊ
व हार वृलाई हसी [illegible] पा इनी है [illegible] ॥ ल
पिलाल के लोचन लाज कछु नवनी [illegible] की
गति औरे भई । तिय चाह विचार कतैं मनु के
लिविया मुख है विज सामस लई । २४ ॥ वार्त्ता ॥

इहां लोचन लाज पर हैं तें यासौं नाइका की आ
सक्ति उमा सल वे तें उरव अंग जानिये ॥ लस
अंजकता यथा ॥ दोहा ॥ सीतल होत हीये सु
नत । कहत बात तुतराल । बोलन भले भले
वदन । आई हिया ये प्रान । २४ ॥ वार्ता ॥ इहा
विपरीति लक्षना कवि कें नाइका विक्कवंत
जांनियें । अंग अंजकता यथा ॥ कवित्त ॥ अं
बरस घन घन उनेर बन वन हर षत मन
हर ष हरित छवि छाई है । मह महें कुंजन लह
लहे वेली पुंज अथली करें मंजु गुंजन मधु बोल
नि सुहाई है । भूरि रहे थल जल पंकज मीन हल
चल पावस प्रबल थह वे रवनि आई है । मो
रनि की घोर आगें सुनत न मोर भान विधि ह
रि चोचन के भाग की वनाई है ॥ २६ ॥ वार्ता ॥
इहा एकांत में नारी का कों मूर्छ सम अवरण
न कवि विवेकी असभ वहै । न बलसना तें नयो
सो समो जांनियें । तातें अंग कवि के सुरति
समें जांनियें । तातें सुरति समें की चिनती

19 अंगनिकैं अंग जो जानियैं । यद्यपि ए सब अंग ल
छन मान लहीहैं । तथापि विभ्रमसिद्धि लैंकेहै अ
वकै लु अवथही यं अनु हेथ हकनलेहे । अंजं
कसहून हाई तैं अफलुक थ्यं जक होइ । कं
कंजिहि बेरमें अगन गनाऊ सोई । २७ ॥ व
कावर्णनु काक पुनि वचन अरथ के संग ॥
सभा कृपादिक और यकी अगरनु अंग अ संग
२८ । अंग होत बऊ भरणतें । लषत सुबुधिस
माज । क्रम हीसौं उदाहरण बकाकें प्रभावतें यथा
॥ कवित्त ॥ फूलति हैं कौं इल पंढेगी वैं नचा
तुरीसौं फले पावौं बांन जागे हे बेमें न भारा
में । फूलत है पंकजा बिबिचित्र चित्र बचंदे हेवि
उपवन जीव सें वे होत अनुरागमैं । बेगिव
लिआली न भछाइ ही लाली दुम रागी ही वी
रागी लबि संपति सुहागमैं । बिनं हीवसं
तरलिकं तमाहि पैंत है. त । ने षोमुबरे थैं न
वसंत होत बाग में ॥ वार्त्ता ॥ इहां तीकी
उकाति है इसो पर की या जांनी ये । अंक मा

रस. 20
१७

मांग सषी कौ उक्ति होइ सौ षे लवे कौ विश्र
आंनियें ॥ वर्णविषाद यथा दोहा ॥ हो सरह
ति ही इषि है दिहि ली इल भ यगाहि ॥ वक
सि धाम धन गौ वाको मो पूजन इने माहि ॥१॥
॥ वार्त्ता ॥ इहां पकरि कै इल में घार घार के
मैं ॥ भकभय भौ करि कै थाप्यो ॥ यह अंग
औ कवित राजा जे स्यघ कौ है इतौ होइ ॥
का कुकवि कै यथा दोहा ॥ मेंन कही तौ सौ
भली वादि करति है नेह ॥ चितनचै नवे
नोर है प्रथम भल्यो मुष गेह ॥ प्रगटी हीवा
वा का वै सि वृथ णा ॥ मधकर मधुर वा ते क
हत कै यौं गहि वे ठ मौन । मुष की छवि औ
रे भई लषी रावरी गौन ॥ ३२ ॥ वार्त्ता ॥ इहां
[illegible] नायका कौं सुमरण [illegible] ॥ था अगि
[illegible] था ॥ [illegible] जकी ॥ छविनि
रषी महिजाल [illegible] ॥ [illegible] है ये तौ रति कौ मकी
[illegible] ति प्रगट लषाइ ॥ ३३ ॥ इहां यह मूरति
यो गपछे वहै ॥ यह अंग प्रस्ताव विधि ग्रि सूय १७

था: धन जोवन तन न सकल सुष रहत न जात है कौ
इ। कविलीजै वेही घरी जो कछु करनी होइ। इ
हां जौ रसिकनु कौ प्रसंग होइ तौ सुरति की बीन
ती जौ। आलिनु कौ प्रसंग होइ तौ उपदेस व्यंग
जानियै। श्रोर की हिग था:। नाऊ ने ऊसा मौ
सरस नै कठु म्यागो होइ। छुटन पई यैं सां कु
छीतु रहैनी हरसभोइ। ३५। यह कहनावति का
ऊ सौ हती कौं सुनाइ कैं होइ तौ समो आतय
ह व्यंग होइ। दे सकवि यथा। यह हरहावन अ
ति सुषद वसीवट सुष धाम:। लाल इ पही
रहि इहां चलि है वी तें घाम। ३६। वार्ता॥ इहां
यह है न सुरति की लाय कहै मो छोडि कैं औ
से मैं कहूं जाइयैं। यह व्यंग्य। समैं कवि कैं य
था:। अमृत धारवरषत जल। इय वनितं [illegible] म
की घात [illegible] बालनु [illegible] ल
जाल। ३७। [illegible] व्यंग होइ सो जा
नियै॥ इति श्री मीश्र कुलपति विरचिते रस र
हस्य शब्दार्थ निर्णयो नाम द्वितीयो वृत्तांत:॥

रस॰
॥
22

॥दोहा॥ कवित होत धुनि भेद सौं। उक्ति मम
धिम और। तातें धुनि वरनन कर्यो। हें औ म
रइ हि तेर॥१॥वार्ता॥ अथ अविवक्षित वाच्य
ध्वनि लक्षनं। मूल लक्षना हे जहां। गूढ़ व्यंग
परधान। अरथ न काहू अरथ कों। सो ध्वनि
जानऊ आंनि॥२॥वार्ता॥ अरथ वाच्य सौं प्रध
नता करि कें कांम कौं न होइ। अरु कछु म
हाई वर्नं रकौं। जहां अरथ नहि कांम कौ
सो ध्वनि द्वविधि होइ। अरथ और सौ मिलि
रहें। अरथ दीन नें नको इ॥१॥वार्ता॥ जहां म
रथ और सो मिलि रहे सो अर्थांतर संक्रम
त वाच्य ध्वनि कहावे॥यथा॥ यह समयो
पै हैं न कि विकै हैं न सम सकाई। विनहिं
मनमें समकि कैं नीति परमने गाई॥४॥ यहा
[illegible]
[illegible] पदे समरुप
[illegible] हे [illegible]। [illegible] वाह
[illegible] हिवै मों [illegible] अप
मों अर्थ [illegible] इस तो अरथ तनति र क्षिन वाच ॥

ध्वनि कहावै सु यथा ॥ सवैया ॥ है कि मैंना हि मैं
सं भ्रम मान गुरु है तें रहें रस कौं लक नी कौं जो
नि परे जब होइ बिकास समपी मलो मानि ये बा
त भली कौ । और नो के मन भाए कौन इ रो मु
नि लेहु हांसि बायो भली कौ । आन द पूं जब कौ
रन है अर्थ कास कौ किन कुं जगली कौ ॥ ४ ॥ बा
र्ता ॥ इहां औरं पद है तें ना इक वकौ र पद है तें नकुं
ज अर्थ कास कहिबे तें चलिबो ही जांनियें । इन ही
ऊ नो रउ पादान लक्षना अकलक्षन लक्षना
महीसौं जांनिये । अरु व्यंग्य अर्थ ग्रंपके काम
कौ है सो ऊ बिवक्षित वाच्य ध्वनि कहावै सो ऊ
है भांति ॥ दोहा ॥ अरथ व्यंग्य के कांम को लह
म ध्वनि है भांति । प्रथम ही क्रम है जांनिये । इ
जौ है क्रम कांनि ॥ ६ ॥ जिहि हिं क्रम हि जांनिये । सो
ध्वनि वक [illegible] । व [illegible] वि
धुनि [illegible] के आभास । ७ । [illegible] ब
लन । उ [illegible] भावविधि और । [illegible]
मन । रहीं जाजिहि होत । ८ । अलंकार राग न

रस॰ सब। जहां और परधांन। सो रस कहत है। जहां रस
१२ अंग होइ मुख्य कों क। और होय तहां रसवंत
24 अलंकार कहियेर सनु कहियें। जहां भाव
अंग होय तहां प्रेम स्विन कप्रलंकार जानि
ये। ग्रं रु जहां आभास अंग होइ तहां ऊर्जस्वि
त जहां भाव संत्यादिक अंग होइ तहां समा
हित अलंकार कहिए। रसादिकन कहावे। जा
तें रस मुख्य निरगुनि भूत अंग पहें। उदाहरन
मधि काव्य के प्रसंग। चतुर्थ्य इतांत में कहेगे
अब रस को स्वरूप कहत हैं। तहां रस को मू
लभाव है। तातें प्रथम ही भाव को लछन भे
द कहत हैं। हीय रहत वल गुरु है। सबह तिन
को भूप। नहि चल रस्थावासना। भाव वास
ना रूप। ४। ।सो भाव चारि प्रकार के हैं। विभाव का
अनुभाव संचारी। स्थाई भाव भेद तें। प्रक
र्ष सात्विक भाव जे हैं। अनुभावन ही मिल
ते हैं। तातें न्यारे न कहे। कम ही सों विभावा
दिकनु के लछन कहत है। ॥दोहा॥ जिनतें १२

उनके जगतमैं प्रगट है स्थिर भाव । ते इन्ह
तकवित्तमैं पाइहि नाम विभाव ।१०। थिर
भावनकौ ओरकौ प्रगट है ते अनुभाव । संचा
री जे माण्य कैव कृत वनावैं भाव ।।११।। अरु सम
व रसनि मैं संचरैं । तह विभाव वै भांति आलं
वन उद्दीपनैं जे निवास स्थिर भाव । के ते आ
लंवन जानि सुधि । भावे जिन के लखै ते उद्दी
पन वानि । आलंवन रति के कहत । नल ना
रि भरु कंत । उद्दीपन वरु भांति हैं । वन घन
सरद वसंत ।। अनुभाव वर्णनं ।। ववन चिते
वौ विरुक विधि । अरु जे सात्विक भाव । आलिंग
न चुंवन जिते ते सव है अनुभाव । सात्विक
भाव आठ । लषि रहि स्वर भंग पुनि कंप स्वे
द असु वानि । रोम विवरनता अरु तुलन सा
त्विक भाव निजानि ।। अथ संचारी भाव वोप
दे ।। श्रम भ्रम कहत निर्वेद ग्लानि । संक अस
या मद श्रम जानि । [illegible] स पुनि दीनता कवि
ता । मोह स्मृति धृती लाज कहता । वेगा चप

रस. ललाजउतातहर्ष।गर्वविषादह्लानीइश्रम
१२ ष।श्रौत्सुक्यपसमारसोइबो।बोधउग्रता
26 श्रमणबोइबो॥१६॥बुधिव्याधिश्रवहित्था
रुयाशा।उन्मदताधृतितर्कविलास।सं
चारीतेतीसगनाई।नवरसकेऊसंगसु
हाइ॥१७॥अथ संचारीभावकेन्यारेन्यारेल
छिनकहतहैं॥दोहा॥जिहितेहियौधिसं
सारसुषदेषततपजैनेउ।उदासीनतात
गतमैजाहिसुहैनिर्वेद॥१८॥आधिव्याधि
तैभईजोवलकौहांनिगिलांनिवसुभा
वलीहांनितैउक्तपुनिसंकामानि॥१९॥अ
नुमाहियौपरिभलेकौ।सवहूगमसयाहोइ
सोऊअभिमानहहैं।मउकहियेधृतिसोई
२०।वक्रतउतावलिताजतैश्रमसिष
ल[illegible]।उ[illegible]नमकै[illegible]नतुजहांसु
[illegible]॥[illegible]इ।पवैत
[illegible]हीनताकहाइ।[illegible]तासोधीयवतकै
ध्यानैंकरतविहाइ॥२१॥चित्तविकलतासो १२

27 हहैं। स्मृति सुधि करबो होइ। धृत संतो षबषा
नियैं। लाज सकुचिबो सोइ। २३। गमन हौनी
कौ होत लिखि। चित न्रम सो आवेग। काज
उतावल चपलता। जु हमन में हैं उदेग। २४।
सब काम न तें सुन्न कैरहिबो जड़ता सोई।
चित मैं अति आनंद उमग मगावैं हर्ष तब हो
ई। २५। सब तें सब विधि हैं समरथ। यह चित ग
र्ब कहाइः। दुष तें मन षट तौ है। यह विषाद कौ
भाई। २६। जह कछु कामन कवि सकैं। ईदीय
निद्रा सोइ। श्रम रव पसो कहा थें नहां। कोध्य
धिक थिर होइ। २७। औ सुकाज कहं कौस की दि
तन महि सकैं ढील। श्रम स्माव न हां मृ सद्धा
भ न मकवि कलता ढील। २८। सपनो कहियै
सोइ षे। बोध जागिबो होई। जगानि द्रवन सम
र्थ चित। वह [illegible] कौ तोह [illegible] धं [illegible] न
ता भव। [illegible] नि [illegible] ज
मन संतापतैं। त [illegible] आगि [illegible] ई। २९। [illegible] व
हित छम सुज हैं ला नैं। हय घसो कैसे लघा

28

इ।उक्त जल्प्यो सभु चित भ्रम सो उनमाद क
हाइ॥३१॥ सो रस नवक बपानियें। सहविचार व
ऊ भांति। संचारी तेती सु गण कहे सब वन समसा
इ॥३२॥ इति संचारी भाव अथ स्थाई भाव लक्ष
नं॥ सब भावन सिर हारहें। थिर सके नहि
कोई। सो थिर भाव बपानियें। सरस रूप जो
होई॥३३॥ सो थिर भाव नौ भांति। रति हास स
शोक सो कहुलि। कहत क्रोध उत्साह। भय क
गिलानि आश्चिर्ज थिर भाव नु कवि नाह
३४। अरु निर्वेद हस्थाई होत है सांति रस को
॥अथ रस लक्षन॥ मिलि विभाव अनुभाव अ
रु संचारी नु अनूप। अंग किये थिर भाव
जो सो रस सुभ रूप॥३५॥ यह लक्षन नौ ग्र
मत कवि केक हो। [illegible] भिन्न गुन [illegible]:
[illegible] के [illegible] लक्षन [illegible] हें। नव सु कवि नरे
ष तर सुलतन [illegible] भाः। [illegible] रूप
प्रकार हें। [illegible] ॥३७॥ जैसे सामुब
हे अर्थ को। मिले नगान सुधि जात। सोई गति

29

रसमैं मगन भए सु रसनौ भांति। ३८। पहलौ
रस स्रृंगार है। पुनि हास्य करुण बखानि
रौद्र वीर भयानकौ। औ वीभत्स सहित जानि
३९ अद्भुत सौं मिलि सांत ए रस नवाहि के मै
होइ। सो न सुनि ये कवित्त मैं कविकुल क
हत उदोत। ४०॥ अथ स्रृंगार लक्षिनः॥ पति
तीय रति थिर ग है जहां सोइ रस स्रृंगार। संजो
योग वियोग कवि ताके है परकार। ४१। जिहि
ठां नाइक नायका रमै है संयोग। जहां भए
हैं मिलन की ना को कहत वियोग॥ अथ सं
योग स्रृंगार यथा कवित्त॥ सरद जुन्हाई में क
काई प्रान प्यारे चकाही। आनंद सौ मग अंग न
समात है। पिय को वदन पीया पीया को व
दन पिय नाहि जाहि लखि चाहि कैयो है न अ
घात है। हेरि पिय प्रान छवि पुंज के सारे हैं बो
आनन लो ... महत ... हि काहूं अकुलात हैं
मन मिलत है ... नवनिहार
मनि हानन नैन नहि जात है। ४२॥ पुनि यथा॥

रस· हिनहीविछुरिसांझमिलेप्राणप्यारीपियव
१५ रसुसामानिहिंयेंग्रतिसरसातहैं। प्रेमकी
झकोरनमेंझूमिझूमिझुक्योमनुझुकिगई
भूलिफूलिगधैसवगातहैं। मिलैंहिलैंबिलैं
मनुरहैंचितवाइन्हसोंआनन्दमगनलईकौं
ऊंनअघातहैं। होरिहोभिग्रंकभरैंसोविसो
रिवातैंकेंरहैंबिरेबिछुरिबेरी। क्रियातिहें
४२। अबवियोगकहैंपांचबिधि। तहांपूरब
अनुराग। विरहरूषाबावयपुनिगमनबि
रैसविभाग। ४३॥ अथपूरबानुरागयथा॥ मु
निमुनिगुननेहभईउलहासबऊलैनैन
सुधिपाइमननतलावेलीअतिहैं। रूतउनहें
बोऊबूकछुनसुहाइनबेननसुहिरहोगआ
ईउरमेंअतिहैं। रुबऊसहेलीधाहिलाइउ
रलाइहीकेहैं [illegible] घरीकोधोयोहीविहस
तिहैं। जबतेंलबेगीलोललेबीलोचनललचा
इलयवकेंऊलासब [illegible] सकेंसोसुमति
हैं। ४४॥ वार्त्ता॥ इहांतलावेलीपदहैंउदेगा १५

31 संचारी जानियें। यथा वा। कहं रह्यौ वैन सुधि
तन मांक्ष हैं न चित तन न कन वैन नैं सैं जल
बिन मीन है। चलैन अडोल हगा वागु सि मो
भूले मृग नैं कवित वनि सरवसु हरि लीनों
है। कौन इहंगा इहियो अति अकुलाइ जि
तु हां मनि सी कीधौं नितु हा कां मनुही नौ है
नौ रकि धोने हहां म है पत हा। वधं सांसु माह
नी की मोहनी कौ जंतु कछु कीनों है। ४५॥ अ
थ विरह यथा॥ वा विरह की विषधार भपार व
ढं हिम हां मनि रही नीर व्हाई। भारे की भारि अ
धारी निसा लघि कैं सधि क्यो सु घि संमैं न
आई। सा घनु वा न करी न सषा कछु आ नहि
औरभा है कन्हाई। मोहन कें मनु मोहनी हा
हीन आलि अजु विधि कैं सो बनाई। ४६॥ ईर्षा
यथा॥ मोहन कहा इलान [illegible] और कें सु भाइ सु तो
हे पहे विपरीति [illegible] पर हिय घनु है। सम स
में सं नै पौं न मौं न [illegible] हा घह लाने कौं इ
सहइ स्व कैं सें म हिय तनु है। औरन कौ मनु

रस.
१९
32
वसुकविबोमुगमशबीरीक्रियसकविवोहि
केतिनकहियतुहैं।इतनौकहतछोहछाली
यांनिकछयोनगकहोकविमासीतोहिइ
तनौलाहियतुहैं॥८७॥यथावा॥चविधिम
मीरलागोकिथधरतीगविनुधरतनधीर
रथंमहलमहमहैं।हितुहैसैनगनाइमा
नहिमनाइबाहिमोहिहमाइबौलिबेन
नवहवहैं।आतुकीतुकाइवइवानलतैंआ
इसवपोहमीनवाहिवाहिवाइनवहवहैं
यासोंकहैंसीनलनुबहहिमकहैंतुइन
देनगाएतेनवऊरयोनललहलहैं॥८८॥सा
वयथा॥हरिहौरिनमैंवनआधिमुसाकं
भथंवकवाउगपात।आंनदसोंवनमा
नलागोकिवनोनिसिमैंकहिहैंमनभात।
एतेहीम[illegible]सपातिपहोछहिआयनेआव
तैंपंथामसधात।वंद्धिडंमैंधिधिमंदमिला
पुनहैबिनसवोकहिकेंमुसकात॥८९॥वि
देसमगनके॥श्रीतमगौनकीबातसुनीज १९

33 वषेलतहीसजनीगनमें घनस्योतकीउचीउ
साकलईपियअैसीकरीधोकहीमनमें।वो
लिबेबाहिंयोओमुनिवोरहिगोसुधिनेक
नहीतनमें।लखिप्रांनपियांनसमेतुहमा
भरतीकोलिहिछिनमें ३० ॥इकतीसा॥ देष
तसुरूपसं.नप्यारेकौसकलअंगउमगि
उमगिउहीभांतिउमहतहैं।वेहेवनमाल
मोरचंद्रकारमालवेहीभांतिललचाईचा
हिसोचहतहैं।ब्रजवारिदारिवारिकावता
वतहेउधोवातकहतनवानहीलजातहैं
गारनचगाइवेकौवनहूंमेंआनेअबनिस
घोसनेनआगेंहीरहतहैं ३१ अवबियोग
सृंगारनहांमिलनकीआसनहीलाहिकार
णविचार ३२ कऊंविभावअनभावकऊ
कऊंसंचारीभाव।मारेउजा [illegible] साहिमि
लिहिसुपुनरसाव। ३३ ॥विभावनकरिकेंम
या॥ हीमकुकेघरहूंकाउ अभोरतेसंमलि
रूपअनेपरिहिबाधे।फूलकमानचलीलषि

रस॰ १७ यैंसुनियेघहमोरनकुसुनायो।कारीहरीति
34 तपीतघनछविशोभासुगंधसमीरसुलयो
अंतऊनमानरहेगोनप्यारीकहैकिनपीत
मकोमनभायो।४३॥अनुभावनकरियथा
जबलषिभैहैंसघलोचनमिरहैंसुतोवादी
तनमाकअतिमनरूपमआगिहै।मोननरह
तककछकहिनसकैकिसुनितलावेलीउर
मैंउठतिजागिजागिहैं।मगनभयैतेकही
सुधिबुधिजैहैंसुतोआगतविरहतुम्हांहछि
नकमैभाजिहैं।लागेंहूनपलहतोभरह
विकलतैतोम्हेंहीकहाहोभाविहैवआवि
लागिहैं।४४॥संचारीभावनकरियथा॥आ
नहसोंउमगेतकिरुचितैंवाकेमेवाहतक
पनधीनो।सोसउरासपर्वैविलासमकरध्रम
के[illegible]समभ[illegible]अतिबीनै।सोकियैतैंलक्ष्मोहिबि
को[illegible]भाव[illegible]हिंसीघर[illegible]गीनैं।सोवस
कोबल[illegible]यांनपसी[illegible]गुणभावभरेश्यामहैपल
कीनो।४५॥वार्ता॥इहांहर्षआदिहैसबवस १७

फो

चारीभावहीजांनियें ।। अथहास्यरसवर्ननं ।।
तथाविभाव ।। दोहा ।। जहांअबयोगकोंधांग
पुनिउलटेलाबियेंकाज । बूरोरूपचितवनि
चलनिहास्यविभावसमाज । ४६ । मंदसमध्य
अरुउच्चसुरहसिवोहेअनुभाव । हरषउहे
गअरुचपलतारहेंसंचारीभाव । ४७ ।। अथल
क्षनं ।। जनतेंनूतनकबित्तमेंहास्यउपजतह
होइ । कविमहरयकोंसुघरहेंहास्यरसकहि
येसोइ । ४८ ।। यथा ।। सवैया ।। सांकरभोरउठ
येभुजालबिलाहनुमानहीमैंलखद्यो । ज
गहोलीवडेसवतैंयदुजांनिरहेनिसवासर
मोरमझो । होरसपाइकीगांइमेंपहिंगयोसु
वराईकोपोनकह्यो । वकस्योकुहिकैंसिगरे
जगकोंसुविरावतवामनरूंदमह्यो । ४९ ।। य
थावा ।। ननकीलकिलनूहरजैसोवुझोनाह
वकवंधधिमैंसरसें । [illegible]
धनीचलेंचालिनउरनकीपरसें । सोदासी
नाकवदेवदेपाइनैवोलसुनेंधनाहनसें

रस. १८
36

धरिआएहोअैसोसमरूपसमरूपहिभयभा
गभयोहरसें।६०॥दोहा॥दुखीहैविधैलिग
धुनिभूतकथासभकबंध।रनतेंउपजतमो
कलविदाविदजुतभकअंध।६१।कहनकंप
अस्रोमनतुरएकहिहाअनभाय।गलानिवि
नतामुरछाएसंचारभाव।६२॥अथलछिन
समभकमनलकविनमेंसोकुअंगाजहहो
कविसुहृदयसधरसनमेंकरुणथवांमेसो
इ।६३॥यथा॥रोचरीरणमेंभईमारूतम
यैभऊतेकहुकेवधिभाए।तेऊपुकारनहां
मुतलांपीलधीवलकेंहमेंकोहिसिधाए।
देषतछालीफटेंसवकीउपजेजीयकेंमुनि
मोहमहाए।केकेहांमततजेतिअवासमु
लसविलासमसकैविसराए।६४॥अथरौद्र
रस॥तहांविभाव॥ [illegible] वधुवनजनएगिगुनप
त [illegible] हैंविभाव।रनतेंउपजतक्रोध
जगुणविभागी [illegible] गव।६५।भृकुटीकुटिल
[illegible] कअकणाडगा [illegible] कअनुभाव।गव १८

37

दषपलताविकलतायेसंचारीभाव।६६।लक्ष
न॥स्वनतेनत्तकवित्तमेंओधअंगमेंहोइ।क
विशाकस्यसवकहतहेगेश्रमहेसोई।६७।
॥यथा॥साहिकेउत्कमदलहूलिवोकिलीक
वालउलरतेंहूसनमेंहारउगोहूरिकें।थोरके
भरोमेंजिनभूलेमेपहारोचलिआयोरामसं
घैहलीयेवछाहूपरिकें।धोमाकीधकारधाव
धोकलधरामेंअगिअविंजुकेसीसभरोधुव
तारधूरिकें।थंडथंडकोपफंवंडपरमंडलको
सोतिनेममहूसिधसातोरावोधूरिकें।६८
॥अथवीररसलहाविभावादितव्यासंयोच्या
रिभांतिकेन्यारेन्यारेकहवेको॥अथमहीन
क्षेनकहतहैं॥दोहा॥मिलिविभावअनुभाव
थकसंचारीनुकीभीर।अंगकोथोउत्साहज
हसोरसजुरैवीर।६९।हूं।जुधानिअरुदयापुनि
धर्मसुयसनिप्रकार।अविचलसमर[illegible]बा
जुधवीरविस्तार।७०।जैजैजैउत्यजीवहेंऊ
विभावजानिये॥दोहा॥रचनअरुतताव

रस.
१९
38

हनकी जमकफलै सबअंग।७ अनुभावयथा॥
निषे। सबबीरनु के संग।७।गर्वउग्रतामस
या ए संचारीभाव। रौद्र को अरुनु वर्षी रको
भेन समता की मुषि है जहां। जुद्ध उत्सा
ह। जहां बलै मुषि समअसमम जु है कोयपर
वार है।७१॥ अथजुद्धवर्ननंयथा॥ मेघे गुदइ
दकरि अधुधशोरै कोइ। मा न सकी कहा
गति है नवन नैवधी। अरुनु नगकञ्जुन आ
रमन मवमर है पैनन नै गति वानन के
भेवकी। कलिलितो कतिन नै होत लोक बंडब
डजाकौ कहा गव घनाथ की रेवकी। भीष
मलैआयोआज भीषम मचाइरणबनावल
पैमहि छाफकामहेव की।७२॥ अथदं[illegible]
वीर॥ हत्ती रघुपाय औन कौ हां ननमें तोता
न। ए [illegible] ये संधारी जांनि॥
७४॥ यथा॥ [illegible] हैमे कवी संपति को
जगा [illegible] कुबेर [illegible] नाहि ही कों जनतो
जैसैं ताहि हिहैं दुपर्यों [illegible] की ओजा यदुआयो

39 कुंडलऔरसनाहैकितेकहिंहैवेकौंजाकौंतें
औतनमायौ।सीसकूकाटिकैपरिपसिसौंकेऊ
होहाइऔमिकुकवौंमनभायौ।७५॥अथद
यावीर॥तहांऔरकेदुःखकौंहरिबेकौविभाव
वचनसमाधानकेदुःखकौंहरिकरिबेकौअ
नुभावसवधर्यसंचारीजांनिये॥यथा॥दे
खतमेरेकैजीवहरैनैमनिपेकैधनिकैसमहा
रतैंधाऊ।औरकेदुःखनदेखिसकौंमिलिभां
तिछूटैतिहिभांतिछुडाऊ।दीनदयालहैस
बीकौधर्मतहूमिविहंस्याध्याधिबहाऊ॥
तूमिनसौंचकपोतकैपोतिकआपनीदेह
हेतौहिबचाऊ।७६॥अथधर्मवीर॥तहांवि
भावादिकपहिलेहिजांनि॥यथा॥औरनैंदे
कमीमनमाहिनछोंडेहाकौकबौंचऊते
सो।धाकमहेदूहि [illegible] मनऔपे
नबोलहिकैं [illegible] गुननिजै
मसविनानहिं [illegible] सौ।हाथीनुतजानकौ
वसुधावसुजीवहूधर्मकेकाजकौंमेरो।७७

रस॰
२९
40

॥अथभयानकरस॥नरहविभाव॥बाघब्याल
विकरालवनसूनोवनग्रहेवि।नैनावर
अपराधप्रतिभयविभावयोंलेखि॥७॥क
पगोमभस्वेदनमणअनुभावयांनि।मोह
कम्पआदीनताएसंचारीजांनि॥७॥रनैमें
नृतकविनमंअतिभयथाईउहोइ॥कविम
करेयकोमनमगन।कहेभयानकसोइ॥८॥
॥यथा॥केलिकेकाजवैलाधनकोवनतो
लतुहोनिजवाहनिकोवक।हेपिथनोसुधि
भूलिहमातेंउठोलनमाकहेसोमनिकोध
क॥सिंदरतेरतब्यालकपालुदलैलकिब्या।
धिहमाधिवघोमक।देखतवोकिगिभ्योभ
हाइबकोलतवाहमेंह।हिलेद्योधक॥८॥
॥अथभीभक्षरसनहविभावादि॥ ... भा
वविकोहे ... गुविएणआ।ने ... ग्रो
रन ... कोगलानिविभाववर्यालि
८८। ... कपननगोमह ... गजेमाद
उःखअतयाउंनयोगसंचारीभाव।८२॥अथ. २०

41

लछणं। कवित। नृत मैं गलानि मैं है इन मैं परग
ट होई। नव रस मैं भीभत्स वृत्त साहित्य कहत स
बकोइ। ८४॥ यथा॥ इंतनु अंन उन सैं फकाइ
कहै किलकालि भाभा मैं परहकनु। हाथी की छ
तीपै चढि पिमा चसु ओ नचलई चलाइ मरहक
नु। स्वाद सौं घौ गमरकै लरकै पुनि गे इसीबा
ललत हाइ मरहकनु। मा सकै विंदुनि घरि हिहस्र
घरलौं हूं कौ लै घर घरघर हकनु। ८५॥ अथअ
द्भुतरस॥ तहां विभावादिक होता॥ जहां अन हो
नै हैं बिधैं बचन रचन ग्राकरूप। गाद्भुत रस
कौं जानियें ए विभाव निरूपन ए। ८६। नयनन कं
प अरु रोम तन नए कहियें अनुभाव। हरषसं
कोचित मोह पनि भू संचारी भाव॥ ८७॥ लछ
णं। विस्मित अंतरका बित मैं अपभाव रहै
इ। [illegible] निमैं यानि यैं। महा भए रस हैं मो
इ। ८८॥ यथा कवित्त॥ ओं [illegible] हौ
[illegible] गाइ हैं [illegible] न
केहाथ सौं। [illegible] हि हिमाकै [illegible] पक

रैवातहेबिनसुधनीहमेसीमानसमसुभाइसौं
ननकेसेतनहिसोमासयोहेअघासुरसौंआ
पिरहोअवनीअकासनिजुकाइसौं ॥ बा
लकविहारीगतिजाइनलिहारीनहांनाव
तुहेकालीकेवदनपरवाहसौं ॥ ८४ ॥ अथ
सांतिरसविभावादिक ॥ मिथ्यपंडलीतपा
वनकथाजगतसमसान । एविभावअनु
भावथमि[illegible]मैंसमताज्ञान ॥ ८६ ॥ धैर्यह
र्षसंचारीजांनियें ॥ लक्षण ॥ तत्वज्ञानतेंकवि
नमें । जहथ्रगटैनिरवेद । सोतरसमतायाक
हतहे । सोहैनवमोभेद ॥ ८१ ॥ वज्रमहीक
हियें ॥ वार्ता ॥ भावध्वनिनकहीवेंयातेंतत्व
ज्ञानतेंयोनिर्वेदउपजतहे । सोईस्थाईहे
अरुजहांअस्याइप्रधानकहियेंकविकों
व्यंगहेसोरसहे । अरुभहकाव्यहीमेंहोई
मा[illegible] मेंह [illegible] हे । निर
वेदज्ञानावंतसुहदकीशा[illegible] हेंभवेकौं
इच्छाइनहोइ । यातेंवाभेंवज्रमेंविषय २१

43

हैं।मतिकवऊंविकारउपजैं।याउमकहसोअक
आकतोएकविषयहीहै।तातैंमुनिवेमेंकछु
हेसमनाहिं।तातैंकवित्तमेंयककह्यो।अरुमुर
हरीकोहेतहै।यहप्रौढैकहिआएहैं।।यथा
ब्रजनावेंधैंलेजगकेतिनस्वारथलोंसुव
नेकनपहे।कोउनकाहूकोसाथीनहींसुत
हांवसिकेकहालाहकलेहो।कोउनकुवालसु
नीवऊतेमुरलीध्वनिसोंतिनकोसिरहै
सागिऊंआरसवैंव्रजमेंवसिहौगुणऊंजग
पालकेगेहो।।६८।।इतिरसध्वनि।।अथभाव
ध्वनिलक्षणं।।सचारीव्यंग्यप्रधानहैवराजर
तिहोई।जहप्रधानताकविकहत।भावध्वनि
हसोई।६९।।वार्त्ता।।ननुरसहूमेंभावव्यंग्यह
तुहै।तातैंयहोरसध्वनिहीकोंनकहियैके
वऊभावध्वनिहिमेंनहोइ।हेभेदकाहेकोंक
हे।तहांभावध्वनि [illegible] र
कीप्रधानताप्रगटि। [illegible] ताकोवर्णन [illegible] मे
हाततेवताविषैकेराजाविषैव्यंग्यहोई।

श्य. २२ 44 विभावादिकनिरपेक्षा। सो भावध्वनि कहियै। आ
लंबन आनंत ताकवि कविकी उक्तिमें भावध्य
ंग्य होत है। कोउ बीच अनेक नाहीं। अरु अ
हां कविकी उक्तितें किविनि वक्ष्यकानुकी
प्रतीत होइ। ताथां छ प्रथिक विचारतें रतिकी
प्रतीति होइ। तातें अनंत भाव व्यंजनविचारतें
पाइयतु है। अरु काव्य के अधिक विचारी
ले आनंद अंकि कहत है। सो रसमनियता क
रिके। ताकि कला वे सब है। अरु संचारी भा
वध्वनि में तौ कछु विचार ही नाही॥ अथ सं
चारीभावध्वनि॥ यथा कवित्त॥ वे हरहरावन
वेइ मंजु कुंज पुंजनि में गुंजनि के लर फुनि
फूल धरहनै वनायवो। वेही भांति वेलवेलि
संग गुवाल लालनके। पांनर मगनभरिमु
रलीवनायवो। सो गनकी घोरमें रूपवनन
कौरअकवरीबननरवैठि....केगाय
वो। कतनेम.....भिन में आइगयो बन्धु
लेगनकाजभोनभीतरकोजाइवो॥ ६३॥ वा २२

रहौंप्रभुजनकौंसमरणयुक्तमोहल्यौंगयहदेवपतिभाव
ध्वनियथा॥कवित॥श्रुतिगणसकलपगावैंभण
सवभूपमहिमहिमाअनूपजगजपसुयश
इयें।शमिकेयकासमुचकोरनकलामनक
कुमदविकासनगनुकेमनगाइयें।सुरनसु
जानकहिकरुणानिधानकहिरविवंशभा
नुभासमानरहलाइयें।जाकोतेजरूपसाहि
मेरमतिमूरगुनगाइगाईंगूढउरआनेंद्व
हाइयें।४४॥राजरतिभावध्वनियथा॥जैसेएक
रूपधरैलाघभांतिदेषिपतुसाहिकेसरूप
हैभरैसोताकेसारकौ।सिंधजगसिंधको
प्रतापीरामसंघवंडभांनुकैप्रकासअवता
रकिधौंमारकौ।देखदेषिहांननिसवासख
माननिजुथ्यथरथरकांपैहायासोनेंकेपह
रकौं।देवनकेओकलानसोकमहिमंडलमैं
हीपहीपहीपेजसकर्ममुकुंदारकौ।४५॥ऐ
सेहीनसंगुनमैंसुनिलौंनिहगरहैं।इसो
जभावध्वनिहीकहिये॥इतिभावध्वनि॥

अथ रसाभास भावभास लक्षणं॥ अनुचित तें है व
स भाव जहं तैं कहिये आभास॥ ९६ ॥ रसाभा
स यथा॥ नागरि कंत हित लाज मैं। कहा हंस
कै हेत। ऊंचें उरोहि हित कंत कियो। कौ हि भाग न
के त। ९७॥ वार्त्ता॥ ह्यां इक ही नायक को बहु
त भांति कवि वर्नन जु मैं रति वर्नन ताते यो अनु
चित॥ भावाभास यथा॥ कैसें गोहं समुझ ए
कै मैं कियो सुमेरु। मोरस गो किह विधि मुक
ग लियें कंचन मेरु॥ ९८ ॥ इहां चिंता ग्लानि चित
अथ उदयादिक भाव भावादय यथा सवैया॥
कोंम कला नु प्रवीन नलाकत न स्यावला रति
रंगा बह्यौ। गयें सेज पिया कर कुआ गैति गास
पनौ लै वियोग कना हु कह्यौ। बोकि परी स
हलावनि कोंन भलौ लिकु वैन पयोन सको
छल मौं पिय पी मनें अंखि भूषन नमाक
मनौ रस सौ मनना कह्यौ ॥ ९९ ॥ इहां इर्षा कौ न दै
भावयां नि यथा ... वैन कछु औरस मे वि
पमौं न की विसाद विस्ला विलजौ होतो है २३

47

निनभूलिगयेसवभाइ॥१०॥ इहांकोपकीसां
ति॥ भावसंधियथा॥ इतगुरुजनउततहियेवद
नजेयेनहीकेतीर रहिनसकैवेबिनसकेउ
ठंमिलिकरीअधीर॥१०१॥ वार्ता॥ इहांओत्स
क्यअरुव्रीडाकीसंधि॥ भावसवलतायथा
इगतलतमेनानापेभएकूमेफलकेथाइ॥ ने
हभरेलबिलोइनतु मकुचीपरसतपाइ॥
१०२॥ भावनकीसवलता॥ इहांसाहितुसवठान
जकहभावमरसात कैयोसेवककेथाहवैं
मानावलेवरात॥१०३॥ इतिसंलक्षक्रमव्यंगध्व
नि॥ अथसंलक्षक्रमव्यंगध्वनिलक्षनं॥ सव
दअरथधुनिउजनितैं नाईसोपरतीत व्यंग
होततिनसोंकहीजहांक्रमध्वनिरीति॥ ध
तहंयाकेमूलध्वनि॥ दोहा॥ अलंकारअरुवस्त
जहां व्यंगनजानहोई व्यंगकहतनसमर्थस
वसहवध्वनिहैसोइ॥१०४॥ सहबनेअलंकारयथा
कवित्त॥ ... ...
 ... ...कैविषमभैनकीसिंधेमरल

रस.
२७ सुभाइसिनकोनरहलेसहोनभोयहीसोंभे
48 सउरलमोगुनरीजिये।ननसोंधिमलिलगो
भालआगिजगमगेकेछकोलकरवालक्या
लकेसंगीजियें।नतोकहेकासीवासुकासी
वासुकहितिनकासीवासुकयेऐसोसुखसा
गुलीजियें॥वार्ता॥इहांइनदेभरथनकेस
वधुनतेंयाजक्कतियें...॥दोहा॥अम
...
वार्ता॥इहा...
...
...॥यथा॥
...
...
...
...
...
...सिगुनछोरीकडय २७

गीमुनीछगइहूकीजेउधोछोरपल्लोंलियें ।७।
॥वार्त्ता॥ इहांगुनिनिगुनिछोगो । इनमें वृत्तुतें
व्यंग्यहोतहै । कितुमपेंमकेंपेंडेमेंकछुहीन
हीजानतहो । इतनेंपेंहमकौंवहकावतहो
सोतुमबडेहो । यहवस्तु ॥अथअर्थध्वनि।
दोहा। अर्थरूपकविकविकियौवकाउक्ति
विचारि । होइअर्थतेंसिद्धिजोसोध्वनितीनी
निप्रकार ।१०७। अलंकारअरुवस्तुपुनिव्यं
गपरस्परहोत । एकएककेंभाविकेंचार
प्रभेदहोत ।१०८। ॥वार्त्ता॥ इहांलोकप्रसिद्धि
अर्थतेंव्यंग्यहोइसोअर्थरूपकहियेंयही
स्वतःसंभवीकहावें । स्वतःसंभवीवस्तुतें
वस्तु ॥यथा॥ लोचनलखौहैंसोहैहैंतन
मधीनहैसोबालतिहिमैंजातिअनूपमसुर
भंगकी । मेनेमन [illegible] कें विह
मतियाहीतेंसहे [illegible]
की । डगमगीडौंपद [illegible]
हैहैंतिगतिलिनकलकअनं [illegible] ।९।

औरैअभाभाग्युत्तुभईहैवहनपरअगायअगार
जौलिहैलिअंगप्रगकी।।१०।।वार्त्ता।।इहांतें
मोहसीप्यारीसखिसौंप्रीतमकीप्रीतिरसा
ईमतवहीहैरहवक्कअंगपचनअंगतैंअ
लंकारथ्य।।दोहा।।श्यालबिमीलनुसुधि
करै।पांननधाहीचकोर।बोलसुनतपिड
कहिहै।इहांकहापिकमोर।।११।।वार्त्ता।।य
हवस्तुतैउपमाअलंकारजातिमानलंग।अलं
कारतैंअलंकारध्वथा।सिंगामनिधोकलप
नरसोविविधिकीरूढि।कहमरामकुवार
कीसमगुनरूपनरीति।।१२।।वार्त्ता।।इहांसम
इहांतेंइनमनकुंकोंकामकेलियेकहतहैंध
हतुलचगेपिनाअंगप।अलंकार।वैंतरुकथ
था।न..नलय...योव.मरामकु
वार।कविरूहिमें..मकियोकेवेलका
म..१३।।वार्त्ता।।..मा..काव्यतैंहरि
चके.महको..तामेंहरिकोसंगा..हमें
कविप्रोदोक्तिमेंवस्तु..पकथपथा।।दोहा।। २५

51 रामरावरेसुजसकोसुरपतिसुनतसुभाइ
एकरूपसबनगलबैं।वाहूनहूनलहाइ।७
वार्त्ता॥इहांवरनतहैंसुन्हारेसुजसकोरवेततता
केरूमतकारमैंभैरापतिमिलिगयो।यह
वृत्तव्यंग्य।यशवोंकोसेततनाकविकैलिषतवस्तु
तैंअलंकारध्वनि।दोहा॥रामदानकीरतिसु
नैं।सोइनसकैंसुमेरु।रतननामनकोंपतुरहै
भावैंपलनकुबेरु॥४॥वार्त्ता॥इहांसुतैंउत्
प्रेक्षाव्यंग्य।अपने[illegible]नुकेवतनतकविकवि
कलितः।अलंकारतैंअलंकारध्वनि॥छप्पय
सबलभूपबलभलहिबलहिंदिमानथलो
लजग।डुर्गाहेमसहामलहिबहलहलहल
हिहेम।नग।रईलोकसहपसहिमसछंड
हिनअहमव।स्मन[illegible]कोरओरमन
भोरलघैंनजब।रा[illegible]जरीघसिंधसुव
रामधामसर्जनभा[illegible]।मैंनाथिनाथ[illegible]हि
समरसज्जाहिअभिमज्जाहिसमुद्रः॥६॥वा
र्त्ता॥इहांअप्रस्तुतप्रसंसाकरिकैंवांछि

रस. २६ 52

ऐसोरहैघलवैरी हमा छिद्या पियहविमे बाले
कागबंधप। अलंकारवैतैवलल ॥यथा॥ लीयव
मरहोइवचतुरतर। तेउचलभनिकंलोक। फू
लतिकामलिनिपगमर सा। प्रातरूमगानभ
मोक। ७ ॥वार्त्ता॥ इहांअर्थांतरन्यासतैंजिन
कौसमर्थनाउपकौसानवारीनेरूचसहालैहैः
यहवरतकथंगप। जउकोआनेरूमगनकैथौक
लिकलितः। इतनताक्लनतुमैंकविकल्पित
अर्थभंजकरंलिये। कविनिवववताकीउ
क्तिमैंचतलैंबंकरयथा ॥सवैया॥ मोहनीमं
त्रपढायो हैं मैंनिकेनैननिकोकिलवानी हरी
है। मोहे विहारीके हूलोककारी। लगकिये
नमरोरधरी है। सीषी केसौंयहहोहिनहांरी
तकी कछूवार केकरधरी है। चंचलवाहतमें
चलभौरकेरूपसीपारपचमरीहै ॥८॥ वार्त्ता
इहांकर [illegible] निकेपलकोकवम
भतहें [illegible] हैननमें [illegible] नवव
हाजानियेंकहाहोइसौ यह मनमदकोकैरूपकी

२६

53 अधिकाईअंगपरत्वनिसौंअलंकारयथा॥मदन
गुपालउररमरगजीमालरहिविभइहांमिहाल
थानरभएवरमुहावनें।लरपरीमागमि
रछूटेकेमगएरपअंगछविमैंनमन
कोंलजावनें॥तंममरसनेनकहोकोंनकेभर
नभायेथानउदिभाएभलीकीनीभोरःआ
वनें॥हीयेभरकरमुमैंनीकैंमावीप्यावेला
लसाकूसेनआइहेसोउनरकहावनें॥वार्ता
वार्ता रहावरसनेंमालिकभावकविहीपके
धिकिवैपत्नीकेभगहे..गिकेकहोय
हेहलसेहाअंगपथकरभाकिलैंनाइकमा
पराधयहवरनहृयंगमालियें।अकभोर
भावलेपहपरचीउलेभामेंसाधकोहे।या
लेंपरथकाअपनाहृलांमियें॥अलंकारसौं
अलंकारयथा॥दोहा॥वारिवजनहेह
ममममसमन्रिवप..[illegible]।हेलेइ
जोंअगविलजलुवरं[illegible]नवोद॥२४॥
इहांपादार्थावृत्तिसंयोक्तिलैविवतरेकव्यै॥

॥४५॥ कवित्त ॥ किधौं काहू मदन भुजंग हू के बंकौ
रभारे इक इक की आकें जो मनभागे हैं। किधौं
थन मिथारे हैं नपडति हैं घन की भोरही सबे
जनकी झीडी न मन मेहै। रंगन चलिनन बनी
रजनि तिथि किधौं सोरभ के लेभ अलि अवु
लाइला गेहैं। सा नीके लो लालनु गुलाल हूवै
जीत हैं। लालन लालनो इन एचौ लरस पागे हैं
वार्ता॥ इहां संदेह अलंकार यतें नारु के कों सापका
धल अकावसन रूप वर्नते अंगप। इन उद्दा हर
न नु में कवि के व्यापक धर्मा की उक्ति तें अंगप
जांनियें। या स्पार्थ अंगप मूल पथा। सब्द अर्थ
तें भयो जो सो व्यक्ति रूके भांति ॥ यथा॥ मृगी
नांरंगपो बरु कीं नन कीनन जग्यो गहिवक
गाहिवे कों ष्फनि हीअने सोहै। औ रन की की
गति हरिनी कों करू॰ अ॰ भुंहंचा रहियगीत
लिहैं रहैं। तनने गोहै। जग भिवं सरामति
घकों सहाइ पाइ रै रोरुका पारस वगु वनि में
केसो है। कौंन कौंन सुबराइहोय जगमा

55

यह अरु भुतम गकहु पयसु तैसो है ॥२५॥ वार्त्ता ॥ स्व
तैसो जमसम वलीकौ सुष हाइहै । यह औरौ ध्वनि ग्या
नि ए । तीन भेद पहिलगनै । होन सु छान हकौ नि
२३ । सो इक हरे [illegible] भेद ध्वनि विवक्षा पर वाच्य के ॥
एक असम अंग ध्वनि कौ २ सब्द सक्ति मूल के
है २ अर्थ सक्ति मूल के १२ या सह अब यह कितन
ल १ ऐसे १८ ॥ दोहा ॥ यह सब रूहप सुंघ ध्वनि
संक हू अरु संकृ हि । रूपपि ग्रंथ विस्तारतैं के
रीन रन सो हूहि ॥ इति उत्तम काव्य भेद ॥ इति
श्री मिश्र कुलपति विरचितायां रस रहस्ये ध्वनि
निरूपनं नाम तृतीयो वृत्तांतः ॥ ३ ॥ अथ मध
म काव्य गुणीभूत व्यंग्य निरूपनं सो आठ भांति
यथा ॥ एक अगूढ व्यंग और कौ अंग होहि है २ व
नार्थ सम कहूं संदेह ही अवण सम सु षहाइक
भाइ । १ । काकु अंग सु [illegible] व्यंगा आठ विधि
होइ । जहां सु मध्यम कवित है । [illegible] वि
नहोइ । १ । तहां अगूढ कौ लक्षन कहि आतगाकै
यथा ॥ प्रेम पुलकित फूल कल जो तिय अंग

रस॰ उरैनउराएकौकरनिलोगलेहके। अंकुरजन
२८ मोहोऊलमैसोदहीपैबाद्धेलीलह्यबक
56 लोपरसहोतमेहके। मोऊमोउगावनिहे
वातनवनाइकविमुनलहैकछुनकालगरे
के। फूलीफूलीफीरैअलीबगरबेगरअवना
गरनगरनगावैधनेनेहके॥२॥इहांनाबीकोउ
रादनौदेषौव्यंगपरगटहीहै। औरकोअंगविं
गपकौपोषकऔरव्यंगपहोइकैवाक्यकोपोषक
होइव्यंगपकौअंगव्यंगपरिसवत्नंकारयथा॥
दोहा॥सपनौहेसंसारयहरहतनजानैकौ
इ।पियमिलिमनभावबिकरौकलिकलाधौ
होइ॥४॥इहांशांतरसश्रृंगाररसकोअंगःयथा
वा॥सवैया॥अमनअलिंगनरबुंबनलष्या
रसाभिषफूलि[illegible]मनमैंअधरमनपानके
अंगगुअंगुभोकलेमवाइवरूभांतिनमौषभि
गाने[illegible]गुणानके। इनबसुकी
नौसगुणाहीनमु[illegible]गुकैसंनछोडे
होउंरूपगणभांतिनकै। मदनमहीपकोविधो २८

57 मितोरियांकोवांनकरोआंनआनआजुसुगति
निहांनके ५॥ इहांशृंगारकोअंगवीररसकोअं
गभावबधेधस्तिजुअलंकार॥ यथा॥ सोरठा॥ सुम
नसलिललेहाथसुजनजनपूजनकोचली। क
हविस्वकेनाथ। दियअंगवरमीदासहैं॥ भा
वकोअंगरसवत्॥ यथा॥ सवैया॥ कासीमेंवासु
करेमुनिमेशिवकोसवलोकनउपरजेंहैं॥ भू
लिहूलजोविलेहंइतेहै। जमभाजतहूकाहूत
रनपैहैं। कालकोकालमरकपसबेजमकोज
महेहमनीतिनलेहैं। भूतपथालसमेंनिहबे
भवजुभवलाकतागकेहैहैं॥ इहांदेवरतिभा
वकोअंगवीररस॥ भावकोअंगभावधेयस्तित
यथा॥ कवित॥ जौपैंजा... हमें रविकीकं
हुतातेहैंआबि... नावकें॥
लोकालोकलागुलागुला...नजु...वैकहूवेरेप
... कोहि... ष
कोउहैं... हैय
नकेनिधानके। केनतहैंअ...दिजुनी... जैसेम

छुऐसे बन घन गाहत विपक्ष किंधैं राम के। ८॥
इहां वैकलन की चिंता राजभक्ति को भाव ध्वनि को अं
ग: ॥ भाव को अंग रसाभास ऊर्जस्वित अलंका
र यथा ॥ दोहा ॥ रघुकुंवर नय रण हतरहु। भलिं
गन मह ही वाह। तुव वैर भिरु की दीं मय वन भ्रमति
किरति विवनाह: ॥ इहां एकनाइका को अनेकु
नाइकन को भोग वर्णनो ॥ अनुचित सो राजरति
भाव ध्वनि को अंग भाव को अंग ॥ भावाभासयथा
था ॥ राम संघ करण भाल बिभरिगन मधिं
अधीर। तजिक मातरसा जन नर्दी सरधीर स्ग
बीर। १०॥ वार्ता ॥ यहां सरनन के ग्राम अभ्युपान
वर्नन अनुचित भावको अंग भासांवी समाहित
अलंकार ॥ यथा ॥ गरजति गरजि भरणा वले भा
तक मद हिवटाइ। जातन जांनै कित गए देषत
के सो रोई। ११॥ इहां पातुकन के गर्व की सांति।
अ [illegible] सुवति नसंग सुभा
र। [illegible] ठन गिरत चकरार
इहां ग्रास को उदय ॥ भाव अंग भाव संधि ॥ यथा॥ २९

59 रां मसंयघउंडभिमनूनतपलभलं । पियमिलषे
थकभाजिवैकरी विकलअलिवांमन ४ ॥ वार्ता
इहांऔतुकयसस्यामकीसंधिभावकोअंगभा
वसबलतायथा । मलकततनुअरुफलकिछि
छांनहूउरयाम्रपार । भागनकेउरहोलहें सुमर
तनंदकुमार ॥ ४ ॥ वार्ता इहांरोमांचअसुपात
हर्षऔतुकयइनभावनिकीसबलता । वास्य
कोअंगअंग ॥ यथा ॥ उरवेधतपानिपहरल
मुकताजिनविलबाह । मकवासुलहिगुनीके
हेअधरनिमिसमाई ॥ ५ ॥ वार्ता ॥ याद्दोकिमल
हितीयअर्थव्यंग्यसो अथमलतिथसंसाहीकोप
धतहें । अथधहीहेइधनाइगोधाअमितिव्यंग
कहावै ॥ यथा ॥ ततमनफतिजलपनिवचन
तलफककलकितुनाहि । विरहभुवंगनविष
रीहीहरीमुषकाहि ॥ ६ ॥ वार्ता ॥ इहांविरहको
उपहासकरावंग [illegible] ऊौहू प
ककभिके ॥ यथा ॥ कवित्त ॥ [illegible] कैहें
जबेपरलोनभवरतुबढुभोंनभयोउजकांनेहे

रस. सुनौ। ना हकबिलोकिये कौं मे रोक पो मानौं
॥२५॥ नाहिने हक बिवेठी अवगुन उनके गुनौ। समौ
60 अै सौं आम हि रसाल ह्वली घे है मल मंजरी
के मिस मय हल बिसी नाह धुनौ। बिरहिनु बि
त हो लि या हही सो चूर तऊ किरनिको नानि
सो बीरै बंह चौ गुनौ॥ ४॥ वार्त्ता॥ इहां रसाल
की मंजरी को मूलै समा किरनि नु के कौ तकी
समता थंगयाहि ये सो बाध्य कबिभ पङ्कलि
थ्य रूपक करि कें। अस्फुल स्फुट होइ॥ यथा
सवैया॥ साजि सिंगार अलास बिलास सभवा
स लै पीतम पास सी धारी। देह की दीपति अै
सी लसै जिहि है पत हां मनि कौ छिकवारी॥
आगे कै आइकै भारू कै के कर पै कर राषि लौं
न्याय मुरारी। पे च की हरि है सी षिल षीताप
भी तरि भौं न भयौ रंग भारी॥ २०॥ इहां अस्फु
टता प्रधान ही संदेह प्रधान यथा॥ दोहा॥ दि
न दिन दृष्टी दिषिये भौंन मांक्ष भकभोक। भारी
ते मौ वदन लषि हो तत भौंन पकौ क॥ ३१॥ वार्त्ता ३०

61 रहांकोमलुहैकिवंग्याधहमंदेह।तुल्यप्रधा
न्यअर्थसमसुषदायक॥यथा॥जीवतहोंभ
विरंज्यहैमनरंमनागहिमोंन।प्राननकै
कहेकहोंवातकैहसोहांनु॥२०॥वार्ता॥रहांभ
रकुकोंप्रानतुकीसमतांअर्थसोवाच्यकीवरा
बरिहैं॥ह।काकुकहियेबोलीकोफेरसोकहिये॥
यथा॥सोपैचैतुनयोवहनकीयोवमेंसमसों
तु।लालतीहाहीछबिलवैकोनकहिहैंयातें
२१॥अगरहीभसुंदलक्षनअगरही॥यथा॥उ
पविधराहैबहराहीडारकचलोन।लेतिउसा
सतिसंसअतिसिसिधलुअंगुमनुहीन॥२२॥वार्ता
रसंकेतस्थानहोनगईयहअर्थसोवाच्यतें
सुंदरनाहि।इतिमध्यमकाव्यनिरूपनं॥स्वर्वि
त्रअर्थचित्रसंक्षेपसोलोकहिआए॥औरविस्ता
रसोंआगेंलंकारवृत्तांतमेंकहेंगे॥इतिश्रीमि
श्रकुलपतिविरचितायांरसरहस्यगुणीभूत
व्यंग्यनिरूपनंनामचतुर्थोवृत्तांत॥४॥अथका
व्यकेदोष॥दोहा॥होयरहितकोजेकवित्ततव

रस: सुषदायकहोइ। तिनतजियेकोकवित्तकेदोष
२१ सुनौजेसोर॥ ॥अथदोषलक्षनं॥ श्रव्यअरथ
62 मेंअगरहेकैरसमसमस्तनहिरहेइ। सोदूषनकलन
मनविषामैजीयकोदषिलेर॥ ॥आहिरहलन
औरहेजिहिकैसैकिमिआहि। सषदअरथसब
रसमनमैसोरदोषकहाहि॥वार्त्ता॥ सबनुमैंगा
हैंस्वानाहिकहलानिये॥ ॥अथश्रुतकटु॥ तदपदर
षनअभवनथदृ। संस्काररहतनमानि। अथश्रुत
अशामर्थपुनि। तिहितालथउथजानि॥ध॥ अ
नुचित अर्थनिरर्थकोनीतिभांति अश्लील।
अप्रतीतियाबहुरिजौनकुनजो संदेहहातुकील
अमैयालथअकलेशापुततपुनिग्रामीनववां
लिभ्रमकअविमृष्टविधेयकहि। पुनिविरुद्ध
निजांनि॥ ॥अथपदकेदोष॥ सुनअधिकम
कदंदहल[illegible]तअतिकूल। पततप्रक
षर्ष[illegible]पुनिचनगारतमल।७।वरनि
दुकेकल्कि[illegible]अरुदेविविधिक्रमभंग।प
दसमूहकेदोषगनदेवैसुभावाग्रंत ८॥गवा॥

63 कष्टदोष॥ अथ अर्थदोष॥ अर्थ अपुष्टि कष्ट पुनि
आहत अरु पुनरुक्त । ३ । दुःक्रम ग्राम अहेतु बिनु
संदेही पद युक्त । ६ । नियम अनियम संयोग
तजि । अरु विशेष अविशेषु । किए प्रकास विरु
द्ध यों । छोडन [illegible] है षु ॥ होतु विधि अनु
भावयुत । अरु यहै दोष जानु ॥ अथ रसदोष ॥ सं
चारी रस भाव थिर रस को लीजै नाउ । पुनि विभा
व अनुभाव को लहै कष्ट सो ठाउ । १ । भाव विभा
व हि आदि दै जहां होहि प्रतिकूल । और दुष्टि
म होरस जहा । रहिहि हि रस की फूल । २ । पुनि ओसर
विस्तार करु अरु सर मैं विच्छेद । अंगन कौ विस्ता
र करु अंगी लहै न भेद । ३ । प्रकृति ओरकी ओर पु
नि होइ कांम कौ नाव । रस वरनन मैं अंत न सौं
छोडकर रस ने ठाउ । ४ ॥ अथ अनित्य दोष लक्षनं ॥
दोहा ॥ जिहिं [illegible] मधुरगु
न होइ कानन के [illegible]
ये सोई । ६ ॥ यथा ॥ कवित्त ॥ रचि कर माल कियौ
कान्ह कंठ तौ हियौ धनके मैं जानती यौ ये हैं ह

रस.
३२
64

लगावबे उ पथपवनायन त्रुधि है न हू जबालन
मैं कों धैं भिन क केशी जिधन लों नक्कु पिधाव
रे। गोपिन धैं। गलनो सं है सो आ इक हो अलि
सब शुधि भूली काकभनक हावा वर। बाम
हू मैं विलसैं कैं निर्गुन गाहि हैं पै एक वे र आ
इ बहा मुरली बजावै।।१६।। वार्ता।। इहां का
हू कहै तें उधव बुधि मुला प हू वियोग मैं धि
कधै है। इन थाव हरि कों तें जो अलि हो कहि
न उधौ न मति भाव भो म मन रूप आनि धै। सब
हू कहि पै सो सुति क द्रुता जाइ।। अथ संस्का
रहत लक्षनं।। बोल . मा करि विकल्प यौं संस्का
रहत सोइ।। यथा दोहा।। भली भांति माएल
ली लो मन की मिव ताग। रूप भागरी न हहा
मे हाला नको भाग।।१८।। इहा गाय हनुमक
यौ जोनि मैं। भगपशुन करू मोइ। उधकवि
न बली श्या हसो ... नु कहै सो ह।।१९।। गा
हकमु ... ली। ... की है ऊ। गुंज
माल धो ऊ पिया नी मं तो जिय गे ह।२०। ३२

65

वार्ता॥ इहां देही अरु थोक ए अग्य स्रुकें हें तातें वेउ
नही कोंउ अमान्त ही जैकह्यो चाहियें॥ अथ
असमर्थलक्षनं॥ होइ अरथ जो रूपतें पदन
कहि सकें जाहि होय नमें असमर्थ कहियत
णत हें कवि लोगहि॥२१॥ यथा॥ सेवा हिनें होत
वस कें हान रेस मन हे स। मधि रहें स[illegible] तानि तें पा
वैं कहा कलेस॥२२॥ वार्ता॥ इहां कलेस पद जल
कर्णरूप॥ अर्थ कहिवेकों असमर्थ हें॥ जातें इ
करूप हों कविकें प्रसीद्धि हें। लहें कहा जलले
म कह्यो चाहियें॥ अथ निहतार्थलक्षनं॥ जंह
सब्द कें अरथ कों अप्रसी[illegible] मैं होइ। अरथ
कठिन सों पाइयें नहि[illegible] कह्यौ हें सो ई॥२३॥ वा
यथा॥ श्राव में नय पंनु फूल कोंल हें कहा अरबां
न। सुमरत ही वेधत हीयो करत भांन कों आं
न॥२४॥ वार्ता॥ इहां [illegible] हे कों प्रसिद्ध में नासो
भाषा में [illegible] प्रसिध। इहां को अर्थ [illegible] सीध हि
हें। ताही पें तो कह्यो [illegible] जैसें॥ अनुचितार्थल
क्षनं॥ जाही पद [illegible] सुं [illegible] लें कों
तिगा[illegible] [illegible] रता में निहत चलयौं ग हें

रस.
२२
66

यकाछकौरूप॥यथा॥रहांकाछपरूसमाकौप्र
गटकरतहैं।हारसुमेरसरूपकहौताहियै।नि
रपथकलक्षनअप्रगरहीः।होयकहतहौसोअली
कयौवैछलिहैहरि।जौहैयदुरुहोमयौ।खिनरूपं
वहैंअटि।२५।रहांवनिरर्थक।यहांजोमानिक
हीयंतोमाहोपजारः॥अश्लीललक्षनं॥माज
अमंगलग्लानिजहां।सुराहपदसैहोर।शुभन
सोअश्लीलनहैहोयकहोकविलोइ।२६॥ल
ज्जाश्लीलयथा॥ [illegible] यककीछबिअतिवनीस
वभिलिहैंथनजात।हरलीयेंहारननसती।मि
थलहोसतिपगात।२७॥रहांअवकपदवंड
एपरअश्लील॥अंमंगलयथा॥तापसवतमयहि
रही।आलवलविकिअलः।धीनमकुलरीपक
बुन्यौविरकअमिलनतनकाल।२८॥रहांवुन्यो
पदअमंगलग्लानि॥यथा॥रूपगरवयुतव
नरस।होतवैसकीसंधि।पलकरतिअलि
लनु [illegible]।सुमनवधापुकीसंधि।२९॥वार्ता॥रहांवा
पुगंधिवलानिजंजल।रहांआकरआनंरसोग
यौ।पवनसुगंधियेकहौवहियैः॥अश्लील २२

लक्षनं॥ हैयसी हूं संकेतहीलो कनआलैंआहि
सोनकविनकेकांमकौअप्रतीतकहिताहि॥
२० मौरंधीरजवंतहैसोईपुरनकाम। रहैसा
नजाकेंहीयें। सानाआएधाम॥२१॥ इहांहाना
पदकौअर्थदरिद्रसोमथुराकेसंकेतहीमैंप्रसि
द्धहैं। दारिद्रकह्योचाहियै॥ अथावाचकलक्षनं॥
पदकहियेंजाअर्थमैंताहिकहेंनिहिसोइस
बहहोवमैंजानियौ। सोपुनिअवाचकसोई
२२॥ यथा॥ जाहिनतैंहैंघांडगानिमलीअपू
रवजोति हैंघेंहिनुविनुलघेंनिहिं। लचलैंमो
कौंहोति २३॥ वार्ता॥ इहांदिनांनिमिएप्रकास
अरुतममैंकहेहैं:मुदनेंघाचकनाहि। याहे
कौंलघेंप्रकासनलघें। तमकह्योचाहियें। सं
देहीलक्षनप्रगटहीयथा॥ मधुमतवनाबसंत
कविलविमुखपायौवाल। भांतिभांतिनेंनन
लगीप्रीतमसुमरतिमाल २४॥ वार्ता॥ इहांमल
पदकौअर्थमीकोकिधौंचमैयहसंदेहलागयो
प्रीतमरूपसंरमालकह्योचाहियें॥ नियार्थलक्ष

र.मं. नेयारथुजहलसमा। कवितसकलिखितुलेह॥
५४ ॥सात्विकविकीउक्ति॥यथा॥ बलसौंनैननकी
68 मनकमीनकिएमरहीन। बदनकमललैर
अलीबंककमीनाकौन॥५१॥वार्ता॥ इहांचंद
माकौकमीनाकरिवेनाहीसंभवतलनबल
भनाकविकैकीतिवेलांमोतांकोकहायगो
मननाही॥क्लिष्टलक्षन॥ अरथदेनौहिप
इयै। महांकेअर्थुनसोई॥५२॥यथा॥ कसप
सुतनीयमसत्वमें। कमलाकौधरुकाज। आव
तलबिसाचकनके। पुरवैमनकेसाज॥५३॥
इहांसवीसदनमेंहोइतोकह्योचाहियें॥अमि
लक्षनं॥ बोलहिंजाहिंनाचरसौंहां। सोअनमि
[illegible]हत॥यथा॥ करतलपीसोथालिमिसु
वनविहारकौबाल। तनमनसोधनलालके
लसो फूलनजाल॥५४॥वार्ता॥ इहांथालियह
गामनाहीकोमिसुकियौकह्योचाहियै। अ
थ अविमिस्टविधेयांशलक्षनं॥ कहियेंकरि
यैंताहि[illegible]कसोउदैसकहाइ करनुतांहिवि ५४

69 धेयहैंहोउनकेएभाइ।४। पहिलेकहिउहैसबकौं
वरूगंभिविधेयछहिआंनि।सोअविमिसृष्टविधेयहै।
जहांजहांउलटेआंनि।ध०॥यथा॥हेंप्रधानय
हसमकरणभिकोंवैठतिहैमटि।जोहैवंहउसे
भए।बिनदेषेवरूअरि।ध।॥इहांयहअर्थानुहै
कह्यौचाहियै॥विरुद्धमतिकृतलक्षनं॥उपजैसु
नवविरुद्धमत।पदविरुद्धमतिसोइ॥यथा॥स
गमनजायेंवनकिये।वंजनपरसतपाइ।हगक
मलकोछविलषेंमीनडुरेजलजाइ।ध०॥सरोज
कह्यौचाहियै॥इतिपददोषः॥अथवाक्यदोषः
वार्ता॥तहांसंस्कारहत।अथसमर्थनिरर्थकर
नकौंछोडिकें।एहूसबवाक्यहूमैं [illegible] वहैहैपंरहा
इहांभाषामैंवाक्यमानतकेभेदसों [illegible] हदूषि
कप्रयोजननाही।पुनसुतामैंउहाहरणमारेमा
येनहीये॥अथन्यूनपदलक्षनं॥आविजुअर्थ
वनेनहीसोपदन्यूनतानहोइ।पदसमापनपाय
जुतकहैंन्यूनपदसोइ॥यथा॥कवित॥साजि
यतमोरवंहीभौंरनुकोहोरयमुग [illegible] नेवरहीहै
रविनतजीवजैतुहै फूलनसुमनवेवेंआधिकम

रस०

५५

70

नलग्यौ मैं [illegible] किलट कमसुरपहैवेरसमंतुहै।ब
नधनअंवरवनेहैवकभांतिसौंनवनारीपन
रतनलगनिकोंतंतुहै।पायैगजननथोसवगग
वसुभयोस [illegible] भरपुहमोसोयाकविकव
संतुहै।४४॥वार्ता॥ इहांनि [illegible] अनलकरयो।
सोहियै।उअधोकिल [illegible] हैमंसतपी
वोरसभव।याकेवि [illegible] कर्हैकेछ [illegible] यैनाही॥
सोअधिकपदकहावै॥यथा॥ [illegible] हियैंकोह।
सोसो [illegible] हियैकीगानहोर [illegible] नहीमनहीमैं
मिलिकैंमरमकणीजियै।इहंअंगअंगहोत
लों।वनघनंगवहलिकैंमरूपकेसंअंकभ
यिलीजियैं।वातुरा [illegible] गलिघालिघाहलैंवो
गनीवरयोनीनिकसतसोसुभागसखौंभी
जियैं।संवकसोगगोवोततुभोनमेरुपलनैं
नवंदसोमरूपछुपहैपतलीजीजियैं।छपु
रहावरगोरोवपलमरूपछप [illegible] पथिद।यां
[illegible]
[illegible] धावत [illegible]
याहियैं॥अथहतहतलक्षनं॥ [illegible] मनहेमु ५५

71

धभक।सुमतअफविज्ञस्तोअ।ग[illegible]विकछपुनि
हतयह।कैहृत हसमोद।धद॥यथा॥तोरहि
नलसकरीइंधनकी।रसभक्तिकहैकासह
सकौ।नकौनगुनलेखियैं।[illegible]केरंगज
गतंगजननैंम[illegible]भौनतकेमद[illegible]यस
उपमानो[illegible]सोकमोचभनिसाह
यथिवो[illegible]वालय[illegible]तिहैंसैंपनिवि
सेखियें।नृभांलिवामतमनामनविलास
भयि।[illegible]मानिकैंपामहामत[illegible]नृहैदि
यें॥४७॥इहांभक्तिव्याइक्षणअभ्यंजनसमां
नकह्योचाहियैं॥मात्रावृत्तयथा॥दोहा॥मैं
करुरतनजनच्छतनहिभाए[illegible]गननितिहिसं
गः।शीतलमदगाकेरागसैंबांधनैनकुरंग।४८
॥वार्ता॥इहांहैकअमह्युनकोलघुपरिवोअ
समर्वहियैं।चतुःकलकीयांपंचक।इहाप
लहकह्योचहियैं॥इसमीकरुछपणाफूलना॥
[illegible]
[illegible]हाभालनृ[illegible]हनसु
हारसुमसमुझिरमोधानलुबोहिसंचाल

रस. उपवाहिरसीएयैं ॥७९॥ वार्त्ता ॥ [illegible]सोदा[illegible]हिकरम
२६ [illegible]नकहुम[illegible]नसमतें विरूद्धपदकथितलक्ष
72 नं ॥ सोकहियै पद्कथितनलहणकसवू[illegible]ार
॥ यथा ॥ श्री[illegible]कै[illegible]सम[illegible]शिवशिव
नकैसुषमा[illegible]निनामसथ[illegible]ानसमा[illegible]हैं ॥ क
मलानिवासमका[illegible]नकमलविकासमसजितहि
त[illegible]धन[illegible]मशि[illegible]शि[illegible]हैं ॥ [illegible]सतमधुप
पुंजकै[illegible]थतमा[illegible] ॥ [illegible]चिर[illegible]मिनि[illegible]
जग[illegible]कारणहैं ॥ [illegible]राकेपूजकसवीलचंद्र
भ[illegible]रसि[illegible]सैतमहस्वलोकलो[illegible]सैं[illegible]कारणहैं ॥
७० ॥ इहांसोभाकेसुहासकहौवाहियैं ॥ प्रतिकू
लवर्णनलक्षनं ॥ [illegible]विकहैं वर्णजहांसोहै
हर्ष[illegible]प्रतिकूल ॥ यथा[illegible]रिपै[illegible]कदगहक
की[illegible]रहैं[illegible] ॥ [illegible]समगहदाहैललको
[illegible]कानुम ॥ यथा कवित ॥ दकरको
मं[illegible]तिकजाकी
सु[illegible]हैं ॥ [illegible]ककनैहरठहूमोसुमन
[illegible]शि[illegible]कोकनहूकौपैपाइ
हैं ॥ [illegible]दैं[illegible]हैं[illegible]राहहहकेसैं ३१

छत्रायपकौ[illegible]हनकोहाइहैः। भालकीकिरनिन
हनाजरविरहभवघट[illegible]लनवलओंणाहयह
इहैं।५१। इहांओजकेअंजनकवर्णमाधुर्यतैंविरुद्ध
होहे। म[illegible]ोल[illegible]चवन[illegible]यविनहमिर
हार। भे[illegible]ै। हीयोउहीमैमकोभाव।५२
।इहांकोमलवर्णतैंओजनेंविरुद्ध।पतत्प्रकर्षदोष
लक्षनं। अ[illegible]हि। किंपिबेमल
त[illegible]मि[illegible]घ[illegible]वि[illegible]होपन[illegible]का
र्यवताकि।५३।छपय। [illegible]किर[illegible]लतप
श्वंद्रमहि[illegible]रल[illegible]र। [illegible]स
ध्वंगावहि[illegible]गाई। जलनिधिवासथलहोरथलहि
नसाग[illegible]दि[illegible]हि। [illegible]लपालविकपालजे
हतित्रिभुवनइगा[illegible]हि। सकलकोसघवन
मथितसकलनजगतः[illegible]वन[illegible]। धृ[illegible]
कासउपहवसमैय[illegible]पमरः[illegible]नमपरः
५४।वार्ता। [illegible]रतत[illegible]नवं
इस्मानुइहिविधिमनपदः। यों कह्यो।[illegible]।प्रसी
द्धितलक्षनग्रहहो। [illegible]। [illegible]प
होपनकौमैंतपद[illegible]तजनोचालोकौपै

र.म. ईवगोतहै। कौनेकगनतुलिहिनहियहैमैसीजाकै
२ गुनसहि[illegible]नयकेगुरसीमोनहै। गहेकाखा
74 रथहर[illegible]यवढैतवरुपअैसेभयेमानुभान
केउदोतहै। [illegible]नकोरतिनमुनिमंडिसिमनिव
श्रीवीरस[illegible]केहीयेहुह्या[illegible]सुकहोतहै। ४४॥
॥वार्ता॥ [illegible]रतिजर[illegible]तरभुयव[illegible]भरुगति
केसयवर्मैपसीहिहै। रसंगवजेपुकारकहौ
याहिहैं॥अथवचनमतयोगलक्षनं॥ अरथन
केमिके[illegible]कोहेनताहि। नहमरथु
तिवरु[illegible]मोचाहि। ४६॥यथा
[illegible]गीवैसर[illegible]गुनेमेमनुरहिहिवितहिन
कीभांवर[illegible]तिसुरी[illegible]मीहै। [illegible]गविनवे
लीयलवेली[illegible]तिरेसीगुपरसहेलीसं
गरहे[illegible]मेरयारवारपथतनवा
रहकीर[illegible]हुमेसंपगधारमेसंगा[illegible]है
गुमतोलेअयवाहिलागी[illegible]नकना[illegible]हैवेस
कहिलाइ[illegible]मीसमनीहै। ४७॥वार्ता॥ इ
हावलिहै[illegible]गुमहौमोलाजलावल॥
गीयेवहलितजकयोकहीयाहिय॥यथावादो ३०

75 हा॥ जिनकेकाजेमनहियोशीतमकेगगला
ई। जेनिसदिनअनमीधरहत। जेमवरहेल
जाइ॥ अथसमानप्रुनरक्तलक्षन॥ [illegible]निपुके
कछुकिछिकहे। बिनाप्रयोजनजात। पुष्पन
हूंकिविधैविधैसोसमानप्रुनजात॥ यथा॥
गोवीभोरीगुजरीकितोरीवैसषोरीथलकौ
नहीवनाइदेषीव[illegible]रथैकैभाग[illegible]है। गतिमैंन
गतीछविमैनकाहूमैनमैसीनभाइरवसीजा
केबांधीमोहेपाइही। [illegible]तुमतन
तुसंतालैवाहिमिलै[illegible]मानलहे
हाइही। कमलमैले[illegible]रसोआनन
सुधाहीव[illegible]तनैनेनगोव[illegible]ही॥ ६०॥ वा
र्ता॥ इहां हती [illegible]कु[illegible]पीनकुगाहिं॥ प्र
थक्रमभंगलक्षणं॥ [illegible]कौहि
किरिगलैलकहिहैभंग। यहि[illegible]सोधौ
छियेग्रैहैविधिक्रमभंग॥ ६१॥ अथ्यमयथा॥ वै
नीमैफूलसोफलग्रुहेफि[illegible]जेवसौ
भौनजगायोहै। भोरहै[illegible]बलीक
लकेंडगमैंअनुरागसुहायो कंठसिरोछवि

रस. ओ विकु नयु नि वे सखि को गुन [illegible] ननि आयो ॥
२९ या विधि [illegible] सवा हलहे हवि माहि सों कोन
76 को मन [illegible] यो ॥ वार्ता ॥ न्हा कं ठ सिरी यि कुचा
कहि हैं [illegible] नि वै [illegible] काय [illegible] कि बि कंठ सि
री कीह [illegible] नि आयो यो कह्यौ वाहिलो ॥ अथ कम
यथा ॥ [illegible] तिर सी लीर स [illegible] मै [illegible] ह्लीनो हन
[illegible] लि [illegible] गुनयायो । रूप अधिकाई जा
नी नो रवि [illegible] गुन [illegible] तव तागु नीनो लावको
हहै [illegible] । कीजत सनव चलि [illegible] गुन रहु
मेय हजि [illegible] भिधि [illegible] नेसें हि [illegible] यो ॥
पहिले तो [illegible] कि [illegible] जि [illegible] कवि
ले [illegible] मानि [illegible] र्ने हे [illegible] घरयो । दृ ॥ वार्ता
[illegible] से सप [illegible] सगुन [illegible] न मार्ह हे न संदे
सो वह [illegible] है [illegible] व आप [illegible] यो यो [illegible] या
हियें ॥ अथ [illegible] स्थानस्थपदलक्षनं ॥ [illegible] य द जि
[illegible] नि [illegible] हिले [illegible] त्यंन
[illegible] द ॥ यथा
वी [illegible] कच [illegible] मे [illegible] गुन वे
न [illegible] जें [illegible] यि [illegible] सगी बमें । उ [illegible] वन मालतो २९

77

रसंइकारसाललोललोचनलिषैअनेसुधिर
होतीयमे। अकलखियलहेचितकीकहान
आइभोननमुहारुआलीथंलगाघेपीयमे। नव
होतैमोहगयेहैनैनगोहनमुतनवैसकटा
लिहालिउठेहीयमे॥ ३४॥ वार्ता॥ इहामुषवेनम
इयाकैकरौयाहिहैं॥ इतिवाक्यदोष॥ अथअर
थदोषअपुष्टलक्षनं॥ वर्नैकछुविशेषतहि
नाकहैंनहिहोति। जहंअर्थहै [illegible] विनुताहि
अपुष्टिवर्षानि॥ ३५॥ यथा॥ जा [illegible] कैमवता
हिभलियेनहिजुभाकै [illegible] रेवसही
तैसीजिनै। वं [illegible] वनगाजा
गारसवरसाइ [illegible] लिहै। गाह
कविवेलीगाये [illegible] कहितसै [illegible] अंमैलानिद
नीअमरनवें [illegible] कीजिये। [illegible] गुलमक
पढेलि [illegible] पारीपरमुजोना [illegible]
तोहीहिये॥ ३६॥ वार्ता॥ इहांपु [illegible]
मंसताकीप्रतीत [illegible] वि
[illegible] ताही अ [illegible] कु
जोगकौकनाहिहैकअर्थ [illegible] नहिहै। यो

रस·
२९
78

कह्यौ चहियै ॥ अथ कष्टार्थ लक्षनं ॥ अरथ कठिन
समरथ अवररथ नां तें सिध होइ । तउ कठिन सौं
पाइयै कष्टारथ है सोइ । ६८ । बाहे फूलमाल सौ
लौंवकै भालबाल नैन कंनिकै विसाल थौरल
कैं अलीगनकी । भैवकी सी रूपसरह सतिविलव
तिपुन पुहमी लिषलन सिषल सिषजनकी । उ
ठैं महराइ मुषलगी हाइ हाई कछु षरनी न जाइ
ऐसी रूसा भई घनकी । गावरैं विरहकों कछली
श्रंषभां [illegible]ली [illegible]ली सी मलीन न न सम्हाइ रहीन
नकी ॥ ६९ ॥ वार्ता ॥ [illegible] विरहकौ छलिवौं ना सैसं
भवतु न वभा [illegible] सिकैं विरह ही उकुची मैं
तवकै विनवे [illegible] गे । भ्र [illegible] लम नै थेत
आनि वो पर भर्सक्रिम रहैं विरह प्रेतक हौ चा
हियै ॥ अथ व्याहत लक्षनं ॥ जाहि निवारह दीजि
यै तातै अम सकी याहि । ताही सौं सब कहत हैं । व्या
हत कैं [illegible] ह । ७० ॥ यथा ॥ नीकै हैं कमल ति
[illegible] मनावरे कै मलमुरव ही की
वाह [illegible] छवि भलि मालसी य आंनि कालक
रवाल भरै हैं विहाल लोभ परी अलीगन मैं औ

२९

79

सौं फूलन्मलयो हरीन कलि सौंध कलि है हरग

नि मैं ने फवर मैं सौं मेऊ वन मैं। कौं रलकु हकि

कैं करे जो कमकलि परिया लैं नस कलि रहलं

न मैं ॥ ७१ ॥ वार्ता ॥ इहां नेक र चितै ये ऊला इक

नक है सौ कम जु हम पकौ ऊपमा कौ यौ। याहि

तें आहल वरन वह कौ याह कहौ वाहि ये ॥ अथ

पुनरुक्तलक्षनं ॥ बिना प्रयोजन नैं हो हे गुप्त

रथ है वार। लखयं प मैं कोन नहि। सो पुनरु

क्त विचार ॥ ७२ ॥ यथा ॥ फूल नू मैं तिन को मुष

सो मन तेहो इक कज नभ [illegible] केसा मन। नी समनैं

सवाह कहै तिन तैं [illegible] अकाम मन

लाल चित मन थे [illegible] लाली है थो मं

जि मिं इस मरा सन। नाना उजास मं मैं कि लि मैं

रपला सके पास मप राग की आसन ॥ ७३ ॥ इहां

तौ लषै अनुराग करै मति है यें उ [illegible] स थो कह्यौ

चाहिये ॥ अथ उक्रमलक्षनं [illegible]

हाव वनि यें। लो कक वैर [illegible] थहो पमं

जानि कैं उक्रम ताहि वखानि ॥ ७४ ॥ यथा ॥ रस

रस·
४०
80

निकीरीतियहमहाचलिआईविधिजैसीएव
नाऽस्तुजमकेरसभीजियें।जैकगुनगावेंले
परगनेहीपावे।जेपरगनैनराजीतिनैगाव
मौजकीजियें।वकसततहोहायहोसुदायमुक
तांनकौकैसुवाकेपलटैकोसुवरनमाल
दीजियें।औपैवितवीजोहैमोहीजेवरवाजी
औनवाजीहैसककनगअगाजहूतोरीजियें।
७५॥ इहायहलेगावमानगजराजकहौवा
हियें॥ अथग्रामीलक्षनं॥ गावैंहिकैसमृझै
सुनें।प्रथहीकैसंग्रमांन।कहैंपनुपवाअर
थकैं।ग्रामीनमाहिवांधि।७६।सूरजतेज
तपैतिहूलोककमाधीजेगाइवेकौगातिवा
सीतलताकेहिकौनकैंजिहिहेंथेंतुवारह
कीगुधिनारी।जेठमैंजीवनतोहिवैनेतवहे
हितिवारीवनाऽकेपाहीं।सोछिकैंकोसेधन
तिकैनी[illegible]रतनहींजैसेयासेकीटहीं॥
७७॥ यहीआदोकेगावामकीलोइसोहोवनाल
अथनिहैंनलक्षनं॥ जहांहेतकहियेनहीं ४०

81 अरथसहैतिहेत ॥यथा॥ गारडुठैठिनमेघ
मलारहसैंतवहां मिलिसी हरसावें। बोलत
कोकिलकोवरजैगरजैइगबाधिजसैंप्रव
लावें। श्रीगकम्ाररसुधाधिवेकोंसधकरीध
तिनुछरसंरवजावें। सुनेभवासमेंबाल
विलोकीरीआपहीपावससमाजवनावें। ७८
॥वार्त्ता॥ इहांपावससमाजवनाइवेकोकहे
तनकह्यो। इहांऔधिकीआसविलासनि
बालप्रवासनिपावससमाजवनावेयाकह्यो
वहिये। ॥अथसंदेहीलक्षनं॥ जहांअरथके
गनविनुरहेंअरथसंदेह। तितेमननाहिके
हिसकैसुहहैससंदेह ॥यथा॥ वानानिवुन
इकैकहहनसवैकोकथाकोआनंतभेदयहकै
नभांतिकहाहें। सुनिकैंसमरासौंविवाकके
गैविलधरैंलउअसुधरनिइगजाविपरहेंचा
हहें। तौलिंगैतिकविलीविभांतिहेतजाकी
गतिएककहाप्रभाकीमनआएसाउसहाहें॥
याकीपदपदवीवरनगुनभाइनिकोपावेंस
विचक्षनलीलिहीसवलहाहें। ८० ॥वार्त्ता॥

रस॰ ४२ 82 इहांयहकवित्तकीवगइकिपरअत्यकीघडा
इयहहप्रगयकौसंदेह।गरुओलक्षकाहूकौ
प्रसंगहोयतौसेखनाही॥दोहा॥देखिसभो
जीयवोमनतजिकैमिलेसुखिविधाक।ववन
समुझिहिअहितकै।नहिलैसवकोसार॥८
८॥वार्त्ता॥इहांएवचनसुंगारपरकीआंत
परयहप्रसंगकैसावविसुसंदेह॥अथप
दसुक्तलक्षनं॥पूरवकौजैकैरत्नजिसोपद
सुक्तकहाय॥यथा॥गोत्रलालमकुलकांति
उरवसहिहियेतननताइ।ओलहमोहनहोइ
मविमसुहरीकैसुभाइ।८८॥वार्त्ता॥इहांओ
वहमोहनहोइसाहि:याहीतैपूरनकहमो
हो।मनुहरिलेवेकीघातीनमोहनपदहीतेहोत
है॥अथप्रसिद्धिविधाविकद्वैभांति॥कविसं
प्रदायविकद्वयाख्यविकद्वकेमसौंउदाहरन॥
कंटकमैंभरिकैतोनगुलाबमोंकेतकीहूकै
पशुभरिसांमैं।वाउसोनथगपोडिननहूगु
नवलववलीहैंविननुभान्यो।वोसोभयाव
विघोलसीरी।हिम्मडोलकोनोलरहायसठंन्यो। ४२

सोमभैलनकालभलीविधिवंपकलीसोभ
लीमुषमान्यो।८३।।वार्ता।।इहांवंपकलीपर
बैठिवोभवरकोकविसंभ्रमायतेविकवकवि
कैकपोलनिहीकाहिवोउचितहे।।दोहा।।छिन
हीसोवहमांकृश्ववनानविगेभनिवारि।।मा
रोहाहनुमानगहैमैंनलीधैंलरवारि।।इहां
कोंभकीलरवारिअगमिविधभवकरधारक
होचहिये।।पेमभवगेसभविसजगेलोचनल
गेबिमालउपहस्योंसोवनजगे[illegible]कपु
लितकुहिमात।।८५।।इहांसूर्यकेउदोभयेमोय
वोधवमभ्रमसौंविकरु।।[illegible]प्रभागो
बहतकमलपोलनकुहिमात।।योंकह्योंचाहि
यें।।अथअगनविकतलक्षनं।।[illegible]रूपहेअ
रथवकञकंठांकहेंकविलोक।।नयोकपलवि
येंनहीमोभनविकतहोइ।।यथासवैया।।[illegible]
पवीधाहि[illegible]लोकहा[illegible]भवे[illegible]गुप
मागक[illegible]हो[illegible]हाथोंजुवंभमलों[illegible]क
हामयोनगहोंनमयाहो[illegible]निमालजीये
तोकहाकधकहाभयोमोजियनेहनिवाहो[illegible]

॥वार्ता॥ इहां वांछित अर्थ औ रचना अनुकारि
नतु पे ओ हरि तो मैं जीपन हि लै हरि वा हि
यो कह्यो चहियें ॥अथ अश्लीललक्षनं॥ कहिअ
ए संदेह अर्थ को भेद॥ यथा॥ छैल सो फिर ते ब
इ छैइन वे [illegible] लेन छै [illegible] पा ए नाल न व इल
विलखाइगो। वां सुरी के [illegible] ही नै भाध रजा
इ रहे जानि [illegible] भै [illegible] मिस इन घता इगो।
मा फ के सकल पा हैं [illegible] पौ धम नम नुमा क
व वै मो [illegible] मन सिप [illegible] पगो। पेके पे से
लत हो [illegible] हैं [illegible] ग रस र है अब के सं घ
ह ह छ [illegible] गो। ८७ ॥वार्ता॥ इहां घृह अर्थ
लज्जा को प्रगट करतु हैं सखी की उकि मैं ओउ
कि का हूं [illegible] को हो इ तौ दोष नाही ॥अथ
सहचरी भिन्न लक्षनं॥ [illegible] पती को संग जह
सहचरी भिन्न [illegible]॥यथा॥ [illegible] विनु पी
[illegible] विनु [illegible] से विषधविना कुली अली
[illegible] तें। पंछी विन भूप औ ते अलि वि
न कूप वौड़ि [illegible] इ वि [illegible] जि का के गुन निक
लत हैं। वे हवि नु जाप जपकी यो मनु गाहवि ४२

85 नगपानबिनजोगीजगमेंसेनिवहतहैं।चंद
बिनुनिसाग्राणप्यारोअनुरागबिनुसील
बिनुलोचनज्योंसोभाकोलहतहैं॥८८॥बा
र्ता॥इहासवउलिमनकेवीधिविषयक
गनिकौगनिवोसहरभिल[illegible]तिजेसंला का
अबिनुकांमनीकैकहोवहियै॥अथअ
हयुतलक्षनं॥[illegible]कयग्ग्सकीबाहजह
सोहबाहजुरसाईबाहीमोमांकोसकहत
हैं॥दोहा॥घन[illegible]ककरहीनदनकौकिल
कीनोमोन।सांवनमें[illegible]परवब
नजिकेसंभांन॥८९॥वार्ता॥[illegible]तजिकेंसें
जैसेयोकहोवहिदै॥अथनियमअनीयम
बिसेषअविसेषलक्षनं॥जहांनियमछोडि
कैयुक्तिनकिकैकहियैसोइ।सोविसेषअवि
सेषहूतेयकहतकबिलोइ॥९०॥नियम
अनयमा॥यथादोहा॥[illegible]हैरीकहियत
फलनाभिमनाईगिन।[illegible]
हीयफजुमुनिलीलै[illegible]न॥९१॥इहअलाहही
यमुहीयोकहोवहियै॥अनियमकोनियम

रस.
४२
86

यथा सवैया ॥ आननमैं छबि भांति बिधसी इन
नै हमभेरहीमहावलबिथैं । तोकहाभयोजोग
तिमंदहमदहोसुभावसीपावङगीसाबिथैं
हसिबोरहहिभांतिबिलोकिबोघोलगिकाई
केकाजअमोरखिये । बिनुसीपेहीमानकै
मानबिनापीयकोंउमिकेमुखकोंचबिथैं
६२ ॥ वार्त्ता ॥ इहांआननमैंछबिभांतिबसी
यहअनिष्ठमकहिबैहैहमभेरहीयहनिय
मुकहिबोअनुचित: विसेषमैं विसेषयथा
अरुकपूरकैपूरकरीजनिहौबिनजावेजधा
हिलगौ । कबिकैसवयंइवबेलीकेबोसरनि
होहरीनिमद्योसमगौ ॥ सरसाबसमंगउसी
रसमीरसुहाइनहौ । बिलपैमयगौ । लबि
मीरेभाइवसाजसबैरननैंकहिबौंसबि
केहौभगौ ॥ वार्त्ता ॥ इहांमविशेषकहिकैसो
रेभाइवसाजसबैयहमामान्यकहिबोअ
नुचित ॥ अविशेषमैं विशेषयथा ॥ अलवेली
केअंगमबसुमिरनमोहैचित । बसनकांति
बितसुभिरहीकेसबैवरतोंमित ६७ ॥ वार्त्ता ॥ ४३

87 सबअंगमामामिकहिकेवहूनकोंतिअविबोध
कहिवेअनुचित।योअगप्र्यकामिकियेतेष
विकेमनकीअंगपतेविकद्धअंगप्रकासाक
येसोअप्रकासितविकद्धकहावे॥यथा॥हसन
छलिपीकपोलीलीकिकपोलभलोलभयो
धकमलानहींयो।ललचोहसेनेनलजोहसे
वेनसोतिरहीनवरूपकीयो।रसलागीहे
गातमनावतहीहैनएअसियानहिअैसो
वियो।अमोललालनताहीकोभागजहांकवि
सोअमिकैरससंगपीयो॥७॥वार्त्ता॥इहाअ
नंगप्रकासविकियतैंनारिकहीतामकाभए।सो
रपुरबकोयहेविकद्धरीतिहोतहै॥स्पष्ट
पुनःस्वीछत्तलक्षनं॥वरनिछोडिकेकिरिग
हे।छोडिगहोहैसोइ॥यथा॥दोहा॥कौनकं
मकोरूपहैजोसिरभागनहोइ।वहेभए
गुनसीलसोवीकहतहेसबकोइ॥७॥वार्त्ता॥
इहांजोसिरभागनहोइयहछोडिकेवहेअ
र्थकिरगहेयहअनुचितः॥अनुचितविधिअ
नुवादजहांअर्थहोइसोयथा॥अतिरूपअम

रस० ४४

इसलोनिरगुनविषयविहीन। अलनताप वृत्ति
तानकौहलोकयाउवलीन॥ ६७॥ वार्ता॥ इहांए
सवअलनतापवुमाइवेसौंविकहै॥ इतिअर्थ
दोष॥ अतइनदोषनकौसमाधानअकारकहि
यतुहै॥ कांनककुंडलनासिका वेसरिदोकौ
भाल। करकंकनउरहारवरजोहविलसतिर
सालं॥ ६८॥ वार्ता॥ इहांकानआदिदै ए शब्द
वहिलेकहिवेकेलिए कहेना कघकहूंमें
धरेयहकेजुकी प्रतीत होई॥ याभांतिसमाधा
नकीजियै जैसेसूहभाव पदैतजैकविकीउक्ति
मैंअतभावहोतिकैनदोषविषै॥ दोहा॥ हियेसुध
रेंफूलीफूलनलपाईपीयकैंप्याव। फूलमालकी
सेवयरवाभितिमुक्ताहार॥ ६९॥ वार्ता॥ इहांअ
धदिमालकहेतैंफूलनुहीकीसमकहैतेंमु
क्तानुहीकौयहअमिद्दहै नणाविअतिमुभ
धफूलनकीजकेनेमुक्तानुहीकोनहकौहि
वेकौफूलमालमुक्ताहारकहो॥ अतिप्रसिद्ध
अर्थमें। नहतदोषनाही। यथा॥ जवमोमावे
बंदमेंकमलभागनहीलेइ। दैयतफूलेकम ४५

89 मनकौवंदहिआहरहैं॥१०१॥वार्त्ता इहांयाति
मैंकमलनुकौसंकोचदिनमैंचंद्रमाकीहीन
तायहअर्थसकमलोकमैंप्रसिद्ध है। यातेंका
हूतेंयहहेतुनकह्यो।पराईकहनावतिकेक
हिवेमेंश्रुतिकटुआदिदैकोउदोषनाही॥
॥अथदोहा॥ आननचंदनिशिसरसश्रमितैनसर
मीनसमान।देखिअलीयहकहनथौंउनिके
कौनप्रमान।१०२॥वार्त्ता॥ यहमत्रादुर्मियातें
हास्यरसकौंपोषतिहै।यातेंदोषनाही।ऐसें
हीओरठोरऔंमिलीजे।कवहूंयस्याथोनाम
रथअंगपरस्तावकीमहमाकरिकेंदोषहूगु
नहोतहैः।कहूंनदोषनगुनजहांकहैवेपायु
ष्टकौप्योलातैंसोरहोइ।अधिकछैयागुनग
ननहांदोषकोह्नहिकोइ॥१०३॥अथवसतें
कहूंपदलघुअर्थवहुगुनहोतहै॥यथा॥अवल
गलागतपापग्राम्भाहैवहुओर।अवलग
ब्रजपतिलखतिनहीनरानैनमकौकोर।ध
नैरवीबदविधनमातरसजहांधपहोइतकसू
तागुनहैंनाटिककथारस्तनमैंप्रतिकूलव

रस॰ ४५ रनलागुनहैं। अथ प्रगुरूनिहितार्थमेसजम
कचित्रमैंउपनाही। इनकेउदाहरनकछुक
10 हिआगेकछुकहैंगे कछुकआगेहीहैं। याते
नकहे। सुगतिकथागंपालकथाकोयकीउक्ति
मेंअसीलदोषनाही कममैंअदोहरण:॥ उ
वडोमुरलीननकवानिवैठोऊविदोइ। जाव
हीएमेंछवलाइयेसुधनहिंसकैकोइ। १०६
लोचनकोविरजलजगावनमासगोपिकवजा
नि। नऊपगनमपिछइहानजिगोखेंरसुन
वानि॥ १०६॥ इहानसैाजिनमोसवेविरहीक
रेपुकार। केहुकमनिलकछूमये। कविकुल
क्रियरनमाप। १०७॥ वार्ता॥ कहूथाजकाति
मेंसंहियहूगुनहें। अरूनहामाखुयपानकी
घरवाहोइनकी। अथतीलगुनहैं। जहांगवा
रनीवमैांउक्तिहोइनहीयांमहूगुनहैं॥ य
था॥ गोधनवेलनहैंमिकरनविवागुहा
वनाइ। गोइरगोदजपरीसमोवीनिजिनि
जाइ। अर्थवकबकीउक्तिमेंमहूगामपरगु
नहेजालैंहामारसकोपोषतहैं। १०८॥ कहू ४५

नक्ताकी हर्षकी अधिकाई कहिवेमें अन्यपद
हू गुन हू होत हैं यथा॥ सोइ मधी किलीन कैं
सो मन न रही रसाल। उरम सकतिह करत न
ही। मलिमसि मोको लाल।१०॥ कहूं अधिक
पद गुन होत हैं अलिनिहवेंकी उक्तिमें यथा॥
तुम जांनी हरिके किए हम सब लितकें चाइ
नहि नहि जांने न जांन वे जांन न सब सुभाई
॥१०॥ वार्त्ता॥ इहां नही जांनन याही तें जांनवी
सीह्वि भयो फिर जानन कहिवो निरर्थ्यु
अफल याहानुप्रास में अर्थ [illegible] नवसंक्रमन वाच्य
ध्वनिमें विहलके अनुवाद में कथित पद ह
गुन है॥ यथा॥ सेभानुकी भानुनवजाको ज
गत धनाइ। हिम कर [illegible] ललि विप्रवल अवधूम
धुमीकलजाइ॥११॥ विनापी यारे प्यारे नें रूप
रूप न हि काइ है। जव पावे पूर्यो निसा वेंद्दवे
उत व होइ। है विरूप ललवातें अंग गुन मैं सो
हत रूप। गुन सोहमें है विनयतें विनय पसु
अंगभनूप॥१२॥ वार्त्ता॥ ऐसे ही जहां वनमनका
मकोंवहां वै उहां गुन है उहां वहां वैनलगदा

रस·
धद
92

सीनहोइ। असमर्थ अनुचितार्थ निरर्थक अवाचक कोनि सबहि समहै। याते इनके बदले कीजे रनहीं॥ यथारसदोष॥ लक्षणं व्यभिचारीभाव कोनाउं यथा॥ लाजभरे लोचन चपलता। करन मैं भोंहनि मैं गनवल खैलगयो चपनो। आवकें हितु के भौन थाहमैं भइहै भेटधी देकजनम सुफल मान्यो अपनो। आली मवह रुपमें गनभयेजानी ही। मनसुहा किछ लासु अबैज अपनो। तुहीदेह साधकालेहा इजियपरमाद मोहिना ही। वाकृपहयसांच नाही सपनो॥ वार्ता॥ इहा लाजचपलता आदि मव संचारी कहे के रसकोवाचता। यथा दोहा॥ जोबन रूप विलासमछविहि सवहीसु षदाइ। वह रस औरे है कळ मगनभए सुखिमाइ॥ ४॥ इहारसवाच्यकी नोश्रृंगारादि पदहु केरसको नावलीजिये॥ यथा॥ अबही तेमैवैमं जोवन दीठी दीये। हिलो आवि मेहिलो श्रीदह श्रृंगार कीसीव॥ ५॥ यहउ क्तिनामककीश्याइभावनाउंथा॥ सरदनि

धद

93 माधीतमयीयाविहरतअनुपनभांति। औंऔं
रानिसिरानिअतिसैंसैंरतिसरमाति।१६।
॥वार्त्ता॥ इहांरतिपद्दनतीयाहोबनकीरष
नतामैथंमनाहूति। अरुसारहथनकोइह
यही प्रमाणविभावनुकीप्रतीतिकषयथा
॥दोहा॥ केसैंहूकैजतननसोंतनमनसरवसु
लाय। तबहीहीयोसिरायजबदृसमनकी
जैलाय।१७॥वार्त्ता॥ इहांइनवरनरूपअनुभा
वनुतैंआलंबननायककिधोनायकायप्र
तीतिकषसौं यथा॥ वरणवरणघनघुमडि
कैंउमगिउठेचहुंओर। सुधिभाएसुषपाछि
लेसुनिवनबोलेमोर।१८॥वार्त्ता॥ इहांएपाछि
लेसुखवनकोसुधिआइवोवरणहूमैंसंभ
वनुहै। [illegible] अनुभावप्रकविभावनकेप्रत
कहवेमैंतोदोषनाही हेतुसुष यथाकवित
दौरिदौरिविरहभाइरसउरवाहिमिसिसौंवि
कैंसमहाविभीं[illegible]सिभगानिहै वोविमार
ठागीमगुदेषम[illegible]विनदेषेविकराइ
छातीमनिउमंगानिहै। कछुनसुहाइविनु

र.स. नीरमीनभाइसखिहमैंअनषाइनिसवास
४७ रजगनिहैं।भलीगलिमोहनीविसरिगई
९५ होहनीसुमोहनीहीछविकछुओरसीलग
तिहैं॥१९॥प्रतिकूलविभावादिकयथा॥तो
हिनाभेभूषननितैहैंसेभूषननसभूषननि
वैठोमुखसुख्योविलखानीहैं।कीजियेजुने
हजोपकीजैमोहियेजरीजैसीबसुनिली
जैमतिराधवीसधानीहैं।वहतौविहालहैम
भावतिनहालतुमवैठेहोबस्यालकछुओ
रैजियआनीहैं।पाछैलाग्योकालफिरजीवे
थिरनाही।हरिमेरेओनितुमतरनाइथि
रमा[illegible]जानीहैं।२०॥वार्त्ता॥इहांशृंगाररसमें
जीवौथिरनाहीएशांतकेवचनउद्दीपन
कहे।श्रोरसुरतिवसुरसुखकेश्रनओ
सरकविस्तार।श्रोसरमेकहियेनसुनि।
श्रगानदीजेभार।२१।पुनिश्रंगालखियेन
हीकितिकदोषणजानि।हैश्रवंधकेकाम
केयातेंकहतवषानि॥२२॥श्रथग्रकोति
दोषविपर्ययथथा।दीयअहियकहेग्रक्ष ४७

95 सिद्दिआदिप्यप्रमान।कृसमजुधिष्ठिरसंम
जिकेदेवहनरअभिमान॥२३॥इकेआदि
देआंनियेधीरउदानकधीर।मृतउवतसं
तहिजांनिधीरूपशृंगारूरौद्रपुनिशांतरस
कीवांनि।२४।आगिप्रकृतिएरसनुकीगुन
प्रकृतिपुनितीनि।उतिममधिमअधमउ
निगुननैंलीजोवीनि।२५॥अथदेवप्रकृति
सागरलंघननभगमन।सफलमयाअरू
कोह।उद्दितिमदिप्यसुभावग।जहाहोइनहि
मोह।२६।एनरमेनहिवरनिएकहियेनर
निप्रमान।अविरहासीसोकुरतिनरसुभा
वएजांनि।२७।रोकअदिप्यअदिप्यमेंउवतिमउ
चितहीआन।उतिमदेवसभोगरति।मति
वरनोंकविकोर।मातपिताकेसुरतजोक
हतलाजनहिहोइ।ओरउतिमनरनकी॥
प्रकृतिहोलानइमेंवरनिये।कछुकदेवना
निहूकीप्रकृतिउतिमनरनहूमेंवरनिये
मेचितहोही।ऐसेहीरसमधुनप्रकृति।लघि
उलदीनहोंहोइ।प्रकृतिविपर्यहोयतहां

र.स.
४८
96

कहो सवै कवि लोइ ॥ २८ ॥ है सम मोवय अं
नि गुन सम भिवेष ओहार ॥ अनुचित त
जि यैउ चित इकहि हियै बुधि वीचार ॥ २९ ॥ स
मया दि विरुद्ध यथा ॥ जाति कहं वनि कुम
म वह्वयन निमे घवसंत ॥ पावस कोकि
लकलस वहजगा अधिकरनि कंत ॥ ३० ॥ ऐ
सैं और हू नो रविरुद्ध वरनन करिये ॥ कामके
नाम यथा ॥ कवित्त ॥ जवतें निहारी प्यारी रू
प उजियारी है पै ववनि चककोवा वे हे हंस
नी हम कहे ॥ घरी छक भे छमइन वहा तें उप
मा रूपहि भांति कोम के न गा ये को धम कहें ॥
सो तुहें कि भम सो छनु तुही है ख्वा हें पछि भे
उले ऊमा नेन हकी ममकहे ॥ उबा को हरणमु
मृववा ध्यारे मे हको सो गुननोकी जति सम
नमै वमकहे ॥ ३१ ॥ इहां काम को मनायवो अं
गपना ध्यो चाहिये दोहा ॥ अनुचितते नहि और
हैं रस हीनी गाय हेत ॥ उचित प्रसिद्ध वनारा
घहल समि कोपे ना ॥ ३२ ॥ जहां विरस ना को क
हे लहा हो हिहा हो पदावा ॥ ग ॥ जहां विरुद्ध को ४८

97 तहाकैसेंसपोष।३३॥ अथासवैया॥ मोहीतें
एसमुकैसबबालबिगारकीधालनऊसमका
ऊ।रूपकीरासिरसीलीपियाकीसुकैहोहेके
पारनलागिनपऊ।इंदीपकेसुषमाऊसवे
विषरूपसवेमनभूलिनलाउ।कैसेहूहेवि
ल्सोनजिमानसवेजुसयानहेमोइयेनाउ
॥दोहा॥ परसलियरसपीतिरूपवय।इनतेभलो
नकोइ।सवेहोइसुषमानएऔषिरजीवन
होइ॥३४॥ वार्ता॥ इहांशांतरसमधुपिविरहहै
तथापिशृंगारकेंपोषतिहै।ऐसेंहीऔररसो
रउचिततारेषिलीजे॥ इतिश्रीमिश्रकुलपति
विरचितेरसरहस्यदोषनिरूपनंनामपंचमो
हृतांतः॥५॥ अथगुननिरूपनंदोहा॥ दोषरह
तहूगुनबिनासुषदाइकनहिहोइ।यातेंसव
गुनकबितकेसुनोसवेकविलोइ॥ अथगुन
दोषलक्षनं॥ जौप्रधानरसकोधरमुनिपरब
अरहेत।सोगुनकहियेअवलषियत।सुषको
परमनिकेत।तीनिभांतिसोमधुरताओज
प्रसादहीजांनि।[illegible]शृंगाररससुष

दमधरनामानि ३ ॥ अथ माधुर्यलक्षणं ॥
अवैचितजाकेसुनतभनि । आनंदयधानसु
हेमधरनारसुनुक्रम । अथमसरसरभान
ध ॥ औजलक्षणं ॥ चितहीवढावेतेलकवि । ओ
जवीररसवास वरूनरौद्रभीभत्समें । ताकौ
वरनिनिवास ५ ॥ अथप्रसादलक्षनं ॥ नव
रसमेंउज्जलसलिल । स्वच्छअगनिकेरू
प । सोप्रसादरचनावरण । इनकेकहोभन
प ६ सोरचनामाधुर्यजहां । जोगमधकरना
जानि । बिंदसहितटठडढसहित । णलरू
वरणप्रमानि ७ ॥ कवित्त ॥ आछियानलगी
ऐसेंसवनिमजाणीचितवनिपेमपागीमें
छीवलीछविपाइहैं । फूलीहैअलकउघर
ततपलकनतऐरसलेकनषसिवमुष
हाइहैं । आलसवलितगातकुंजनेंचलीवि
भातलेरसमलविडंमुवमोहतसुहाइहैं । मोह
नमनोजरतिचोजमहछकीग्वालिनमति
मकलितिनिहमतिआजुआईहैं ८ ॥ अथऔ
जकीमौजा ॥ संजोगीकीटठडढणायुतउद्धत

घनास्त्रप। वेषघोगज्ञाषवडे। पद्दवरणहृमोज
ग्रनूप।६।।यथाकवित्त।। चंडभानचंदमकोप्र
चंडचंडतेजमंडलुहे आयोखलखंडनको
पैंजहिवडाइकैं। धोसाकोंककारधाकधोक
लुधरामेंमुनिग्राण्डवंधोवाधिधिकगहप
डधाइकें। गामगणरंगमेंवंधोनकोंअ्रावनेप
ग्रजहूसभाविनिजदीवहिजगाइकैः। कौहि
कोदिव्यकपाविकुहिकेंक्पादिनिकोंलुहि
लेहालंकेहाहेगाहनहहाइकैं।७।।अथअ
साद्रूपकथनं।। ग्ररुघसुननहीपासयेपह
ग्रसादकोरूप।।कवित्त।। ग्रलकेंचहनपरच
लकेसुरलिसुषफलकेमनोजतनमनभ
रीभूरिकें। बोलेहूनबुलेमोषुलेकिविलागें
माहिपलकेंपमागिजहीनहीवहधूरिकैः।
चलिवकोंहललितिसललितपगाएकहूनदल
लितयंदगालिग्रालमहिधूरिकें। लाललाल
लोचनलजौहेंललनबोहेंनिमोजोंनिमुसका
निउपरतलहकोहूरिकैं।८।।अथवगुनअरुअ
लंकारनकोभेदकहतहैं।।दोहा।। होऽखबार

रस॰ ५७ 100

दूहनतेंविरसकवेनहिकोइ। अलंकार अरु
गुननिकोभेदकोंनविधिहोइ॥३॥ ॥वार्त्ता॥ त
हांसमाधानकरिवेकोंअलंकारकोलक्षनक
हतहैं। रसहियहांवैहोइजोहकाव्यहकैअंगनि
वास। अनुप्रासउपमादिक। अलंकारसुप्र
कास॥४॥ ॥वार्त्ता॥ अंगकोहियैसवपोर्थतथा
हिएजोरसहोइसोपोषें। अरुनहैंपोषेंउल
टाहनेरसविनहूरहिसकें। वेगुनरसवि
गुहहीनहुनरहिसकें। पोषेंहीयहभेदक्रम
हीसोंउदाहरण॥ कावेत॥ वांहनीचउववेली
कोवांसकवाकगुलावलंब्योनहिभावें। नीर
जनीरसमीरलगेगजियआननप्रीषमसोव
कीवावेः। कांकुमारविहंससखीतलके
हीयवांमनधांमसुहावें। त्याग … छ
डलिप्राणनजैनहितेलिनहीं … आवै। ५
॥वार्त्ता॥ इहांअनुप्रासअरुहेत … णवि
योगकेपोषकहें॥ यथावा॥ छुटिलैटैछविकी
पलटैतिथविजुछटासीप्रहलपवरीहैं गूंथ
निहाकसवानिवाघविलोकनिवाकवनीवे

५७

नरीहै। मोहनलालनषीचपलासीचलैचि
तनैनहिपैमयपगीहै। ताहिनलैंकछुहोमसु
हाइनवामपैजेवेकीवांनिपरीहै।१६॥वार्त्ता
इहांपहलीतुकको अनुप्रासहैकारकोयातै
शृंगारकोपोषतनाही॥वाराणसीवरणनमै
दोहा॥ नरककरकथानाठीआरलनतरलतुरंगम
डीठि। जुवजनमनरसिकपनकोंचितवनि
देतिवसीठि।१७॥वार्त्ता॥ इहांवसीठिसोरूप
कप्रमना रूपकध्वनिकोंपोषतनाही॥छ
प्पै॥ नगनिवासअट्टहासपन्नगविला
सधर। मुंडमालशशिभालज्वाललोचनत्रि
लोकहर। भसमअंगगवरीअरधंगसमसा
नरंगरस। सुभनसलिलसिरलेतनचेतचेला
केवस। वृखेसमवृखवाहनवरद। सरद
अभ्रछबिजुतन। त्रिपुरारित्रिलोचनना
पहर। जैजैजैयशंकरसरन।१८॥वार्त्ता
इहांरसभावनहूअनुप्रासभावध्वनिहीकोंपो
षतहै॥ अथगुननकीसंख्यानिरूपनतहांप्रा
चीनवीसगुनकहतहैं। तेइनतेन्यारेनकै

रस· जहांसोइकहतहैं ॥दोहा॥ तीनोंगुननहिंबी
५१ नगुनमधकरकओनअसमाइ। साधिकसुष
102 लषियेनहींवरनैकौंनसवाइ॥१९॥ कछुक
रनहीकरिगहे। कछुकहेअविवेग। कछु
कहेअपतोकोभजनतयोगुनबीसनयोग। २०
यद्यपिगुनआधीननतेंअवर्नवावरनसमा
स। वकतामरथप्रवंधवस। छलहेंहोंहि
प्रलास॥२१॥ कमहीसौंउदाहरन॥ कोहि
कोदिउंभीधककामहूनपुलेपलगजनहि
कीगरजनिभाकलीयेभांनकों। मेवीनीह
नीहवेकोंभागुममनणकोंनपाछेहव
भयोगकभ्योंहूनहोंनकों। आजलोनव
ग्रोवितवग्रोहकवलमिनग्रांनहउमगि
मगुनकोमनगांनकों। प्रथरेमधरसु
धाथरेंसुघरसुधाहूनेंसरसपांनिपरसु
सुकोंनकों॥२२॥ यहउक्तिकुंभकरणकी अ
रसेयथा॥ ग्यानधंछांनिसोछाहिवडेगहमो
हसोंतोशिविवेनसोंनातों। कांमहकोधकों
कहिमलीविधिनापरलोभहूकोंकरिहें ५१

लौ। धैसैं तैं अ मो किये जिनि वैरनि मेरी तिकै
शुधि भली कैंयां सां लौ। जोति सने हजे सो मति
नेह सों जातें पवें नहिं निमकी धातौ। २३॥ छुपै
कनक कुंचरण गमन करण वरण हजनक सप शु
त। दीपक हूलि अलि छीन कीनहि गजक
हेल सुत। अनिल अनल गगनि मंह वरवं स्त
सुरेस वर। सूरल जलमन असम श्वास वामा
विकास वकः। देव-सु हिम सूर पावस्वि
घति विहग वरण। अवरमनि द्दिनमनि
हेवमनि। जैय जैय जैय सरुज सरण। २४
॥ इति श्री मी अकुलपति विरचिते रसरह
स्य गुन निरूपन नाम षष्टमो वृत्तांतः॥ ६॥
अथ अलंकार निरूपनं॥ तहां अंग संगति अव
सर सवद। अरथ की चित्रता कहि सु पल
हि हो र। अरथ वोस रस सु निरधवकत। अलंका
र कवि मोर॥ १॥ शब्द स वरस के जा सब कवि
अरथ के जो निधो। शब्दालंकार कवि गाज उ
कति भेस तें होत हें ये। अलंकार यहजांनि
शब्द किये ते कहे हें विविध शब्द अवां

रस॰ लि ३ ॥ अथ वक्रोक्ति लछिनं ॥ कहै बात औरै
५२ कछु । अरथ कछु कै कछु और । वक्र उकति तासों
104 कहै स्लेष काकु द्वै ठौर ॥ श्लेष वक्रोक्ति यथा ॥
भूपति लोसी नर जी विलोकी है बाम न जगवा
हत कौ है । ऐलि कुवार सबै बनिता सब बैरी कौ
करत ता मन मोहै । सो तुम ही मही मैं सरसी
है भिरी न लछ है लिमै न हियै है । सो ही सब
बत है इहि बात समीर हसी न लगै उहि जो
है ४ ॥ काकु वक्रोक्ति यथा ॥ उमडि घुमडि घ
न घेरै ह्वै च है भार ग्यो रस रंग मोर सोर सनेहि
यो अकुलाइ है । यों मन ही मन के दृग हिही तें उबरै
है बात ही यो हरि ले हमो हि सकत सु भाइ है ।
रैनि अंधियारी सुनौ भान न मुह हौ गोहै गर
जि गाजि जि भारी भयउ पजाइ है ॥ ५ ॥ यह काकु
रि सब्दी हू की उक्ति परस ठुकानि लोग ॥ अथ अ
नुप्रास लछनं ॥ बरन एक से फिरि जंह अनुप्रा
स है सोइ । एक विरति अरु कहि लिकवि सो पु
नि है बिधि विलोइ ॥ ७ ॥ विरुध अनुप्रास लछिनं
वर्णन वराण एक बार जंह फिरै विरुधा लोइ ५२

105

॥याहीसोंछेकानुप्रासकहतहैं॥ मोहनीसी
मोहनी किरतिरतिसी हैं कोनमोनगहि
हीवासवेगिनिकछुकहैं। नलजसेनैन
नैनकैंमिकथोकेहछविगोरीभोरीजैसी
मालोतिमिरमेंजकहैं। वरनीननाइरूप
गर्भसिथेमकीसीपासिजाकेगुनगनीवेकों
गिराभइमुकहै। प्रकलविकलतनवेगि
इरमाइमोहिप्रानपरमाइनामोनेरीवकी
धूकहै ८ **॥अथवृत्यनुप्रासलक्षनं॥** एक
अनेकोएकोवरुजौफिरेवृत्तहसोइ। **यथा**
वेहसोभ्यानतुवाहसोंवृंमेंचलेचषचलन
वोपचवाइ। हाइहीयेकठलावधनारपक
वीपहसीमुमहाछविछाइ। तोरितिनूका
हिहिछेनावनाइकेप्यासोधरनलोनक
नाइ। गोहसैंगोहहसैमपिमोहविनोहमों
हेधिथेलालकलाइ ९ **॥वार्ता॥** अवतीन
वृत्तिअनुप्रासहीमेहोतहैं **तिन्हेंकहतहैं** उ
पनागरिकोमधुरगुनमंजकवर्गनहोइ

रस॰
५२
106

श्रोजप्रकासकेंवरणतैंध्यरूपाकहियेसोइ
१०। वरणप्रकासप्रसादकोकहैकोमलाहो
इ॥ तीनिहूतिगुनभेदहैंतेकहतवडेकविलोइ
११॥ वैदर्भीगौडीकहतहैंउपिलिपांचालीजांनि॥
इनहीकोंकेअनकवीवरनतनरीतिवषांनि।
१२॥ अथलाटानुप्रासलक्षनं॥ फिरैअर्थयुत
पदजहांअरथभेदनहिंकोइ। सोलाटाअ
नुप्रासपुनिभावाहेंलैंहोइ॥ एकसवद्दक
सवदकोंएककृभिन्नसमास। वरनैवचन
समासहूंपांचभांतिसुप्रकास॥१४॥ पांचोभां
तिपथा॥ वोलनमधरसुहोनसुनसमधर
गहनीकोंजांनिनीकोंमनुमोरहहीसोंभषिये
कहियेतोउभियेनकहियेतोउभेजुमधुकी
भारअभलाईउरवपियेजैसेंसीतभांनमां
नअभाअभाकोंसौहीनातिबानिनसांप
लपहलीपकसियें। नीचेनेहतिसपंदहनेह
कोकेपापलसोंमगमेसोंतीसबकोंपंचाअ
नुसपिये॥१५॥ अथजमकलक्षनं॥ अरथहे ५३

रज्जोभिन्निजहसवरुएकउनहासि। किसेज
मकतासौंकहतभेरुघनेनविवासि ॥ ॥ बर
णजमकथधवयणपुन। अवधहृअरथम्र
कार। कहललरूपलभाणसवैसोस्यंथवि
स्तार ॥ १७ ॥ रसपोषककविस्तानयह। ओज
कोंकहेंवषानि। कछुकलस (केहियोगो
सोलीजोमांनि। १८ ॥ यथा ॥ संमनिसाहे
न आरहेंबालमनेसकुचेगहिपारकहो
मे। मोतहिलतिनकीकगिधातविथोगथवा
हमेंजालवहोमें। कैमेंकेधीरहेसजनीरज
नीपतिरा कसमगाहेगहोमें। १९ ॥ यथवा ॥ नै
नहियेंमनमोहनजूरतिवेनसमांनवनीव
निताकें। लावेननेगितोरीलकहा पकुलात
हियोविनुरेषतजाकें। नैनहियेंमनमोहन
जूरतिवेनसमानवनीवनिताकें। घोसुक
धीमधुरोसुषहेहोमुमोसकओनपीयामध
वाकें। २० ॥ यथा ॥ जाकीविधिवामवहह
विधंमाधरेंधनसोंनाहपाणें। जाबुजहेवि

रस॰ वेकोधरिध्यांनरहेदिनजांमिनिजोगीज्योंमा
५४ गै।तानकैवेरपरैलमआधनसूनमपाछि
108 लोदृसनआगें।आयजकीविधिवांमकहेहरि
धामधरैथमयोंजहीपावें।२१॥वथा॥कम
केयांमचलेवसुदेवतहांअधियारीमेंगोकु
लेगेहैं।भादोंउजासवद्योमधवांवरसैंत
मकैपरवाहनकोहैं।भादौंउजासवद्योमध
वांवरसैंतमकैपरवाहनकोहैं।सोकअका
सतेंलोकप्रकासनगोदुदृधारलयेप्रमु
मेहैं।२२॥दोहा॥कनोरविनवलअलीएहे
लालनहोर।कहलयेजानतइकैअलिए
लालनहोर।२३।कांमकरेजेमेंमोहनमूलव
तैमनमेंनहिंआनतहो।कांमकरेजेमेंमोह
नमूलवतैमनमेंनहिंआनतहो।वलिहारी
तिहारीलखैवतियांवतियांजातिकीरतिजा
नतहो।वलिहारीतिहारीलखैवतियांपाति
यांगतिकीरतिजांनतहो।२४।वमुधागाकि
योवसुधामेरस्योरसिंगामेंसुधामेंभगांमुके

जोंम्यो। भोंनमिलैंजनमकेउपमाधनकीनेजि
तातेहम्योसुषभ्याम्यो। वसुधांगकीघावसु
धामेरह्योरमिरांमेसुधामेअंगामुकेजोंम्यो
भोनमिलेजनमकेउपमाधनकीनेजितातेह
म्योसुषभ्याम्यो।२५॥भागाहृविययथा॥संगर
मैंसंगरमैंसरलाकैसरलाकैतेनतमनस्त
दीरवीररसके। अभिमानसंकरहेहियेमाह
संकरहेसंकरसुरूपतेनिसंकेरवसके। गा
मनिकोसुषरहैवामनिकोसुषरहेवामनसु
षरहैबलामनिकेरसके। लीनीबिजेलखन
समाबिजेलखननेहेःप्रेमसबिजेलखननेहाम
केसुषसके।२६॥अथश्लेषलक्षनं॥कहेजि
अरथअनेककोरहेयेककहिसरू। सवश्लेहसु
सलेषहै। … भांतिसुभनूप।२७। वरणाव
नभरुलिंग…निविभक्तिय…कोंलिभा
षाप्रकृत्यसाभ्यप्रकृतिवरणोभा…हिं…वि
२८॥तहांवरणश्लेषभाषामेंदुर्लभहैं।।वचन
लिंगविभक्तिएकुहैउदाहरणयथा॥कांमगा
तिरैथेंरूपवानातिविसेषैदिनरैतुमनले

रस·
५५
110

पैंसो वनाइ जरी साजके। रोके मनु गोन रहें लो
कालो कभों वन रे पै हो लै हरि हियहो लगे हगा
डीला जके। ओर लै जु गति स्वरही पै अभिरा
म लागें देखे उ घभागें ओर सुकृत समाज के
सो गजु तसंग मेहु प्राण प्रियासंग मेंहें ला
गेहें सु रंग सुपली नरा मराज के २९॥ इति स
विहिपग्रभिराम लोगो गहउदाहरणोहैं॥ पद्ये
बयथा॥ फूल निसो टलि संगालि येंअभिरा
तु कहे तिनके उर मैं की। कुंजर है अलि मत्तज
हाजग थानर जाइके आगे विनेकी। सो रंग्र
ने कवनाइर चे द्विजगावत हैं गहि भांति उदे
की। गंम महीपति लीजिये अब घह लागो वसं
त सालविजै की॥ ३०॥ संस्कृत प्रकृत भाषाश्ले
षयथा॥ कोमनि सुषदायक रहो। मधुरध
गरजनी स। वरिपावनरुचि मैंनका। कार
विनयजगदीस ३१॥ प्रतिश्लेषयथा॥ मोहें
वामसी सतलाको रूप भै सो प्राणपति लोचन
मिलै हैं पियासगो हैं सरिके वसैं गिरजा के हि
ये जुनयलन मधुवान मोहि हालहु वाह ५५

111 गुकोश्रषिकें। रहेनैनहेषैशोहनेहकीउमगाभ
रयोकरुकननकैंमाहवद्युतेजगतिकमिकें। प
रसकीधातकनपालकनछोडैमेडमालिलि
केनन्नप्रवाहसुरसमिकें। ३१ ॥ अथकुलिश्लेषय
था॥ साकगाहैगुनकोअनुयोगकैवरवीमइ
हूरसभीनैं। हैसिरपाघनराजीकरैंअनिवा
जीवनायधनायकेजीनैं। पावैनछैरस्तेप
रवारनलागैकिंसगहीसवछीनैं। रामवं
नसिंहवलीकविराजनमउहूनहंनहीसाव
सकीनैं ३२ ॥ अथचित्रलक्षनं॥ लिषवेहीको
वतुरहीउपजैमेस्प्यनेक। जहांसुचित्रकवि
तहै। वक्रविधिवंधविवेक ३३ ॥ अथषड्गवंध
यथा॥ रूपहाथीसबजगतकों। देतरामनम
नेहै। हनीयलहीयाचकवेरकों। देषसुवरन
मेह। ३४। हरिबिनहैकरवारतव। धकपक
सनमेह। हैविजयश्रीसिंहइहनीकीरति
भूहमीतह। ३५ ॥ येहेहेदोहाकविकह्यौ। अरुए
कहूकविदोहाहोतहै॥ यथा॥ रूपहाथीमा
जिमवे। वकमलमुजगर.गनेहहरविनह

रस· ५६ 112

तहंथियारतव।हंकहंहवतहंठिएहं।२६॥गोमू
त्रकाबंधनयथा॥भौंनभौंनमं रंकैंभवते।मन
गुनहरसबहेत।धांनधांनघरमैंभवतुधम
धनवरसभईत।२७॥यहदोहाछविसंभातिसो
चतुहै।सतुबंधनयथा।कौंहैंशमाराजतिया
मैंयसैंमनलपतिधरतिकमलाछिठानाधु
मानहैसोहैं।स्यामामोहनितामैंजेमैंछुवि
भवति।प्रथिकविमलाजुक्रांस्मभानहैं।औ
हेकामाछिथिसुधातैतैसेवसकर्तिभंतिगु
तिकलकवीलोमुजांनहै।मोहेयरमासुरह
रचांतैंकैसेंनममरतिसरस्यतिकंनाधीग
यांनजांनहैं।२८॥यामैंतेएकसौसताइसठें
हनिकसतहैं।सारथका॥१००॥निरथका॥२७॥
रंगवर्लिचित्रयथा॥लालंलरेलालवहंस्यौ॥
हियमांतेरीअेहि।स्यामप्रांण.स्यामाधले।अव
लगुगाथेनीठि।२९॥ग्रयथार्थकारचुन
रुकवादाभासलहस्ं॥भामैंयरपुनरुकतसौं
पैंपुनरुकतनहोइ।सोपुनरुकवदाभासहैसब
दअर्थतेंसार।३०॥कवित्त॥पोथिपरवाहधो ५६

113 मधाजीकेकरैयाहीजेकीजैकविथालिराजी
कविमनभाइथै।इथतहीहैतगजवालल
गतिहांनमहकीउमगहैवनरुविसराइथैं
वलिनसकलपुरुहृतमघवाकेग्रैसोक
मलाविलासतेअधोमछाविछाइहैं।कांम
मैनहूतिभैसीजैसीनृपरामसंधभविराधी
जगतभलरसरसाइथैं॥४१॥दोहा॥जमक
चित्रश्लेषमैंरसकोनाहिविलास।यातें
रसकेसलपहीवरनैंभरथकास॥४२॥इति
श्रीमिश्रकुलपतिविरचितेरसरहस्यशब्दा
लंकारनिरूपनंनामसप्तमोवृत्तांतः॥७॥अथ
सरवसमतेप्राप्तअर्थलंकारकहियतुहै।दो
हा॥उपमानरुउपमेयहैंअलंकारकेथांन॥
तातेंइनकौंप्रथमहीकहियतुरूपवखांनि
१॥उपमानोपमेयलक्षनं॥होइवर्नसमकी
ये।जाकैसोउपमान।ताकोवरनतुकीजिये।
सोउपमेयवखांनि॥उपमालक्षनं॥सबधर्म
रणसमताकहैं।हैउपमाकीसहिठौर।नहिकल

रस॰ पितउपमानजहसोउपमासीरमोय।३।।अ
५२ थभेद।।सवहमुनतहीपाइयैसमथसाश्रोती
114 सोय।प्रथअविचारैभाषथीउपमाहैविधि
होइ।४।समतापरउपमेयपुनि।धरनथी
रउपमानु।आसैाजहसोपूरणा।लोपैलु
पताजानु।५।।श्रीलीपूरणा।।यथाछुप्पै।।मि
लितधारसथअधिकभारपानियअपारस
ह।सुधसुवंउजनिलक्षहंहपावकथमंह।
नहः।गिरिसमानसेवायुमानकलभमथ
हानहिय।थमरमहकरमसुछहबिबबेरि
वहकिय।षुडुलथतापलहथीउवनइकहि
बहूरिहभगत।नपरामसंषधकरधारकर
सागरजिमिजा।९जग्रुत।६।।वार्ता।।इमा
जमकहियैतोयहग्रथीहोइ।।तथाहि।।
जिमिजैसेमानोकसौभाषाश्रोतीजोनुस
मसमानउपमानुलाधोरग्रारथीश्रानु
श्रौतोजेसमताकोह।प्रगटनिश्रोतीहेजे
समताहैभगणसोंनैआरथीनिकेत।७।अ ५२

115 लुप्ता ॥ उपमानरु उपमेय पुनि । वाचक धरम
बखांन । एक होय पुनि तीनि बिन लोपै लुप्ता जा
न ॥ ९ ॥ उदाहरण साधारण धरम लुप्ता यथा सवै
या ॥ अंजन धरें मन नहीं मनमैं कवि सों मृदु मु
सिकौं भ्रम बरषौ । आकुल है चकचौधन कौ
उर कौ न रहे सुधि कौन मुलै बौ । मोहन के बि
न देषै तिहारे ऊनें ऊरगंन नैन पैम पवेषौ । तो
पर बारत वारिद हियो बलि कौंन पियासनि
सो मुष देषौ ॥ १० ॥ वाचक लुप्ता यथा ॥ दीनि मैं
न पगें मिलें कुली सकुचि नि जांनि प्रेम पग ।
नीतिनं परसी जल नैपाहनों । जामैं तैलगा घो
चित ताके उर नाहि हित नैनंन के चित सो वि
रह आगि हाहनों । वेनेदु [illegible] बिवा [illegible] यातें प
रे उधहे सगर वृके भोर पवें के संकेति वहनों
मे सो कछु कीजे हा घो आनंद सों भी जै निज
मन गाहिली जै वाक हीजै न उगाहनों ॥ ११ ॥ उप
मा लुप्ता यथा ॥ करन कलस वरवाणनक
सगुली गुणयो स वों भाकभा रती के नरको
भाग भयो भाल जै गयं घनकोनाल आहिहै

रस॰ पतहीचालपरैद्वगिरिहकेठकौ। अलघलचल
५९ अवनीअकासमिधिआसपासघटघटरहे
116 हेगुनमगुभटकौ। रांनसनमानकिरवान
कवितवखांनदूजोरामस्यंघसोनधारिहेज
गभटकौ॥१२॥धर्मवाचिकलुप्तायथा॥सहज
सुभायहीछितिमौननरनाहस्याहपरसमतिपाइ
प्रसिद्धहोतसदहीनहैं। गाहेंमयघायमेंचरहेन
सभाजेगपागावारपारसैभ्रतापगुजदीन
हैं। घेलनविकाप्रचाटलनजुगानरंघघह
यभुरताममधिहालरजलीनहैं। देखेतपरेव
लैभुरवसिधकोनवचैहिगाजहरावैसपुरु
षिभयभीरहैं॥१३॥धर्मोपमेयलुप्तायथा॥
वैरिमनुविहंडनकौनानिरखेरंडनकोगु
नीगनमंडनकौघेनकाहूओरकी। वरनाक
लसहैवधामसनिसंसाकपाटिक्षमाचलकीर
तिजगनामिलमोरकी। मिंघजयसिंघकेन
दयालभिसजानेकेहांनोंरवांनेनकविजे
तेछोरछोरकी। किमानसेरमाजुरतजेगाजुय
तसिरहकतउरगंरवारहैघेहारकी॥१४॥धर्मो ५९

117

पमानलुप्तायथा॥ प्रेमसरसभीजेनननमनही
जैमुषलीजैभोरभाइराहैकहालाहकुलाह
नेहै। पीरन्यूफरकिपरीपीतिरीतिमसिपीर
हीमहीमवैहमैफगिकौंहहनतहै। तेरनवि
यायोयहसोवहतिहांवोपियवैसनिकेपत
लिमैनेहहिवहनतहै। जहूंसोलोकहवोलोज
हांजामैनहांयेभोगाधिकासमानैधनपुह
मीलहनतहै ॥४॥ तिलोपेयथा॥ तेरीतुनेवा
नीमोनगहनभवांनीहेषनेनकोपानीरति
पानीमाधिनाविषं। भौहनुविलासरहहास
रंगकेमुवासरूपकेमुवासिहजासमुषनि
कोहैवसाविषै। पानननकेपांनपवलीनैन
निहांनपानीनैकुमुमकानिपेसपानैहैनभा
विषै। सोभासुषहेलीप्रधामिनागैलीक
हियतहैविभूगानेनीमीतलायउवाविषै
॥५॥ अथमालोपमालक्षनं॥ कहैएकउप
मेयको। वहूतभांतिउपमान। मालोपमा
लोपमा। धरनभेदहैमांन॥७॥ सोवनेउपदू
मंयतेभूपतलाऊविनारगणाघरहामरूपा

रस.
५९
118

नेहघटेजितिनोलिहियासखिकीछबिदेषत
हीरविथामभैंा। लोभनतेधर्मवसस्थनीतिमें
जैसेमनेहविरसविरामभयौ। नेकुवियोग
हीमेलनुप्यारीकेहीतलैमानहेसांझकों
धांमकोंज्यो॥१८॥ इहांछीनकेमातुहेयसमा
धारणधर्मएकहीकह्यो॥ यथा॥ नवलकीमो
हनमनसीतलकरतुनैनवांसुरीकीधनिम
मथितकौंहरतिहे। कमलनैनौपूरनमनोरथ
निनिकेसितुपावतुज्यौंवसुधावैसमीलीक
रतहे। हांमनेंजोस्यामघनतननेसमनिसु
धामरतिज्यौंनपसिवमाधुरीधरतिहे। कृपा
सिंधुवाजकीसीवेलीअभिरामराधाहेबोल
सांमदेषिवेकीऔरभरतिहे॥१९॥ इहांप्रापेस्प
रसाधारणधर्मकेहि॥ दोहा॥ प्राणेभाणकी
लिषेउपमेपउपमान। वैसेहीरसबोपमा
नउक्तिविधिनेमान॥२०॥ यथा॥ मोहनकेअभि
लाषसीपलसेरंपाकेसमकपबपोहै
रूपसमानलुभाईविराजेलुभाईमेमोंजोमे
सुजानपरयोहे। जैसीसुजानतातेसीविवापि

119

केवांऊकुवारमोंनेहलन्योहे।तेहसमानलहे
सुषमासमुषावेकोलीनलधन्यगन्योहे।२१
॥अथएकदेसवर्तिलउपमालक्षनं॥एकदे
सवर्तिजिनहांगमुलउपमानु।कछुक
पाइयेसवहूतें।कछुकभरथतेंजानु।२२॥य
था॥भरेवृतभपमेयंकगापवतेंसिके
याहसमानवहे।कविपुंजतिकेगिनावलि
पेभिभ्यामरयामलगेदयंहे।दिषसेहलि
यालखेअधिभागहेकावरनभाजतेंहे।क
विलासलकीरतिवंदकेऔजगकारणंगमन
विरकेंहे।२३॥वार्त्ता॥इहांगजगोसमुझसोउ
पमाभुरथसेपारस्यलुहे।अंगुनकीउपमा
गावहूतेंपरथतिहेमातेएकदेसमेंकिरोधक
विकेंरहति है।ातेएकदेसविवर्तिविकलहावे
॥अथअनन्वयलक्षनं॥नहिंउपमेयसमलाजागात
जाकोनवउपमाज।उपमेयकोजेजहा।त
हांअनन्वनांउ।२४॥यथा॥कमलसमप्रभ
केप्रकासविलासकलासमहेतिमरयें।का
मकलासतिलाजभेरमकुवेउसिकेंजवमोह

रस.
६९
120

गहे। ज्यारी पियामिरमोरति यानिरखे हरिसौ
हीनहीजियेनैरे। सीतलहोतहीयोजिनसे।
उपमोचललोचनलेरमैलैरे। २५ ॥ अथ उप
मेयोपमालक्षनं ॥ उपमान्वेउपमेयकौउप
मेयोउपमानु। जहांसुउपमेयोपमावरनत
सकलसुजानु। २६ ॥ यथा ॥ उजानिसमोजनुकौ
मुखहिलललीनकरे। देखेजगलोचनकौआन
दकौकंदहै। जावककौबकौरकौसुरतहैआसक
विकुमहविकासनकौकमलतापनसंदहै। औरव
कौमनकौथहैसुधाहीकौधासुमिनविरहीअ
मितकौवरावेउवंदहै। कमकलसमहारा
जगाजागमसिघनकौवंदसोसुजसकीधौ
सुजससोचंदहै। २७ ॥ अथ प्रतिवस्तुपमा
लक्षनं ॥ समतासवकपदजाहीरहेंकैहंजां
ति। सोहैप्रतिवस्तुपमापरसमहकीकांति
२८ ॥ यथा ॥ समतांहैसोलोजोभैरत्नतसमा
नगुनसाहिवभयोजोताकोनिजातिहीसोह
मी। [illegible] नपावकतिकैकहतहोजुवसैवेसवे
लतिरहीहीसंगलीनेकरहेहनी। जिनप ६०

इयायोपदसांनीकोकहलतासौंधारसुताव
हनिलगेनमुहसोहलीभसथीकहिसकैकै
मैंतुमसौंकुर्यानिगाथेअवकेविराजीमनमो
हनकीमोहनी ॥ ९६ ॥ वार्ता ॥ रहमारथ्यकविरा
जीघइहएकैसाधारणधर्मइएकहीभांतिक
लिकहौ ॥ अथप्रतीपलक्षनं ॥ जहंलघुता
उपमानकीसोप्रतीपकैभांति ॥ प्रथमनिराद
रकीजियेदुतियकीजेउपमेउ ॥ अथप्रथमप्रती
वैलोचनविलासमपसोचनथलीनुकेहैं
ध्यानननञ्जनासवैनसुधावरसायहै ॥ तोरोन
नपरागपूरणमनोरथकसलहैयेंकुवनकी
सोभाइवभौंनभलेपाएहैं ॥ ऐसीरूपगनि
राधारविकेसुफलभयो ॥ जोरुथमकीनेवा
धिहीविधाताकहाएहैं ॥ येकहीमेहोलसव
कोमएकमूलसमिकचनसुमेरविधिकाहे
कोंबनाएहैं ॥ ९७ ॥ वार्ता ॥ दुतियप्रतीपभांति
कहउपमानताकोनिषेदकीजेकहउप
मानुहोरपैउपमेयकोनिरादरहोइकहू
सर्वथाउपमानसोहोइ ॥ निराहकोंकहौ

सोंउ सहहत। घहरुपगसि भांतिभांतिगुघ
कोंतिवासवाहतितिबिलासगातिहुयेहरिम
नकी। गुनकीनिधानकलकेंछकेयेणंनमा
कोंकरतवानमतिप्रभुकेकबिजनकी। म
हनगुनससाहितधैकंछमानकविजगत
बिदितिहेमुहासतसाधनकी। यौं रतिस
मतालहसभानीनाधिकाकोगुघसोनभेट
भोतेभावतीग्रनमनकी। २२॥ यथा॥ मोलि
नइतिकोघभिंगाधोनभेसोहंदु हनमोन
गमोंते। न्ननकी छविमोंनिहोनलही
समतासफिप्रणतोते। गुनकेवसेोनग
मोवलि कोहतोनेसमनकहभावलीआ
ने। कौनगुननकेसाथनकोकबिलांमके
वाननमेंसोवमोंने। २३॥ दोहा॥ वरनुमीन
लताकरलगासवकोनहिषिन। सोसमसं
ज्ञनवदनहे धोपोयनहिं न। २४॥ अथ
उपोमालक्षनं॥ संभयमैयौंमांगुपनिति
हिविधिकोउपमानु। अधिकहोउपमान
मैंतोउपमेहावानु २५॥ सो है भीनिहिलक ६१

लभेदकरिहेतग्रेक्षायथा॥ द्विसपूरीप्रभाकुरि
कैहसरूपगुनकोकनुकेथलितिमोहलहै।रंगी
गाबीरसासंगकुंकुमकेथलीगुंजनतेजसंपु
जगहै।निसिलेकेकूपंकजकीपतितिनिकैां
बाकेहीवेअनुरागगहै।मनुयाहीतेसरयथा
तसमैंनि[illegible]आवतअरुन[illegible]गहै।२६॥फानो
[illegible]क्षायथा॥ नलचातलग्मातलनोपैहसिना
नहि[illegible]फलमालचलेवननैं।थलमालसेगा
नहिभानहि[illegible]छुलकीसीपैवलकेतननैं
विथुरी[illegible]लकैछविगेफलनैं[illegible]नोललवां
ससिकीकाले[illegible]ननैं।मुरि[illegible]कैरागुनिहेवि
मिलो[illegible]मिलोन[illegible]लेकिसहूमनतें।२७॥
॥अथसंदेहललहनं॥ सोसंदेहसमोकहत
हैभिवि[illegible]लिसोस।जातेंनेहलच्योपरे।सो
वहहोसनहे।२८॥भेदकनीउक्तियथा॥ रु
किधौंमुख[illegible]धसापगुभ[illegible]किधौंमुलहै
गिरवागहि।मेगुकीबाकेनलहुवेकिधौ
धनजोवनमानतेहनहि।वहकिधौंमृ[illegible]केहा
गयोगितरागजकीताउरसीतललतानोहि।२९

रस॰
६६
124

मनसिंहकीहैषिसभामहिधोकलभूपलहैनम
धानहि ।३९॥ भेदकवितयथा ॥ भोनमुबंधकि
धैजगजातनकैयुगग्रेलनधा हथालीने । मा
नकिधैपिलेषग्रीपछाहकिधैग्रानधानल
ऊंजग्रवीने । संगलधरमैलधिंमनसिंहरू
पकेहैपरबोभयभीने । मानुनचीमनिहैलह
नभैसीपमावलकालसरूपहिकीने ।४०॥
॥अथरूपकलक्षन॥ उपमानरुउपमेयको
भेदपरैनहिंजाने । समता [illegible] होइरूपरूप
कताहिबषांनि ।४१॥ रूपकभेदकथा ॥ [illegible]म
हितअरुअदभुतविपरंपरबिविधभांति । एक
हैसबकीवरनिमालारूपककीकांति ।४२॥ स
मस्तवस्तुविषयरूपलक्षनं ॥ अंगमुख्यरू
पकजहांपरैसबहरलैजान । सोसमस्तरूप
ककहतसंगताहिबषानि ।४३॥ यथाछ
पै॥ [illegible]जनुवलयवनसुभगमोहतमधं
कमुष । [illegible] नपवबुधिवथसभा
र हासुष । [illegible] नसहजधामकवि
कोकवितरस । [illegible]मनुवरहासकोपसनि ६६

125 कियउग्रबुधवस । करजो मिकेगुणगोरह
नितसेवकसमवपुधरहिय । सगमयगा
यजगतनृपराम रविअगस्तवग्रहेमक
रिपु ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कहिदै भयकम[illegible]हि
अंगनिमैंनहिंहोइ । ताहिमुखरूपकेकुल
सेआननकविलो । ५५ ॥ यथा ॥ मृगोनिगु
गेहकृपीसबहीमैंनेहयोंपावेसहै
सोपैनकोपरसै । कछुनमुहारहीजेवोग
डीहर । वित[illegible]हीकेओरमिनतेब्योसर
[illegible]ह । नीरसमैंनेनकोनधोहरछैबेनभा
मैनिरखो[illegible]वचनेभोजननछहरसहे ।
प्राननकेआगेवेगिहींडि[illegible]रसलतेवहैये
वितुमोमैं[illegible]छिनविधिकोयरसोहै । ५६ ॥ पर
मितिनवकलक्षनं ॥ [illegible]चकरपककमलनह
परंपरानिहसोर । [illegible]प्रगुहछो हकरि । सो
पुनिहैविधिहैर । ५७ ॥ श्रृंखलपरंपरितमाल
यथा ॥ [illegible]मनवंसमान[illegible]मै[illegible]किमा
करहैवनहीअलीको[illegible]केअंगुरहेवि
स्रगाकेबामनकेकोमधामेमनिमाकेसुन

समअनंतपृथ्वीकेफंधरहै। संगरमेहरिहेय
चनमेंभिनंधआकेसाहिवसमीपमाकेंभीम
नखरहे। कूरमकलसमनहारानागामस्यक्षा
गुसुमनुसुषडमहिमाफ्कामनरूहै। ४८॥
सुद्धपरंपरलितिथा॥ हरिहउरहमरुवर्हंन
कोंगंफुमसेहमलिकुलतिमरविनासनकौ
भांनहे। वलगिरिसाहनकोंभारेकीनहीको
भूरुनीकेगरवरोगहंननिहानहे। कीर
तिसुरसरीकोजनकसुमनरपैकेजमोहके
मोहकोंविहारनकोंहरिपगुधानहे। कूर
मकलसेसेयसंपघनकेनरूपहारानाना
मस्यपककरानतकपानिहे। ४९॥ एके
सविवर्तिकलस्हनं॥ कृष्णककृष्णकोहेसव
होकककभरणपरवानि। एकेहसवती
वकविरूपकताहिववानि। ५०॥ वजलवस
नसेअंराजेहरिराधिकाकेसेसोहेंविमल
तिलिसरहसुहाहहे। फूलिरहीवेलीग्रल
वेलीसीकिसलिग्रलिफूलनकीसोजभाति
भांतिकीवनाइहे। हेविवनीनीकीसीमंड

127

लमहलमाकमवहसिरीजिहासलुलउरलाःइ
है। छोडिकैअधरमोनिधरिरहीबांसुरीओ
मोरखंडिकाउहितहैबिविलबारहै।४१। वार्ता
इहागासमेउलमहलइहरूपकसबहै।पा
इयतुहैहारवलतान्नखलीमोरखंडकागकै
नाइकालंअर्थनैपाइयतुहै।ज्यौमालाउप
माकहीतैंहीरूपकसोलुपथा।तेजकरिभां
तुहैमधरलाविथुपसवजागविलमोहनकौ
देऊयथैकोमुहै। नरतिमघकहेमहीकोमुर
गरगुलिरसवधमारवेकोमाचोसीलधामहै
पावनकरनसनसरीकोयवाहलंथ्योमोजं
नरलाइवेकोनगिरकोवामुहै।थांलहकोक
हौयसाहिवकोनरथाहिसवैनृपहहरयह
गमसंयधरामुहै।४२। ॥परिनामअलंकारलक्ष
ण॥ लहिमभरउपमेघैहीकौकौमउपमा
न।प्रकृतिरूपमैकपरिलमेसोपरिनामैजा
न।४३। ॥प्रकृतिकहिइेउपमेयउपमानसमा
हेवेमनलाकेसेरीसूप्रतिकानूरहैबैहिलमि
रिहैकहहैजवाबसां। महरिकालालिवक

र.म.
६४
128

कीरहैमि हरषानयानकम्यौंजीवनाहे स्वाधीनप
राभावमें । वषतैंसास्वानायहञ्जवीकाधन
नानिसंधोलिवैयांनहीजेसेरकोजियेसवा
वसों । रेरक्षीनलावजानि होतहैकवावबाल
हयातिकाभाववोतोमूषमहनावसें । ४४ ।
॥वार्त्ता॥ इहाउपमेयप्रधान्यहैरूपकमेउ
पमानप्रधान्यहै । यहभेउ ॥ अथउत्प्रेक्षाल
क्षनं ॥ वस्तुरूपकहैजहवस्तुहलहोभांतिउपमा
मांन । ताकेवहहनकहिकहेसोउत्प्रेक्षावखा
नि ॥४५॥ यथासंख्म ॥ उपमानभांनप्रवंदलवे
रूपसेवकतेसमिप्रणाजांनैं । प्रथतिरति
वंतमनोजकहेवनितावसहोतिलिपीजी
मुजांनैं । केहेकविरामसुरसमेहलिगाम
लिकेमहपतिजांनै । यावननेविकेतामन
सिहकोभांतिनभांतिनरूपववखानें ॥ ४६ ॥ द्वि
तीयलक्षनं ॥ समपकोप्रोमगुविधपहहैवस्त
भीमहैलुवषमामेहिगाजे । वानविलासकै
जांनैंविनेवफलैजिमिधारितुकीगतिमाभै
प्रागमजांनिवैकौमहहैवलधेमवकेमन ६४

129 भांवतेमाजे।पोषकलाजगकीहरिसेंलवि
करमरांमनरिहरविराजे।५७॥अथभ्रांति
मांनलक्षनं।वेस्तांनभरमीभ्रमैहवक
पसमान।जलंगसिकउपमेयकेसोहभ्रां
तिप्रमांन।५८॥यथा॥दुतिजोहमुभारलषे
मनुपाहलिकानिहिहेमेड्रुनेरहकै।नपरा
भीगुलोहमेधावलसेचितमोहिभरमुती
नाहितिके।उडपैजनहाकीरहितंजथनेक
मुगंगथडोहहिवाहिवकै।सगरामकुपां
लीकाहेहिदेहिकेंउडोनमजलहमलीप
थकै।५९॥अथसमयतालंकारकथनं॥न
हहैपनउपमानकोंसुधिआवेउपमेंत।जा
हीसोंसुमिरणकहतजेकविमतमेत।६०
॥यथा॥नाजसमाजवनेचितमोहलनाजुनि
मंडलकामिनिकै।वनीएकतेएकअनूपर
ह्योरसुजोहहनजाककोनामिनिकै।भावक
भ्रामरासनुबिकैसुधिभूलि।यसुधिनांमि
निकै।लपत्रनीहोयविलआवनेधिका
देयनलहीधनसामिनिकै।६१॥अथअपन्हु

रस. ६५

130

तिलक्षनं॥ कविनिषेदउपमेयको। जहयो
पेउपमान॥ वक्रविधिवाचकनेइतें। ताहि
अपक्रुतिजानि ६२ ॥यथा॥ इकबोलनया
हनलोहसोमानवहीइतुहेघनसोकवहे
नमनीरनहिनिरखौकिमनीकेवहीकव
नेहसंयोगनतहे। भाविवावरीलखहकाव
तिमोहिणपावककेघनकोनकहे। हिय
याविरहानलिमेंपवनसोप्रभुवानिनसौ
सोईधूमपरहे। ६३ ॥श्लेषलक्षनं॥ अरथुअ
नेकअरथुहेजहांसुअरथसलेस। सब
हएकहीअरथकोहेफिरलक्रभेस ६४ ॥य
था॥ नवेवेउरिउजानसाणरहूपलाइसेग
लगाजातहे। वरतेजकेपुंजलखेबुधिग्रावेजि
केहियकेतमभाजातहे। [illegible]केमलभगवा
नकूलमसमुषमानतिमाजातहे। लषिवि
सीलकेधांमसेंपुरनकोंमतिहूपुरगोमविदि
आतहे ६५ ॥इहांसकप्रकरनकोश्लेषा॥ अ
प्रसमासोक्तिलक्षनं॥ गुनस्रोषपरद्अर
थदेवहेप्रस्तुतइकभाव। सुसमासोकति

६५

131 जोंनिधेजसहसथांनघूसताव। ९९ ॥अथग्राछुद
विथुनिलनागवा॥ कमानहथमद्रिकेसुदं
गाभूमिरजिकेगाथंइसहुगुजिकेहलेउवन
हारकें। चमालमालहूलैहलैहभइतिफूल
हथेरवीसमूलहें। सुकूपलसघोइकेअनी
नलौनछिजिये। लगाइकेनलिजिये। उद्राह
लिखिभिजिये। कोसुखिलवाइके। कूचाति
सोढिकाइकें। [illegible]धरतनलाइके। मविदांम
घाइकें। गहीअनमचभाइवें। ९७ ॥अथचनिहर्दी
नलक्षनं। जाहरागवहवैनतउपमाबेधि
श्रांम। सोभिरइरानाहेएक। लिजिरहेनक
लिकेहसोबहइजीनांम ॥अथमथघा॥ ग्रा
पुनपावमकेसुघलेकुच्छिभंगदसेघरमालि
भलीकी। कंवसुसेवलमावतीहेसुधवंहत्र
कामकेसुजगलीकी। निसकपधिघांवहूसं
मकहामहालविहेसुदभांनललीकी॥
वाहलहाइकियेघइकौधिलमाकसोफू
लहूकौलकलीकी। ९८ ॥वुतियघरथा॥ अप्र
पनेपरवानचलेजेमहाजनकाहूलेतवंव

रस० ह्लन इं। सबके मन भावहि आइस सों गहके
६६ न कहु भनि मोद भरैं। लघु ने महे सावी लहै
132 पहकु पैतें तेबेग रकंति पवरपरैं। निमि जहे
वैं रतिभोर ते भोरही भामनि सीम लैं क
लमरैं। ४९। अथ प्रकृतश्रमे स्मालक्षन
याही तें भोकि कहत है। जहां गिरिवि
छोर कैं कें श्रीभोरकी बात। वरनत पावक श्र
ममतें सो अभ्यो कतधात॥ ५०॥ सोरथ कहत
है समम कारय हेतु पुनि। वरनि सभा नवि
ग्रष। छोर औरकै समसे मैं कहे पाविधिवि
लेष। ५१। तमानअ समध के बसंग में समान
अरथके कहिबे में तीनि भांति। प्रथम समा
सोक्ति। प्रस्तुत धामा कम ही मों रहस्य
ण। भांतु कियो है विहे सप नसरा जि
प्रकास कहे मगा कें। वि आश्रयो घनपा
व समकै कर है दें उनामस सबे बगा कें। तम रे
थभा तरूस महिलो तुपाल मनो कसबा
न लकें। प्रवरी पवरें जिन के सहो आलस
छोरि के कांम करो जगा के। ५२। रहाव रपर ६६

कोस्नेस। समासोक्तियथा दोहा। जलतुलेभग
जगाजतेहि। मुकेपरेपहार। हंसतनहांचाहत
किथो। मुकतनकेभाहार॥७१॥वार्ता। इहांअ
प्रस्तुति। पहारवनैतेप्रस्तुतिनिसमरूथ
र्थपकीप्रतीतिहोतहै सेइहनतिसेपनतुके
वलतेमरूरेसहकीप्रतीतिहै। ग्यातेसमा
सोक्तिजानोहै। प्रलंकारनकीपेयातें। इ
हाप्रथानप्रस्तावहै। मुइसाइसामूलकती
निभासिकहूग्रस्तावहै। ग्रर्थकेभारोपन
विनुहीसीद्विहोत। कहूंभारोपहीतेंहोतकै
हूंग्रंससें आरोपहीतेहोइ क्रमहीसोंउदा
हरन। यथा। डोलवडोसवतेंवलकेंमुवड
खवेडीगगमामकरीहै। कोउसिंगारूहै
तेसभयावर…महिमावनकीसीजीहै
भूपनकेहिय…वैसेयहसंपतिसाग
रकोसीगनीहै। डारसनलाधारदहैसिरसेरवा
मुकहागजयाजायुहहैंदवपरीहै। इहांप्रति
सयोक्तिलसत। भ्रांतिमभेदजीयपाषिजहां

रस॰ नहिं कहियै उपमेय । उपमानै कहियै न हां
६७ अलि समर्थक्ति सुभेय ॥ यथा ॥ मथुरा को च
134 ले अक रूर के हे सुधि संग लगै है न मो मनि
नंद की । मो हन औ बलवी र लगे पुर छा ड
रही छवि आंनद कंद की । औ र नि हि बौ व त
मो सो न या तु धि ये सुन है मन की गति मंद
की फूली कि लो न कलि है निर्गंध कि नि बा वि
न की अवली छवि चंद की ॥ ७३ ॥ औरउ अति
सयोक्ति के लक्षन भेद हैं तीन हैं तिन के लक्षन
कहत हैं ॥ कहियै और भांति युक्ति सों यों ता
यों हाइ । आगे पाछे बरनियै कारण करियै
सोइ ॥ ७४ ॥ औरो अति सयोक्ति के भेद रूपवां
ति लीन । अन्य भेद पहिले कह्यौ महा विष
य पर लीन ॥ ७५ ॥ विषय कहियै उपमेय वि
र कहियै उपमान ॥ और भांति की कहनाव
ती । और रिलो न पां नि प पुंज एसो चै के छ
छवि मुख की । यह औ र हि भांति सन की
युति की गति औ रै विलो कनि केरु प की । औ ६७

135

रहीभांमिहरेमनसंभ्रमकौहांनिहैऔरहीसेमु
षकी।नहियाविधिकीरचनायहहैइकवी
जिनसृष्टिमिलीइनकी।७६॥योहैऐसोहै
इयहेकहनावांक्षिपयथा॥अवैअलीलभरेजि
नकेनिरषेंसेथगामनमेंनछिपावै।मानकी
जेवलषेवकवोधिरहेमुभाननचितचलावै
काअकीलोपकौनाइसमीप्तुनैनमनोरथ
पंचरिपावै।गंमनगिरिकीहांनहयेरहनुकीग
तिसैंछविपावैतोपावै॥७७॥याहिसौंयद्य
र्थीतिसयोंलिककहतहै।उलटेकारणकार्य
कहिवेकवियथा॥विधुरेमनिमानिकभौन
नुमेचमकेतनहैपगानुगतिपाइ।वासवडे
घनसेलेनमैंचपलानरयोभिजुहिविसराइ
योकिकैचरनुरवीवहऔरुकियेतिनहैवन
कीछविपाई।भाणदहेलैरिपुकेप्रवज्जुहपा
छैतेंकीनीहेरांमचन्द्रनाइ।७८॥गायहिप्रत
शुपनं॥उपमानरुउपमेयगुन[illegible]जि
हिठांव।वाचकसमयअभिविंबहै।सोदृष्टांतहि

रस. ६८

136

नाव ।८९। समसुखकरिओविषमसुख ।सोउ
निहैविधिहोइ ॥साधर्म्यदृष्टांतयथा॥ राजनि
केराजामहाराजामानसिंघजकोहरिषिहि
बिनसुदेवगुनगांवही । कौपेकालकपानि
लैवैरिनकीउछधाकोरीभिहैपेगुधाधगुम
नमेनग्यावही । [illegible] भमारतवमाथिकीने
छारवुगि [illegible] गणिनिरभयवदपावही
समनानोकैध्यामिरिधिलकौतेजहैआर
पारपारतवछविहिवदावही ।९०। ॥वैधर्म्य
दृष्टांतयथा॥ ओगुनहोइगोसमसमानकोसम
समानकोजीभयुरे । कौवसोनरनैसुजानको
कवतानकहिभारतीभाइमेरे । गनविलोकनहि
जगकेउरनोपवुनैसुयमोविहदै । लषिवाव
दवेदकेलागतहीजसमूलतैभागमवाधेन
ये ।९१। ॥अथदीपकलक्षनं॥ प्रकृतिअप्रकृति
न्पकएकधर्मनियमविहितव । इसप्रकारजान
परकहैविधिदीपकनाव ।९२। ॥वार्ता॥ स्रप्रा
कृतिअप्रकृत ।पधमलीउपमान ।इसपवक्ता ६८

137 याकीबेजानियें ॥ बऊलद्धक्रियायथा ॥
सरदसुधाकरसंयोगसमेस्यामघनहोत
मेविभातहीमेंकमलऊहद्वये । फूल्योविद्रुमा
जेवनितांकेरंगरागसासुमजनसमाजमों
कमहलमहमये । गोहकोनिगमविद्युजस
कोंपवासभुनिऊयोगु .भयलेकेनगमेंव
हृयहें । यंमस्यघभूपकेनासमहिजिसेमन
वोहिनिसयोसविलयारनवहृवये ४६ ॥ ब
ऊलक्रियाएकद्धयथा ॥ फूलीसमाननही
लतामेंमनमेंपुनिकाहूकोंलैकनलावे । आ
रसीमेनिरषैमुषकोहूदषेहीयभवनमाज
घनावे । ऊलसेविलमेंकहूंसैनकीबेकीचि
तेनिसबीनकेहिसचुरावें । बीतमएमन
मोहनजूतवतैंभयोबालकोऔरसुभावे
४७ ॥ अथमालादीपकलक्षनं ॥ अगलेअ
गलेजोगुनदेषघामअधिकमनहोइ । मा
लादीपककेहतहेताहिसवैकविलोइ ४८
॥ यथा ॥ कूपकलसमहामासोमसंघ

रस. ६९
138

जेतीकरीकरतूतितिकेकौनमकैगाइके।तेरे
रसरंगमैंअभंगालेतबंडबंडडसैनेपसुख
मिलतबिलसाइकैं।बाटतबातितरसोगिय
मीसखयामरसधराजुमसौधायकैं।तु
मजुनमसोजुनमसेयमुरवमुखर्बको
कालोकसंगवातिलवनाइके॥६६॥अथल
लयोग्यतालक्षणं॥ दीपकहीसोंभेवयहनि
यमनकहीहोइ।उपमाअरुउपमेयकेतुल्य
योगतासोइ॥६७॥उपमालंकारयथा॥ वरन
वरनपूषपदययकटीरयपयोनिधिछोमसी
पांगे।पूनौंकीरातिमैकेरावकेवनमेतम
रोककहछविआगे। पावडहारतुपारपल
रकपूरकेभारफरयकेआगे। मैलेलगैस
वहीकेविलासहराममहीपतिकेजसआगे
६८॥उपमेयहीकैयथा॥ आननतुमासवंक
मोहनिविलासयाकलोचनतवांनियसों
भरेभरेरंगहैं।सहजसुवासबसौभवनवि
लासमैतसीहेहकीगुनाइऔलनाइलीयैस

139 गहैं। सहज सिंगार छवि उपजी अपार हियें।
मोहन सें हेत हाव कुच भार रंतें ही सिगहैं। रैनि उ
जियारी में बनी हो प्यारी ऐसी प्रभु कों क्र
वस की बोवलकन न सब अंगहैं। ९९॥ अथ
वितरेक लक्षनं॥ जहां अधिक उपमान तें क
हियत है उपमेउ। सो वितरेक बखांनियें अं
बनी बगुन भेउ। गुन कहियें उपमेय के अ
रू औगुन उपमान। कै गुन ही के औगने के
हो कन हिं आंन। १००। व कूरि भांति यों बीसह
होत भेद ये आनि। सम लाभ सब रूप णके है
भाव सलेख विखानि॥ जहां गुन औगुन औ
गुन दोऊन के कहिये सो सब दलें यथा॥ सलि
ल पर सबे हैते जहीं न होत यह वाह न अधिक
हैं यहै के पानि पांणि मैं किये हाय भन कोपे
आन हे उ कामस वा को यह म सदा सव ण ग्रे वंइ
भांन मांनियें। वह आठ मूरति के पर नु सक
तु महीय हाथ करूप जग व्याप क है। आनि
ये। पावक सों कहें यां म संप घकोथ नापक

रस.
७०
140

हैकोनविधिनिनकोमथ्यानपवधांनिधैं।
३॥वार्ता॥इहांअनलकेसमकैहैंतामकोप्र
तापथोकहियेतोयहअर्थहोइ।पावक
सोंअतापरामसंपथकोकहीयैतोयहअम
पुतीहोइ।ऐसेंकमौंगोंठेरजहांउपमाअ्रौ
तीहोइ।तहांशाद्वीजहांअर्थहोइसहांअर
थअरूजहांउपमावाचकपउनहोइ।तहां
अस्वमकहोइ॥उपमेयहीकेगुनकहियेजहां
सुंयथा॥याकोपतनुसुजसुसुधाकरमकलंक
विनुराजेनिसदिनकरहीपतिन्नियाहवी
राषैनपलकपलजीवनकोसंयगप्रकज्वा
लनपरमेंवडवानलकेराहकी।अगनिस
रतनवंकसेंसुभाइसुपणांनीअतिमकर
सुवानीहेउछाहकी।तेनवरेहोतुहेउआग
रसमरसमसागरनहोइरांमसघनर
नाहकी॥५॥उपमानकेओगनजुहीमों॥
गुनकेनलेसगुनीरीकतनवाकेसेमुपवो
लेनमधुरयातेसुबाहकेकांमकी भोगके ७०

141 नगाहकलग्योनयेमुलाहकनआंनेकछूर
मरीतिनहूपवातवांमकी।देखिनुविरहीविकी।
छिनेकोमुखपावेनाहिहि।पतिनआकेतन
परनिशुधामकी।आमेनविवेकगडसमझ
मुभारसमकीजियेकलपतरकेसैनपरं
मकी।५।श्लोउनकेप्रनकहवेकेरियथा।।।सं
नमनमानकिरवेनरदेवीनिसानप्रणाय
भानिकोलिलीनीगतिहंसकी।मोनकरिके
अकरि भोगकविवोजकविआंतिवेमरमर
मरीतिनकेसंगकी।संनवडवितरगुरापन
कोपुहमीउधानकोगतिगामकूणपवलं
मकी।होहिहिभरहेतुगानतिकेवसम
हिसमतानवगेकोकूगमकेवंसकी।६।
।वार्ता।।इनवाक्योंमंसूहगानुमैमुवमेरया
।हा।।निसंगारहसोलिये श्लेषमूलकथा
द्वितिरेक।।यथा।।वीरनहीछिबकोंसमे
उपज्योनहियोलमुखासोहेजाको।।जुलना
हमसीपवहेनिमघोसधिकासकुहेबमुख

रस कौ।फूलेरहेहगिलोचनवाधिजओलगिरूष
७१ नरूपहियाकौ।जामेरहेहोनितपूरिकला॥
142 ३सिसोमुखकोरूषभानुसुताकौ।७॥श्ले
षमूलकअरथाविलरेकयथा॥वैहरेकमा
गरमैमिलिकैमगानहोलियहैविहरेयाके
ऊपावागपारकी।पायसुकेसमैवहतोहै
नकतीगहीकेयहमसूओरहेकरथापरभा
रकी।वातेहारसंरवधातेकमलाअसंपहार
वहहविचरसुरापवरवारकी।यहामहाष
मेविग्रजतेहआनंआमकेसमसकीजेसु
रसमिलरघारकी।८॥अथश्लेषमूलकअ
क्षिसयथा॥हेवपुसरूपहियेहलसुकलान
केविराजेमनिमेहियनिसपनिसुरमहेंस
वनकोसंगरहेभूपतिअनेकअसवारीज
गहिगाजतेंउवेअनुवेमहें।हरिकेलेसुके
प्रतापकेप्रकासतरेहहेतावचनमारुषो
लतसुरैसहें।मोजकेविलासकाहूदेषेन
विषमरीछिमलेकविकहेरामसिंघतूमहे ७१

143 सहैं ॥ ६ ॥ वार्त्ता ॥ इनतीनजुमेंदोउनकेगुनक
हियैं। याभांतिअ्नेषप्ह्केवागहदोउनकोमि
लेतेंवोधीसमैरहोतहैं। यथविनाशकेभय
तैंसवउदाहरणकहैं ॥ अथआक्षेपलक्षनं
कहोवेंकहेंवरजिअधिकार्दिकैहेत। कहि
करुकहिवेसैंरहैं। आक्षेपाकहिहैत ॥ ७ ॥ कहि
केवरजिवोसोउक्तिविषययथा ॥ भोरभये
भरकोनिसवासरकंटककैयनगाहतनहि
हविनेहकीरातनआनतहोतुमआऊसिते
लितआवसतहि। ऐसेसुभाइहेसैमसथेपुव
तेमनकीमनहीमैरही। इनतेहीरहोवलि
लोअगहोतुमकहेलेकहाकहियेवनहि ॥ ११ ॥ क
हनीवातकोवरजिवोसोआक्षेपवक्ष्यमाण
विषययथा ॥ आयेहोसैमनमोहनेदृरहि
येमयोसुषमाजलहोगी। अपनोहियाय
नविचारिहौयेमनहीमनमेउकमलसहो
गी। ओकैसेनरमोपावतहैंमहिहोतनउथ
वयोहीयरहोगी। ऐसेकियेतुमकांसतिकै

रस० हरिआआपकहोयेंनहोनकहोगी॥२५॥अथ
७२ विभावनलक्षनं॥सोविभावनाहोइजहांका
144 रणविनुहोकाम॥यथा॥मेअनहीओलेवेहि
यनाविनुहीजविषकोंघूमिबोलेबै।सोमनही
उरमातुकैविनुहीमनुहोयिमबेहंसिपबै।
बोकिम्रैं[illegible]केहूविनासुषमाजविनाह
रषसुविशोबै।[illegible]समयोगविनाहीयकहिस
प्यारीबरीपीयमूरछितिहैबें।२६॥अथविशे
षोक्तिलक्षनं॥सबकारन[illegible]काजनसरेउक
तिविशेषसुजान॥सोतीनिभांति।अनुक्तनि
मित्ता॥उक्तिनिमित्ता॥अचिंत्यनिमित्ता॥जहां
कारणकहियेसोअनुक्तिनिमित्ता॥यथा॥जम
मुनाजलसंगमसीर[illegible]सुधाकरतेंसोप्र
कासकीयो।सुचिचंदनअंगलगाययौवना
इकपूरकोंअंजनतेंनदियौ।नीरगुलाबस
[illegible]पीयूषसी[illegible]तैंकरैहिगओरोतिवियो
[illegible]सेजमसोजननकीपवपोटतउनहिसी
तलहोतहीयो॥२७॥इहांसापकोहेतवियो ७२

गहेपैंकवित्तमेंनकह्यो॥अरुजांहांहेतकहियै
सोउक्तिनिमित्तायथा॥ श्रोभमितिग्यातनहैंपत
हैंपतअहियमेमनऔंनिमिहोपुनिओर
कौनावलेयातकह्योतवहृनहिओहनिता
नलिहो।आपनहूयातिविछ्रनवैपैतकल
हियैलौंठानतिहो। हरिमोहनलखे॰मिहवैजो
मठावैतजकवबैनहिनानलिहो।४॥हहांमो
नकेंअनकरिवेमेंमोहनताहेतुमोंकह्योअवि
सनिमित्तायथा॥ आंपिलआगेहूहैंपैनहीक
षिनाएहोबोलैनमोहननाहे।लिहिआलन
वोलपधूबथवैपैतऊनवुकैउरप्यासरहे।
भूपहूपैंनहिभावतभोजनतापनवैनमवो
जनाहें।यहलांवेवोमायकहाभयोयाहिल
मेनउपायऊनीमेनाहैं।५॥हहांहेतकीअवि
सनाकवित्तहीमेंकही॥अथयथासंख्यालंक्ष
नलंकार॥ क्रमकथर्यनकेभोगनांहंक्रमही
सोंपुनिहोय।संख्याक्रमचूकेनहीयथासंख्य
हिसोइ।१॥यथा॥वेरहतनवझ्रानकविगाहैवि

रस· दानंनकरिकीरतिविलानकहिउइतिक्रपा
७३ निधे। ग्यानहउग्रासकरिमनोरथपूरेकरि
146 देखतापहरिपरजारणकीमानिये। मलछ
दसकृपरीफिभमैमहास्वसम्मिविमल
प्रवंदभानुरपभकोमानिये। योगहिथेक
विमुखभेदनीसप्रभिमानएकेयांमुख्यार
णेवयाविभांतिज्ञांनिये॥१८॥ ग्रीरमइविधं
नछप्पै॥ सगरमांमवधअसुरवंउवाधर
धाराकांमकरितुम्याहमेटरहथेकवबरदाक
र। पुनिनवामदगाविसमयमसमयहद्दिमिनेस
लभय। सुभटमनहरणकुछमध्यादिनलह
त। भगतनभवयशारपथगुधपरमापयकहा
ननगतपतिपालकै। सानिकामपण्यरवि
करनहरिरांमसंघजेतेसवे॥ अथअर्थांत
रन्यासलक्षनं॥ जहांसामान्यअरथकेपेष
नको। विशेषवहोरिसमानविसेषकोजी
हतोपोषकुलेइ। सोअर्थांतरन्यासहेयोर
अरथमहहोइ। सबरमाविधरमभेदकवि ७३

147 आरिभंतिहिंसोर ॥क्रमहीसौंउदाहरण॥ने
यनिहारिकैकिजियेकांमसरथांनुयहैगति
छांहनभूपां। भूलिकछुकहियेनहिंयेनिह
येतकिसेरयेरकरूभूपां। संपतिरैबिप
तारलजैमगारेमठवारिपरैजिनकूपां। हे
रनाहीगहनोतिहिकोयहकैथिननामोउ
सीपमैंरूपां॥इहसामान्यभ्रमसंसारवोंसीप
रूपकरिपोषे॥यथा॥ कुंजनकुंजगुंजनतमधु
पपुंजकेबिलासमबंसीबटसरोसपासमधास
रणजोनिये। फूलनितिसरसानबनबेलीतिन
कोमधुबासमरासरसभागेंडेसोअवरउरआ
निये। सरसमधाकरमंगोगामैंपुलिनछबि
नेसीयकुवोरबोलेमृदुबोलिये। बंसीकोबजै
बोरसमधरसुरगैबोबृजकोनकोनबानतु
कोआंनदरवभवांनिये॥वार्त्ता॥ रहांकुंज
आदिहीरासमबधिसेषकोनकोनबालनमों
आंनदरवपांनिए॥यासामान्यसौंपोषेधर
मयथा॥ कालीबिनैहमसोयकुलारक

र.म. नैननुमैंवरसाइवक्रमेक्रन।प्रीतिकरीमकुो
७४ सोंहांगमुगाइमवेहरिकोमनुलेक्रन।मो
148 हिनहोमकछुमजनीइनधौंबिनहीकोआ
हनोहेक्रन।स्योपनेमपनीकरनसिलि
सोबहिरेजितकेपनेक्रन॥यथा॥नेक्रभरे
रसरीतिमेंनेंभलाइकीजानतहेंगामकें
सबकोहितुआपनोहीसमुझेननभलेहेमा
ननतेजमकें।तिनतेंदुवपावतहेसबहीम
हमोलेगुभाहमनेमवकें।इनसीसोकिया
हियराकहिहैंजबकोंतेजाभोयधिग्रिपमकें
रथ॥वार्ता॥र१.भलाइहीतेंसबभलेहोतहें
यहसामान्यहीछमहिविकेजेसूयउतनेंबि
सेषकहिकेपाओंभोंप्रथयक्रमणेवरहे
सोसामान्यकहिवेंक्रणहीहेंसोवि
सेषकहिये॥अथविरोधभासलक्षनं॥हे
तुविरोधविरोधभासोबातनुमाफलबाइ।जा
तगुनगुनक्रियानामकहि।सोविरोधइसभा
इ।७५।जातिआदिसोनीनिगुनहेसोक्रिया ७४

149 विरुद्ध। नाम ही सो व ऊरियो सो है इस विधि
व। २६॥ सो इहसौं भांति संक्षेप के लियें है कवित्त
करि हियवहे॥ यथा॥ जी रजनी ने पतिते नव है
पुनि नीरह सी तानह तेन हियो है। जेमु कम
ल है मैंन केवा नभ ए तेकरी सापाा ते जलीयो
ह। पावत है पैं विनाय लीना ये पै मोहन कौं
कवि जातजीयो है। २। कोकिल के मृउ बैन
हियो हिठि वे धत नैंकहि कहीं मों कहीं। यक
मन मोह यक काम वहै मन जो वे रूप रन वै
भलहों। तातों तु मार कवें जिननी वें उसी व
ग लाव हिये पैं रहू। शसि हू पाविरी घम भां
न भयो प्रवल कहियो रतु के संग हू। २८॥ वा
र्ता॥ रहानी रज जाति सो नें अजाति। नीरज
जाति सों ताते गुन। २। रमी रजाति मैं सोसाऊ
कविंवो क्रिया। ३। द्विवेजाति मैं सुधा कल्ला
नविरुद्ध है। ४। पेमैं तो शुक मा [illegible] ता गुल
प्रकृति हाणता गुन सों। ५। भृगगुन सो वीध
वे क्रिया। ६। तातें गुन तु मारन नाम सों विरुद्ध

रस·
७५
150

हे ७ । वक्रिवोअर्थअकासमचढिवौक्रियाक्रि
यासो ८ । जारिवेक्रियाअरुकपूरनामसो
विरुद्धजांनियें ९ । भांनसुधाकरनामसो
विरुद्धजांनियें ।१०। ओसबूंदकाउकहीग्र
र्थसोवहोत्तनमेरहेसोजातिमदकहावे ॥
अथस्वभावोक्तिलक्षनं ॥ रूपरंगगुनभाइके
तीनकोजारनुहोइ । सुसुभावोक्तिजांनिये ॥
कलमुजहाननिकोर ।२९॥ यथा ॥ देहदिहे
थिकहोवरग्राइ । कहोसनताइनवेजसुभ
ने । इवपरीयरकोनललानविलोचनदेड
अंगनिडरनाने । हनिगुमानवतेमिरनाइकि
तोललचाइकेमाइवसांने । माधवकोरति
देहेतकेमनमेसुसिकाइमनाथोलमाने ।
३० ॥ अथव्याजस्तुतिलक्षनं ॥ निंदातेंअस्तु
तिजवस्तुतिनेंनिंदाहोइ । मिससोंवरण
नुहोइजविमिव्याजस्तुतिहेसोइ ।३१॥ यथा
विरहीकेकलजाईवेलिनुकेफूलयहेंहेंवि
हरिशीतिकविहसतिसुमनकी । पवननु ७५

151 केतुकेरिकोकिलतुलाइमृदंगीननगवाइय
हेवडाइगुनगानकी।होतयानप्यारेकैसमी
पहीभलेवसंतनानतकनिकाइहोयहेवनव
नकी।पावतहीरानुतजिमितहकीलाऋतु
मताजिकैसमाजरतिकीनीजतुननकी॥
२१।होतहीतनमुरतननुभयोनातभैंना
तैमीठीयेस्याम ता हृदय्य वैसेविधै।छीन
तानकाहृथमावसविलानअकथावस
केसमैमैथकामपंजेपविधै॥नदीरमाइ
जलधंमछविछाईकेमनतुमुपसाइवि
रहनिकोविसेसविधै॥नाहमाधिरावेतेनसर
जकोहेतकह्योकोनकोमणवणनिसाकर
केसेविधै॥२२॥इहांप्रसिद्धिविरोधतेंस्तुतिकी
विंदामेंविश्राम॥अथसहोक्तिलक्षनं॥ए
कारथपदअर्थ है।कहैसमयकेजोर।जंह
सहोकतिजांनियेअलंकारसिहिठोर।१।
संगहीमारकेवोलनकैपियकोपुनिप्रान
वोहूसुनिलीनो।साथहीश्रीघमकेरविकें

रस.
७६
152

बिरहउदवहाइबिहाकरिहीनो। संगहीसावन
केघनकेअतिसोगौह्लासहीयोभयिलीनो
केतिकीओकफकरंबनकेसंगहीषंगमूलेजि
हअतिषीनो ॥३४॥ वार्ता ॥ यहासुनिलीनोवि
हसिकरिदीनोगाढ्रोएमबयालिपिएकही
अरथकेहैसयापिहोउनसोलागतहै ॥ अ
र्थबिनोक्लिलक्षनं ॥ ओरम्प्रथमथबिनुअरथ
जहै। भलोतुचोनहितोत्र। रवाबिनोकलि
जोनियैं। सोपुनिदेविभिहोऽ ॥३५॥ भलेको
अनक्वेवोयथा ॥ सीलबिनानुबिगजनसंनु
गाजतुनिलिबिनाहैं। कीकोलगैबिनुसाह
सम्प्रपफलानबिनाफुलनकीअवलाहैं। सर
नहाथबिनाहस्थियारगयंदबिनादरबार
नभाहें। मानबिनाकबिलानकीशोपहैहांन
बिनावसुपावैनलाहैं ॥३७॥ बुरेकोअनकेवो
यथा ॥ सीनलताबिनभानदुचोनसिंगाकल
औकुलकीअविलाकें। जारकाहूनजती
कौबिनाधनुअंगबिनालसमेंनम्रभाकें। ७६

153 प्राणतोबिनुदेंमकोवंदघ्रहैमाहिसाधुबिना
ग्वलमाके।जोक्रबिनानिमिषपावसमकोछ
विहीननहोतहैसंतपियाके॥अथनियम
लक्षनं॥अग्यनकोंग्रहवरलिवो।विनभय
कहियेसोइ।समरुसमकोभेदधरिसोषु
निर्देविधिहेइ।२६॥समकायथा॥वेदश्रोपुरां
नषडुदरसनकांविकलाजहामतुसीधोलि
यौतिनहीकोहेतुहै।प्रेमभरीमवसनअवि
केपललेमतुवामनिकोलीजियेतुआनद
निकेतुहै।प्राणमनोरथकेपावनप्रसीस
क्षिजगतुयेभयोयातेउदयकोमेतुहै।उज्ञ
नहलनुदलिमजानामसिंघजगाबनावल
जोहोयेवपुईलप्रमुलेतुहै॥२७॥न्यूनकोअ
धिककोलैवोयथा॥अधिकअतापदैकेलेतहै
घतापपुंजजीवदांनुहेकेपुनिजीजेमसबा
मके।तीनजुकीवोवहैकेवाकेगहलेतवन
वामुहेग्रवामुकपविलोजेभरेहांमके।वद
लेग्रधीगमाकेधीगजलीयोहेउबहैकतिडं

दस.
७७
154

लीक्कैसवस्तुपधनधांमके।पगमगरुणमैं
विपक्षनुकोहलगसि।नेनविनैलसग्वैमेल
क्षनहतांमुके।६९॥भाविकलक्षनं॥बीतिहो
नीबातनजहकहतप्रत्यक्षसीहोइ।भावनहां
कविक्रियकौभाखिकहियेसोइ।७०।
यथा॥ मांनिलियोहोगमाअपराधकमुखह
यहैमैसखलोमतिमेरी।ग्वंननहोइहिंतंप
हिलेप्रविधांकरता।निहारीकेनेरी।हू
बसिहोसवसोतिनुकौमहमीडिकैवैसी
होमृगाि...लालीहृगविनुनमोह
नहूवसहै...संभलनोकिकैकेरी।७१।
वार्ता॥ इहां अधिनुपं मनुहूंजि।बोलीसो
सोतिनुकोमृडमीडियोमोहनवसकेवो
होनोसाधनहिकियो॥अथकाव्यलिंगल
क्षनं॥पदसमर्थकोअर्थहेहेतुकिपदकौ
होइ।ताहिसुकाव्यलिंगहेहेतुनिदविधि
सोइ।७२॥हेतुकोकार्यतायथा॥लोइन
होहमपैंकछूनायछांनिजातवाधिका ७७

155 पथारेहमेंछोडिरहें हालमें। आगेहूनहै
हांहालचीनिहचैकेमालैपत्याकामअब
बिरहानलकीज्वालसें। रावरीयोरीकहूंन
समकिपरीहियातेप्यारकिनोमथुराहीकु
बिजासीवालसों। अपनेंप्रलैहूलैनपाइ
येजोसुखलीनेहैं सनुमन्हकहै ऊधोमद
नगुपालसों। ८५। वार्ता। [illegible]
हेतमदनगुपालकौं अनिवरी निबोसो
वाकाअर्थकविकैकह्यो। हेतकोप्रसंगयथा
यथा। पोषिकैचारविनाहिं[illegible]तहेतकों
ग्रसीसहमाली। नासौंमैं सुधमौंपगेरहि
योतुमहेमनकोंहितकारी। सखीभरदेके
सुवतेंप्रवहोविछुरीअजिहूमोडथारी। अ
नुथवालकपीतमक्षेपाषविहैसतेंमोरसघ
डमेडारी। ८६। इहांमोहमैंयासुखकोग्रनपाइ
वोहेत। अथपर्यायोक्तिलक्षनं। सबदअर्थ
मरजादहैंपरजायोक्तिमोर। ८७। जुवंग्य
हैसोपदहैनपाइयेपैंनाकूपहेतैसीनपाइयें।

र.स. यथा॥ रूपअपारलसैहियरा रसुधाकरिरीस
७८ करीकवरी। जुवतीनकेसीसकौंफूलभरथ
156 रपा जैवनी छविकेफवकी। रूपनजाहिवु
रातनमीनएआनतैंप्यावैनजैमवरी लवि
थीलमधीरननसोतिनुमानरूपीलमघान
शुहूलवही॥ ७८॥ इहाश्रीलमवसीभयोसोति
नकोमानुगयोसखीमुग्धकेरही यहव्यंगप
नहीछोड़ियारूपकरिकह्यो॥ अथउदात्तल
क्षनं॥ नऊसग्रंथकौ जोगनह। यातेंउदात
गुहेर॥ यथा॥ वैनिनुकीवामतनिधांमकि
येवनभूषनकेगातजनतनपबेपाचियैं
हुहीमनिमालनिकैंगांनतिकमाल.प्रहिक
हकहमाललैमनीकेसमलेषियैं। जगव
जगवचनवजीछविछाजीकिभाजीभा
जीछिपहिनरूपतिविसेषियैं। रानन के
गनानहाथजाअंपसंघलेरेघमाकेवि
लासकैविलासमयेसेदेषियैं। ७९। वडेअंग
कैजो लैंअंगाजनगासमसार। वकुविरउदात्त ७८

157 मइसरो। अलंकारसुकहाय। ५०। मागतहं
गुरिकावतवंगमगुवालवनाइगडेउरछो
ले। वेनवजावतसारगगावतसंगलिये
हेसषानिकेटोले। पीलपटीफहरावतग्वा
लघुलावनिकेउहिंघोलविटोले। पाली
वेहवनहेयहआमहिमारयवावर.मोहन
डोले। ५१ ॥ इहांमोहनुअंगभयेवनकीवडाइअ
धिकभई॥ अथसमुच्चयलछने॥ मूलअर
थकीसिद्धिहलकअरथसेहोइ। गोमे
पोषकुहोइवहुवाति समुच्चयसोइ। ५२
॥यथा॥ पावकअलापव्यालमेलीहेहमोदि
मनिमोदक्रियानिबानि.वीमोदाटधारी
हें। धेमाकीधुमार संगवदसिरहारकोप
कीयेएकंकुंडेलालवनसंभारिहें। गातेस
उसहमहाजनतहिंगिसधनकतसेलपुंज
रहोसेननुरभागीहें। पृथिनभेंनुगोंनम
गिभयघाटीमहार.बांगमसंपधेंअग्या
जिम्नाविझगीहे। ५३ ॥वार्ता॥ इहावें देनु

कोजरिबेकोभयपावकयतापहीमेमिछि
हैंभयोहां। श्रीगोभयकोपोषकुकहे। यह्म
लेनुहीकेयोगकरि। अबबुरेनुकोयोगक
हिश्राए॥ भलेनुकौयोगायथा॥ श्रोननु
सुधाकरजरनीसीअलकेजेविधुविरही
आइकैंपीयूषपानिहेतुहे। भकुरीकुटि
लताचपलताइगानिकीकटासनसुभा
इहीसुधाबलानिकेनहै। कंचनुकलसकु
चसुबरणबेलितनुभारभरेकुचकुटिल
चकाईहैतौ। तेरीसोंकिएकाहेयाबने
कतेरीव्यारीभैंकुचकुटिलचकाईहैल
हैंतेरीसोंहेकियेकानोकेप्रेगाथनेमेरेमन
हरिलेतहैं। यातेंकिनगुनमिलिरहैं
औरसमुझ्यसोइ॥ क्रियाक्रियासौंगुनगु
नसोंयथा॥ कूरमकेवंसकीवडाईवनिआ
इगुनगुननिमेंगाइसुनरजपैलावरे।
दीपनिदीपनिसुमेरसीमईसघरआ
पिरहीकीरतितिलपियेजहाजावेहांन

159 केलिरचैंफूलैंफलविनुकेहूंरुयोसुरेसकल्प
केकल्पकिहोरतनताबेरे।लेतहीअपानि
करराजाराभसंपजूकोअभयोपसुविमल
विपक्षभयसोंवरे।५१॥इसतीसरीतुकमैं
गुननुकोसमुच्चयजांनियें॥अथपर्यायलक्ष
नं।एककाअनेकनुमेरहेंक्रमपर्यायसओ
र।सोइसोकअनेकनुमेरहेएककाहोतव॥
अथपर्यायोयथा॥पारसनेंथिरताअधीरनु
गहनुताहिलोहछोडेंहाथनाहिगोपक
रनुहे।पानीतेमुखनाहि[illegible]भगिलेतेतें
नतनैलाजताहिकुल[illegible]वनुहे।भ
मितेनैमननाहिमावतहेतनजीवछोडें
सोवव्यापकुसहतनमें[illegible]नुहे।फेरनुपर
मेंअतिअंगसाजसंगरमेंमहाराजारांम
केप्रतापविराजनुहैं।५८॥यथा॥कमलैं
वगरसेंरीकीजिनेंप्रफुलआननुसवतेंवि
गसोतिनरुधिमुतगातमैं।वडीकरनतिव
डीनकेनिवासजगाहेतवडनहेभलोइ

रस· औरैधनमै। अमरअमरभएतावेपरसऔ
८० रसहैंजहांतहांसाधनुकेगनमैं॥प्रथमहीसा
160 गरमैंवऊर्योंसुधाकरमैंवामनिकेअधरमै
सज्जनकेवचनमैं॥१॥यथा॥ऊजैममगात
प्यारेसोचकेसमुखीविचितमेंगडाऊ
कौविरहिवहारकें। अववेतोनदीलमेरो
जानमुसुफल.नथौगवरेऊकीनेमेंमनो
मथवनारकैं। देखनपावैरविसमसिजा
कीबाहलाहि[illegible]ऊगहिवांहधरीहैकमे
हरारकैं। प[illegible]लेहीमैंमनुहीनेहकीनलक
अवहीयमाकवसीनविनासीवेमुआइकैं
द्वितीययथा॥ देखि[illegible]हीमूरतिमकरसुख
सीकौमुधाहू[illegible]पहलागेकोनसमकी
जिये। चितहीह[illegible]वहेनु[illegible]कमपावे
तवविष[illegible]देखहैहेरतमेंछीजिये।
व.केहूंधैकुंरहोहिसि.भावरपुंजविनुहैध
उनहीकौंज्वालमालजानिलीजियेकं
होयमममकामवलनाइभलिजाइजिनमो ८०

हनसो आलीरीसमझिनेहकोजिय ॥ ६९ ॥
॥ यथा ॥ उहागजगाजमनोरथहीविराज
तेहएलोगवजनुमांनुहिगाजकोअरिकै
आगिआगिकाचकीचुरीहाकरमाफरते
भषनवनाएमनिमानिकमयाविकै । ष
चिमैसरनमैगोवरुफवगयोहो । गहामै
हिरसबाधेतहासंपतिव [illegible] विकै । छिन
हीमैकीनेकविराममहालाजमहाराजा
रामसिंघजसकानेगोफणाविकै ॥ ७० ॥ अ
थउनमानलक्षनं ॥ उक्तविकरनअरूहेत
कीजहासुहेतनमान ॥ वार्ता ॥ जामेकारन
रहेजीकेहोनकारनहोइ । अनुभएनहोइ
सोहेतकहावे ॥ यथा ॥ मिलेआजुहीग
हिमोननबोलतकेतेनिरबिकियेमें । पे
मेविनानविलोकनयैसोविलासमोहोत
हिमैवलीघमें ॥ होरसोंध्याननकीउतिमे
मीजोदविधिमोहनरूपविएमें । याछवि
रूपनैनानतिहारमयिनीवरूरनवनेह

रस.
८१
162

हितमें।६४॥अथपरिकाबलक्षनं॥पोष
कअंगनिकौउकसिनहांभावमैंहोई।ता
हिसौंपविकनकहतनेजाननकौविलो
इ।६५॥यथा॥अलिअलवेलीरहिसके
नअकेलीप्रीतिरीतितुवभाइवेकौगाइ
रहेमनके।ने हलीसीमूरतिनअंसीक
जीभूरतिहेसरसिसलोनी।प्रोमुभाइ
सवैधनके।वचनपियपूषलौनितवह
कीमयूषपद्देपूरणमनोरथकैसीसा
मधनके।अलिगनधायहोहिसवमुष
नीरहोहिंऐसैंनैननसीरहेहइवोविजवद
नके।६६॥वार्ता॥रहापहिलीतुककोविसे
षन।अलीर.नधीरहोहियाकौ।दूसरी
तुककैअरथविसेवरहत।यहहृष्टैनेन
सीरहेहइयाकौपोषतुहैयाविगपहीसो।
अथआजोतिलक्षनं।जीयाकौमजरीके
कहुकुकपसगरहोइ।ताहिस्याये
बलवेचनयाजउकसिहेसोइ।६७

163 यथा॥ आए कुंज गेह तें बिहारी सो निहारी
आली सी थल सरी रहिये गाऊ धरकानु
है। भार सों बिलोकि मुसकाइ बोलि उठि
आये कहौ कोंन बात आज अंग सरसा
तहै। तारन कौ टूटसे पिरत लैन निसिसा
गे नैक डगलागे नाहि सुमसरसाल है।
रावल वसौ उसास मसि सुकन मुष पासमें
हवै चलवौ भी जिगयौ सखगात है॥६८॥
यथा॥ बातन तिहें घनस्याम नहा बिनिहाम
निहारि छवि है मरसें। अरु भावन को घन
छाइ रह्यौ निक सैन हिं कोउ कहू घर सें॥
मोहे मनलोनी घरा पाव व स्का सोउ ति भा
गभे रहे सें। चलि आली बिलोकिये कोनु
कुंजन में पात सवे मकता वर सें॥ ६९॥ इह
संकेत स्थान का हू कै बिन जानें ही पहिलें हि
उकाय॥ अथ अपरि संध्या लक्षन॥ पुरछे अन
पछें कछू कहौ मानि न हलेइ। बासम अ
मन कालकौ पभिसंध्या कहि देइ॥७०॥

याकेभेदआसिलयाहिकहिवोअम्मपूर्वक
उत्तरकहिकैवातेविरुद्धथोगद्दसरोदिवाइवो
२जाकोषेदकीजेसोअंगपलोइवैवाव्यलोइ
७॥ कमलीसोंउद्दाहरण॥ हनुकहीजगमेंज
मकोपरकामवाधिगोहीनिमवामर। का
हेहेध्यानरहोतहियैमनभांवनेसननके
गहवेघर। कैनसेवेबसधावसुकावकमो
नमिल्योकरवानलसेकर। जाकेविलास
नैकितिमकामरुज्ञनसेवतपारमयभ
मर।७१॥ द्वितिययथा॥ पेमकोहेतुकहाहि
तुकामकोकीवानवासनकोवकिवो। धु
निनेमकोनकहामनकोगहिवोनहिलो
गनुतेसकिवो। कोनमुआंननतेहेसुगहेयु
नकोननहियागनहीतकिवो। यहजानो
विवेककीधातमवैतुमहीलखवोहियकौ
थकिवो।७२॥ तृतीययथा॥ कृमनतेसरा
मसंघकेसुभारहोतसंगरकोपाइसेक
हालोकाषिवलकें। नाभुविजेलक्षतमोक ८२

165 तेवसताविपक्षमनसौंहससताहृयारवाहिवैमेले
तमलकै। ग्रोन्नुगरवाद्ग्रोडहमलावमत
चितकरिकविवारलगलागैवरहलकै। मो
हनिवकारअक्रणनावहनपरहिथैमेउछा
हौसनेननमेफलकै।७२॥वार्त्ता॥ हहावग
मैजेमेरामसंघवैसुभावहैतहतैमेआव
केनाहियहांध्मपलोभुविकैमनसीसौअे
रमोनाहीयहधंपअैसैरभीमानिलीजै
चतुर्थयथा॥ नेहवडोजममोवरमोनहिया
हैभलोसवमोनकीवेहहि। पापसोंवैरनु
आपसौंसावैसुभाइनफछवजांननहैक
हि। यावैहयाग्रहीमकनाहिकीतिसौं
धीतिनआवेगुमानहि। साधुसुभावसुभाइ
हीअैसेनहोतवनाइवनाइकेहमहि।७४
अथकारणमालालक्षनं॥ पहिलौपहिलौ
हैसोहंहिपिछिलेकारणहोइ। हेतुनहीकोः
मुख्यिवोकारणमालासोइ॥यथा॥ सवकौ
भलाइउपगाविवेतेहोतभलीवुध्दिपहलों

166

सोसीलहोतनभलेहांननैं। सीलनैकसलगु
रुजनतअनुरागगुरुमनकेअमादगुनपड
यतनिहांननैं। गुननतेहोतहैस्वगतमन
मानसुखमानतसवपावेसाधुननमनमा
ननैं। सुखतेमगनभएचितउचितारुमाइ
एकचितपरगहविकलतगुनाननैं। ७६ ।। अथ
अथमोनिलछनं।। मनकपरसपरवतुके
होरुअरथमहहोइ। एकक्रियाकेमोगनैं
सोअमोनिगोरु। ७७ । जगमेमिलापकेमा
मानहैनतसोगहहैविहअतिहसमपलाव
होतछावनैं। मारोनकानकेभानवेरुपावहहै
यहाहसयानजुवहकीयेनबावनैं। सोउप
परसपरमिलेगरुवारलहैप्रागुहीलतेसी
नैअगिठेरुतुकैमावनैं। सोभामिरावकी
वडाईहलभावकीसोहैमिगुनदललसरसा
इमिरहावनैं। ७८ ।। अथउत्तरलछनं। उत्तर
मैतेअथप्रति। प्रश्नपहलेहोइ। उत्तरप्रश्न
वक्रलजहतुउनाकहियैसोइ। ७९ ।। अथमा ८३

167 यथा॥ काहूकाहूनकह्योहमसोंनहिंरंचं
काहूवनआनविहारी। वाहिहीसोंसवता
वतमोहिलगैकिनमोहिकहूहोऽहारी
सुधिविलोकनआननआलीमैंवाकीरसू
गतिनैननिविलगी। मोहनमोहनहैजगाके
तिगोहनहीमनसोंहलीहारी॥७०॥ ऐसी
कलांतरितमहिलैकोउकछूपूछैतवहीहोय
वतीयथा॥ कौनरमोहनीनरूपसुवसा
जकहिलोरमोरजाकीमत भावसिकोभरू
हे। सुसलहीचितकोहरनकोनगसुकोनले
वनसीगावतसुरघोगनमेरहे। कौंपसुहेसु
मनमानगुनमानकौनधर्ममूलवेरव
नकोउकहै। कौनअपविदंडनुकोवसुकरै
सायकोनविनैकोअधारसामसंघनस
वरहै॥ अथअश्रपभिसंध्याकोलासयुंऐसो
ओरस्कसगोनाहीयलकहिवेमेहो। याकोलासु
धअर्थपाभेविश्रामसुलिमहभेदा॥ अथसूक्ष्मो
तंकालक्षनं॥ ...तउयारसेरऔताकोक

रौप्रकास। रगिनतैआकारतैतोमस्सरु
ध्यास। ८२॥ अगिनितैयथा॥ छपाकौउ
पारघाससिवितुछपारघानध्याइकौगिक
रभाइसमकरमारकै। कीनीधनुराइजेमी
जीयतनिमारघेगुगानइयसिधालीजानि
भरभारकै। वारतन मनु मनही मनमैगनि
देधनवनेधुंगणरंलोनिक्करकैबनारकै। सी
टीमुमकानिकैलबैतैसविजानिकछुक
लेतमुनारमतैहसीहहारकैं॥ ८३॥ आ
कारतैयथा॥ लेनचालनजातहियेमकु
लानगुरजनमैनिरियाघहस्यां। कहिवे
कोभएकछुवातजवैवहतानविधारीलि
हारतियां। उनैजांनीकेहैयांवनयावतहै
हकवारकहोसितनायोहै। छतियाधरि
हाथकुलारकैसीसनधारनैनलखीविघ
सौं॥ अथमानलक्षनं॥ अधिकवठारकै
तिलगुमांनेथागेहोइ। पछितैतेमहांमा
नकरिमानकबधाने मोर। ८४॥ यथा॥ भूप

169 नकौ सारसरसवससमूहलाहै तूरसाकौ सारसं
गजुबैबेसिंजुविहारिवौ । साफसरिसमाविवैकौ
रतिप्रबंदसाफकोरतिकौसरवचसुधाकौव
सुहारिवौ । सारुवसुधाकौभांतिभांतिवसु
लीवौ । वसुओरिवैकौसाफछिनभेदनवि
गारिवौ । दंसनजुमैसाफविलसुछहोरगाते
वितसुबनाकौसाफगिरधारीजुधारिवौ ।
८६ ॥ अथ असंगतिलक्षनं ॥ कारणकारज
वरनिये । न्यारेन्यारेठोर । सबनकाबैरजुविरोध
तेसुअसंगतिसिरमोर । ८७ ॥ यथा ॥ विगत
वसनवासफथारावथनुनजनजुछबिगाहेंक्रम
भसिनरसमनजुमैधरै । सेवैगिरधरंकेरसतपो
वनहीमेंहियेहेरहेमोनतेरहमेंजु । घामकोसहै
थबे । कौसेओरतनपसोरपावससहैराजजपरे
थौअसिरजुकौसमाजुनकहौपवे । सुथ
तिकौसंगातजिसाथेयोगअसिलिलिपुरमी
कोभोगनपवांमसंघहीववे । ८८ ॥ वार्त्ता ॥
महाकारणकार्यकेन्यारेन्यारेरहिवोकवि

रस.
८५
170

हीकेविरोधसौंजतावतिहै।प्रकतिको हाभा
समैसोकार्यकारणभावकल्पनाही।वहभा
साद्विकनुवेविरोदहीकविकैंहोतहैयह
भेद॥प्रथमसमाधिलक्षणं॥रसौंकारणवि
लतनीहै रसनुभवसोकाम॥सोसमाधिप
था॥ [illegible]नुदितेपवेसनमानुप्रयालीसि
ख[illegible]यांनिद्र[illegible]जहैसयांनीसषियांनिदी
नितहीकेयहलीओभावेनविनाइरसीहो
तहेनितापवेजुभानस्तसानिकी।दृढि
वेकीउठिनेविद्याइकेसिषावैंतकहोई
नविद्या[illegible]तिसै[illegible]जविधानकी।येहेही
[illegible]कुल[illegible]आ[illegible]नालेयतही
[illegible]लिभ[illegible]ति[illegible]की।[illegible]॥प्रथमस
मालंकारलक्षणं॥[illegible]हेनुभावसो
अनुभाव[illegible]है[illegible]लिंगारसोहेफूलन
केहार[illegible]सोधी[illegible]विचार[illegible]नारचोवि
ताकी।फूलेफूलेव[illegible]विचारत[illegible]सषीसमा
ज।तेसीयेनुहाईमुसकानिहेनिदानकी

171 बिपिकी सुघरता सुघरता कहा ऽ यथ औरि
सब सौंज सुख साज के समान की। जैसी जै
सी चाहनि के चित की निकाइ ऽ यातें सी
बनि आई है कुवरि ब्रजभांन की॥ अथ विष
म लक्षनं॥ अति विरुध गुन योग तें मिलत
ब नै नहिं भांति। कांम कीये को फलु न है उ
लटि अनरथ ही भांति। ५८। कारण कारज
भाव ऽ हू। गुन अरु क्रिया विरुद्ध। होहि जु
हां सोई विषम तासु अधि भांति समप्रसीद्धि॥
५९॥ अति विरुद्ध को जोग यथा॥ रथ मो अ
धर ऽ भरत है अधिक पान मान पद वाल कपान
आनन छकाधीरत है। ग्रे ऽ अथ विरसु ककिं
नौं सुख मानो तिर्क अवै मऊ ऽ घा ऽ ऽ नौ असा
जि रहत है। अति विषबानी ब्रजरानी कहै
नें ह ऽ सो पायें भूमें भूम सो मन भी ऽ ऽ है
को मल बरन मैं बोलने कै कैसो काहू कंट
क कलित बन वीथिन में फिरत है। ६०। जहां
कार्य की ये को फलु न होइ उलटि अनरथ ही

हेत्वस्तुयथा॥जोइहबावरोसोरहोपवरपारो
सोपुकारैकासोमाइरहीसोचनतुगास्योहे।
जनमतेआमोनाहिहजौकोउथोरथवर्णि
वेकीतेरहेनसवसुषजात्योहे।प्रीतमहे
याकेतेरहेनकोऊनैगुनकेसमूहसाज
मास्योहे।कालतेंवचनकोजहिमेंलगा
योमतुहरिमनुमाविजनरमरसेउबाल्योहे
८६॥गुनविरुद्धयथा॥राजनकेगामामहा
राजाचांमसंघ।रतमाऊहोतगावरीएअडु
मगातिहे।हाथकोसकतिकरैवैरिनुकेक
सकति।लोहतरवारिमेनुजसुउगिलनुहे
भृकुटीकुटिलयग्रिवांनुकोंसुधेकरैंजद
पुहोमीगोउपजावेशीतिथतिहे।पैदलक
मानुहोतिमंडलुसुधाकरकोयविरसुजव
लसप्रतापदुग्गविन्निहे।८७॥क्रियाविरुद्धय
था॥आतैंजुहोयगहेभातिताहीकीयोकहैं
वेरुप्रगुणजुकोहे।साहिबहोसवकेयहा
वरीरीतिनरुउपजावतिमोहे।नास्यनेक

173 विषादभुगारकैतिनहीउगाइवलावतछोहै।
आनइहेतसमस्तप्रभुतजगतेसोंभयोउष
देतहीमोहै ॥ ९६ ॥ इहांसांचोविरुद्वहै ॥ अरु
कार्यकारणभावकोनियमुहै। यहांआनइ
हैयोउपहैवेतेंविरुद्धहै ॥ अथ अधिकलं
कारलक्षनं ॥ होइवडेहुमेसवैयंत्कठोरनि
हिठोर। छोटेहुकमसोंकैहै। अधिकसुवेवि
धिठौर ॥ ९८ ॥ वार्त्ता ॥ कहुंवस्तुअधिककहुं
वस्तुतेठौरअधिकवीजियतुहैयहुयामां
तिहैविधिअधिकालंकार ॥ यथा ॥ सकलपु
हमिकोथपिवेकथापिवोवस्तुकांनमें
विसालअसीमतिहै। अविनुकेइपैतेंघउ
तथोरबहुहमुसमातनाहियामेंयहकहो
कोनगतिहै। इथतहीवनेनकहतिवसि
आवैयहजगकोवसईथोवसइहीगाति
है। यातेंमेगुनीहांमसंपगलछीकोयतिहै
पैतनकोसमेरम्याइयाहीमेंरहतिहै ॥ ९९
यहहोवतकोउदाहरणहै ॥ अथ अल्पनिक
लंकारलक्षनं ॥ कामनकोमिसकेसमतुको

रस.
८७
174

याकेंसोंउपदेस।होइबगाइबरणकीग्रस
नीकपरलेइ।२००॥यथा॥हेमहेमभाव
सबगावरकरतग्रधिकाइयौंबघांनुतल
कोंएकोंकरतुहे।जोलोंजिहिंगत्रंकासभां
नकोंयहततोंलोंयहतरबकिकैउसास
नुथरतुहे।ग्रोसकुसोपाइथैरुलेवैकोंनि
साकरतुग्रोइविसमसमेंसोंमुउरमेंभरतु
हे।सरहस्योंनेनकचूतासोंघमाइलितु
याकोंजोंनिकमलकीइपमिहरतुहे॥१॥
अथमिलतलक्षनं॥ग्रोएकहिंकैसरस्वके
समलक्षनकैसोर।ग्रखथउगावैग्रथकें
कहेमिलतहीग्रोर२॥वार्त्ता॥कैग्रपनी
वस्तकैं[illegible]छकेंग्राइउकरूग्रपनेलक्षन
केंको[illegible]येसोइहिभांतिकोंमिलत यथा
इहि[illegible]यांकीविलोकनिकैंकरुंकाइकेंवे
नमुभाइहीकहे।यामेंनमाननहीवनकें
[illegible]यजानतहोतुमहनिजगेहे।ग्रापहमें
यहसींवयारिमेंग्रापहोकेंपुवेद्युग्र
तिहेहे।नीकेंलमेंंउभात्युतेंहरिग्रानन

175 उपरसी कत्र्यो है ३ ॥वार्त्ता॥ इहां वाकी विलो
कनि वाकौ कथन मान ह्वै होत है। यातें स
धारणा धर्म केवल कवि कै अपने सुभाइ ही कै
गुननु करि मानइ गायो अरु कंपसी करसु
रमांन ह्वै होत है तेसी जीव यानि अरस्य अमु
रन आगे नु करनु कवि उगाइये ॥अथ एका
वली लक्षनं॥ अगले अगले पदन कवि पि
छली पिछली वात। जहां थापिय ऊथपि
ये एकावलि कै थाल ॥४॥वार्त्ता॥ क्रिया कवि
पद स्यद विसेषण रूप सौं कहनावति वहि
ये होइ भांति ॥यथा॥ पै पै जो जन मुनरलो
कमाभ्रयानि नर लोक सील भए साधुजन
कौ नि केत है। साक इयाद कवि केसे कर जे उप
देस उपदेस जाते होत हरि वचन हेतु है। सो
न हेतु जामै सुधि आवे को कहू जो मोन हू जो
जो गधितकौ विधम नानदेत है। सो है विषम
ता नसु बकौन लेस जा मैं कौन सुख जा लिख
व रहे उपवेतु है ॥५॥वार्त्ता॥ इहां पूर्व धर्म या

रस.
८९
176

विथोग समाधर्म उणथ विवेस्मानिये ॥ अथ स
मान लक्षनं ॥ रसास मगुन कथन की अरु थो
र एक भांति । अन होतेहू की जिये सो समाध
ही कांति ॥ ६ ॥ अरु व हवस्तक धरत तपदारथ
सो मिलै पै अपनो गुन छोडै नाही ॥ यथा ॥ न
थसिष पह है पनाइ नील अंबर सुनील म
नि भूषन अधिक छवि धरी है । मृगमद ला
यो तन अलकै ससि वदन ध्यान कवि कौमी
तिअ मूरति निहारी है । छोडन भवन भवन
तें सो र धन घन दामिनी यों आसै नाहि पर
लिनि हारी है ॥ चली ऐसे साजन सिम पाव स
अधारी मारू स्याम की सुरति पाछे पाछे घ
नश्यारी है ॥ ७ ॥ वार्त्ता ॥ रहां स्याम निसा अल
न औरु सब साज प्रबल तिन हु समान कि
ये ॥ यथा ॥ कंचन मैन हि यों जनरति कुज था
व हल्यो स... यो तन सो मिलि यों जन
यावै सखी ... कि कै अलिमाल लई

177 गहिओलगिलेपहलावैं।होलहसीससिकी
सवमैसतसिद्धिमौछिनुभौंरनुभौंरनभेरव
तावै।८॥अथविसेषलछनं॥अगरजेकें
छोहिकैंबरणोंतिथिकहूंऔर।एकथलका
कहूंपही।एकबारउहठोर।९।कहुंकउता
बलिमींवरसअंगकोविनहूहोइ।योविसे
षहली।निविधिवरननहेकविलोइ।१०॥
औरकौचिन्हकारजसौछिहोइ॥यथा॥वन
हगनतेछबिथोंविनकेआगैछाररहेउ
नहींकौताहिरेथोरकलाइकै।औरथंबहु
आलेगुनरहेरहठाहीलगोंगाड़बेसुभाइय
सलासौंलपराइकै।तेनवेनहीमेवसनत्रा
ताआवेपलाहोतहैनत्यागेगहकौनेहव
नाइकें।राध्योकहत्मानेमोहिसिविथेस
थोजुमैतोप्यानअंगसुंथालहेजुभाजैअकु
लाइकै॥१॥इहभेदनकोउदाहरणकहीय
था॥आननजरमोसअंगमुवासअलिपौनि
वोसबंदलथैनयननभेवपानिपकेभारही

रस.
८६
178

ऋलीसीसवारीनाकहेरमिहिथोहसितिअरु
णअधरअनुरागसुधाधरही। हासनकी पां
तिवनिआरअसीकांतिआहिहेबिमेंनुराग
केसगाहेसरवारही। चंद्रमाकमलमानकी
रविकलाविधिराधाकेघनावतिघनावन
ताकवारही॥१२॥वार्ता॥ रहासवतेअधि
काइकीसकिघाहिये। वाबिनुअलंकारता
हीनहोइ॥ अथतद्गुनलक्षनं॥ अधिकऔ
रगुनओगते। निजगुनजियोरहीलेइ। सोई
तदगुनजांनिये ताकेगुनकहिहेइ॥१॥भ
लोअथवाकुबोधण॥ हीयतेवलतवेनअति
हीमलोलेंपाइअधरपरसकोमधुरकेलबा
वही। हेपोवलिआउनकेवतिनाएवालअ
विरनुवासीविअमाकहोंलोंगनाथही। ह
सीकेलवतहोतपंकजअकनुदकेवलेतपुनि
कुमुदकेलसछविपावही। लालनुकीमा
लपहोतेकंचनकीबांधीसेबितहिलीलम
निवनावही॥१४॥अथतद्गुनलक्षनं॥ संभवह

179 मैनहिंगाहै। मिलनजोनिगुनहीन। ताहिप्रत
गुनकहतहै। अलंकारगुनलीन। ५५। जोधि
नलावनजाहिसों। पावनताहिसोंनीच। ह्वे
हमसोंहथाहीतैंआवतहैवसिताकीहिकैजु
लषीयहयोतिनकेहू। गोतीलनउलिटेषत
लालभयोमनमेरोरंगोहोहीयोहू। यातेहि
येमेंरह्योनिसवासरप्यारीतूमेरेरंगीनही
तोहू। ५६। वार्ता। इहांमेरेहमतेहियेहूलगीय
हप्रतगुनअरुअप्रकृतिकौगुनप्रकृतिका
हूभांतिसोंहूलनलेइसोंऔरप्रतगुनकहिये।
यथा। साधनजोगतऔसुषभोगवियोगवि
थानहिंव्यापततोहू। सोऊनकौंतिनकेमनऐ
सविलासकरैवनितावनजोहू। अविवाक
जगारीसुनौतिरछैकरअंगोहियकेअनुरागनि
मोहू। जोविनउज्जलसाधुसदातिनलीननहे
तहैंऔरनिकोहू। ५७। अथआघातलक्षनं।
एककरैसिद्धिहिविधिकछू वाहीविधिकछुऔ
र। वाहीसितिविकौकरैहैआघातसुठौर। ५८।

॥यथा॥ बकसभलीसबहीजगमैंगुनहोसहैसं
गविसेषपरैं। यहथालनरनहिहैबोग्रसहि
वतावलहीवरूभावभरैं॥ बोलनवैनजगावै
हियोजगकौपननावैगुमानधरैं। पुनिता
हीकोवैननुहीकहिसज्ञनसीवैसुधासोक
सीरोकरैं॥ ९९॥ वार्त्ता॥ रसखिनबवनतुहीसैं
सबलसंसारकौहियोजगावतुहै। तिनबचन
नुहीसैंकसाधसीसोकरतुहैयामैं। उनकेगु
नकेजीतिवेकरिकैंआघातभयो। एसवग्र
लंकारसुरूकहै। अबइनकेजोगतैंघओर
ह्यलंकारहोतहै। एकसंसृष्टि। एकसंकर
सैंकहियतुहै॥ अथसंसृष्टिलक्षनं॥ अलं
कारहैसंसृष्टिजहसोसंसृष्टकलार। सबद
अरथपुनिउभैनकरितकेतीनिसुभाइ॥ ९०
॥सब्दालंकारसंसृष्टिलक्षनं॥ सोहैसहासस
सिपांतिसहाकीछविहैघनेहाकीसुधिम
लीरसभीनेहैं रूलेहविगसोमहरलरूकुमा
रवसवकसोअपारमघवाकेमरछीनेहैं

181 एकहीसहनमकोवमोवुमतनमुरझांनिकै
किसमिंषपून्नकथवीनैहैं।व्याहकेसमैमै
होतहैवनकीपूजानलाकेवनवकेसिके
मुमेरकसिहीनैहैं।२।।वार्त्ता।।इहांजमकअ
रुलाहां अनुप्रासकीसंसृष्टि अथलिंका
रसंसृष्टियथा।।वाधिहुंओरलसैषविसभोर
भवाधिषवाधिकीमेंडरूनाषी।हृंषलनीर
केमीरकवीमनुधीरसओनिजगोथमिला
षी।अमेसमेमधिमारेअमामननहांवली
गामसंवंजगसाषी।सूसमरूपकेमोषिन
हीनहृथरमकूलमलोधेरिवाषी।२।।वार्त्ता
इहांरूपककअरुउपमासंसृष्टिमधालंकार
अरुअनुप्रासालिंकारकीसंसृष्टि।।यथा।।
वंषलकोरभरणथ।।मृगमेंनलरकेवक
वनभयोबाहतसुहाएहैं।।अमनरविअरू
ताधरणमनुआनहनकणनिसातिमनो
मथउपमाजातहैं।।विभ्रमेनकामकेवंन

रस.
९१
182

गतकेकांमग्रथबैषेविनिमधांमकौमिथाएहैं।
मकनानिधानविधुकौविकासमांनहैस्मरणा
पनासनग्रथावधिहिमआएहैं।२४॥वार्त्ता॥रस
गुभावोक्तिअकथनुआसकोसनहिसध्यु
वर्णनियोष्यपोषकभावगुनि।अलंकारसं
देह।अलंकारहोतुनकौरहेएकपरगोह।२५
रहिविधिलीनिप्रकारकेसंकरकहोबखा
नि॥वार्त्ता॥जहांएककौसाधकयुक्तिहोइ
दूसरेकौबाधकयुक्तिनहोइ।तहांअलंका
रनुकौसंदेहकहियै॥पोष्यपोषकसंकर
भाववर्णण॥कमलनैसहैसहैसनविहृतजा
समाकीओरवाहैनजनमधनिमाहीकौं
नपतिहैनाकेसारभूपतिरहतेओरभुप
तौविलैहैगहेगरवमहाहीकौ।सोभाकेस
मानवडेलाजकेनिहलमहाराजारामसिं
घमिरमोरनृसिपाहीकौ।आथैग्रसिवाज
भएआलमकेकाजतोहिवेतल[illegible]भा
रान ९१

183 राजाश्रीपातसाहीकौ।४४।।वार्त्ता।।इहांजाते
नृसिंघाहीकौसिरमोरहैयातेतेरराजवैठत
हीपातसाहीकौऐसीसोभाभइ।मानौभाग
जाग्योहैयातेरूपकअभिमत्तपमाकौंपो
षतहै।एककैपोषकवहूतहूथलंकालहो
तहै।सुयथा।।रेवनकौपोषरभगाउधसो
धमिलिरेहीतेरमौदिसनूहीगभ्रुणागहै
अरूणश्रलापज्वालाज्वालेतेश्रगरकधिश्र
भिकुजनिभरकौतोलहोमुजगहै।देषियेक
पाणकेऐसीकरनीतिनातेषिजयपरमा
निकैलग्योविलसाग्रुहै।राजकेसमैमेपा
मसिंघजुकेमालपरयोवनरुचिरकीविरो
धतिकौभागुहै।४६।।वार्त्ता।।इहांसेपरूपक
उपमाणसबसंरहालंकारकौंपोषतहै।सं
देहरूपसंकरयथा।।दोहा।।वदनचंदकीछवि
लषिकरभ्रुरकैमोक्रसोहास।राजमनुजसुष
वंसकेजैकियोप्रकास।।४७।।इहांसमसख्यके

रस. ९२ ह्यो सो गुरु अरु ही कों पोषत है । तातें सव रस की
अधिका रसे उपमा धाव कभु मापा इ यत है
184 अरु त्वं इमा हू सौं विरुद्धना ही । उत्तम लता क
रिकैं । तातें रूपक अरु उपमा कौ संदेह भ रु
हू सरै वं इमा कौ अरु कौ सकै वो गुरु त्व वं इमा
कौ अति कूल मा ही साध कु ही है उपमा कौ वा
धक है ना ही । यातें संदेह भयौ । रूपक मैं वं इ
मा अधीन तहां संभवै है । सव रस अरु अर्थ कौ लं
कार है उत्कर्ष ही पद्दुमैं थई है गु ॥ यथा ॥ जग
गुं गंगो अनु रागसौं । भवनु भाव नव होत ॥
लखत नैन नीरज भए । अलि मन कथ्यौ न हो
त ॥ २८ ॥ वार्त्ता ॥ यहां रूपक अरु कथ्य मनु श्वासं क
ही सव दई मैं है । कहे भेद संक्षेप सौं । अपनी ९
मति अनुसार । कवि गुरु दय मय अपार सौ
मत कौ करौ विचार ॥ २९ ॥ सव रस अरु अर्थ क
उत्तम कौ मंमरम मत अनुसार । कहे लक्ष
लक्षन सकल अलंकार विमनार ॥ ३० ॥ वमत ९२

185 आगरै आगरै गुनरूपसीलविलास। विप्रन
श्रुसिया मिश्र है हरिचरननकेदास ॥२१॥ अभू
मिश्र तिनवंसमैं। परमरांमनिमिरांम ति
नकेसुतकुलपतिमिश्र है। कियो रसरह
स्यसुधांम ॥२२॥ जिते साज है कविनकेमंम
रकहे हैंबांनि। तेसव भाषा मैं कहे रसरहस्य
मेंआंनि ॥२३॥ संवतसत्रहसैवरसबीतेस 1727
तारस। कातिगवदिएकादसी। वारबरणाव
तीस ॥२४॥ इतिश्रीमिश्रकुलपतिविरचिते
रसरहस्ये अर्थालंकारनिरूपनं नाम अष्टमो
वृत्तांतः संपूर्णं ॥ शुभं ॥ मुभथरिसिवसुलवर
नलखि वसुकवि वंस रवि वारि। सुकरकमग्र
ग्रंथ रकौ पोथी प्रति उतारि ॥ मीती फागुण
वदि। ४। भृगुवार। संवत् १८८८ लीषतं थीना
रायणेन राज नगर मध्ये लीषायतं कथरणो
विं रवव कसम आतमपठनार्थं शुभं रामस्थता
वनस्थपधी। शुभं भूयात् ॥ राम ॥ रामजी

5



